सिंचाई के निम्न स्तर हैं। आज भी देश में 40 प्रतिशत से कुछ कम क्षेत्र सिंचित है। शेष क्षेत्रों में खेती वर्षा पर निर्भर है। भारत के क्षेत्रों के लिए अध्याय 1 देखें।

- अटलस को देखकर सिंचित क्षेत्रों की पहचान कीजिए आपका क्षेत्र क्या इस श्रेणी के अंतर्गत आता है।

जमीन और पानी जैसे प्राकृतिक संसाधनों के गहन उपयोग से उत्पादन और पैदावार में वृद्धि हुई। जबकि प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग हमेशा न्यायसंगत ढंग से नहीं किया गया है। अनुभव बताते हैं कि भूमि की उर्वरता अति प्रयोग, रसायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग की वजह से घट रही है। पानी की स्थिति भी उतनी ही खतरनाक है। रामपुर गाँव की तरह भारत में सिंचाई भूमिगत जल के दोहन पर आधारित है। नतीजतन भूमिगत पानी का स्तर देश भर में तेज़ी से गिर गया है। यहाँ तक कि जिन क्षेत्रों में भरपूर बारिश और पुनर्भरण के अनुकूल प्राकृतिक प्रणालियाँ हैं वहाँ पर भी पानी का स्तर कम हो गया है। पानी की तेज़ गिरावट के कारण किसानों को पहले से भी गहरे ट्यूबवेल ड्रिल करना पड़ रहा है। सिंचाई के लिए डीजल/विद्युत का उपयोग बढ़ जाता है। इन विषयों को जानने के लिए अध्याय-5, भारत की नदियाँ और जलसंसाधन तथा अध्याय-11 साम्यता के साथ दीर्घकालिक विकास में आपने जो पढ़ा है उसका पुनःस्मरण कीजिए।

Graph : 1

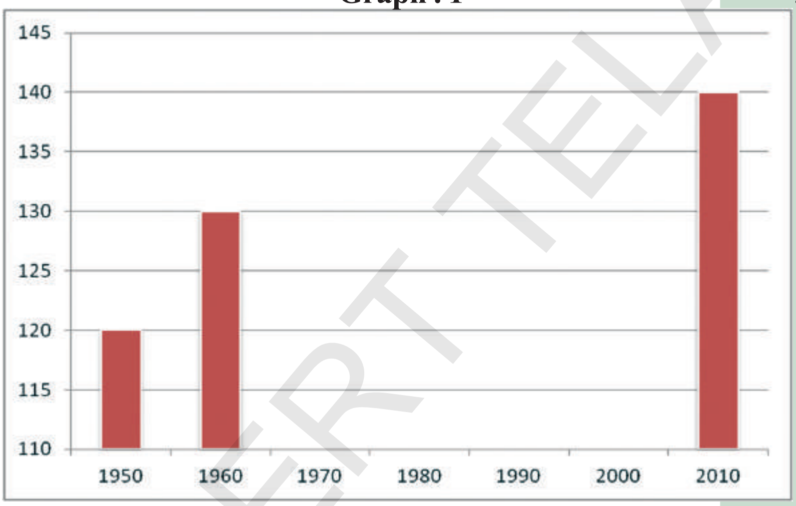

- निम्नलिखित तालिका में भारत में कृषि योग्य भूमि (आरेख पर) मिलियन हेक्टेर की इकाइयों में दर्शायी गयी है। आरेख क्या दर्शाता है? कक्षा में चर्चा कीजिए।

वर्ष	सिंचित क्षेत्र Area (in million hec)
1950	120
1960	130
1970	140
1980	140
1990	140
2000	140
2010	140

- आपने रामपुर में उगायी जाने वाली फसलों के बारे में पढ़ा है। आपके क्षेत्र में उगायी जाने वाली फसलों की जानकारी के आधार पर निम्न तालिका भरिए।

फसल का नाम	मास (जिसमें बीज बोये जाते हैं)	संग्रहण मास	जल / सिंचाईके स्त्रोत (वर्षा, तालाब, ट्यूबवेल, नहर आदि)

- बहुफसलीय खेती के क्या कारण हैं?

SCERT TELANGANA

रामपुर में भूमि वितरण

भूमि, खेती के लिए कितनी महत्वपूर्ण है आपको इसका एहसास हो गया होगा। दुर्भाग्य से, कृषि के क्षेत्र में लगे सभी लोगों के पास खेती के लिए पर्याप्त जमीन नहीं है। रामपुर की जनसंख्या 2,660 हैं, यहाँ विभिन्न जातियों के 450 परिवार रहते हैं। ऊँची जाति के परिवार गाँव की अधिकांश जमीन के मालिक हैं। उनके घर काफी बड़े, उनमें से कुछ, सीमेंट पलस्तर साथ ईंट से बने होते हैं। जनसंख्या का 1/3 भाग अनुसूचित जातियों (दलितों) का हैं, जो और अधिक छोटे घरों में रहते हैं, जिनमें से कुछ अंश फूस का होता है और मुख्य गाँव क्षेत्र के बाहर, एक कोने में स्थित होता है।

रामपुर में, एक तिहायी (1/3) यानी 150 परिवार भूमिहीन हैं। भूमिहीनों में अधिकांश दलित हैं। मध्यम और बड़े किसानों के 60 परिवार हैं जो 2 हेक्टेयर से अधिक भूमि पर खेती करते हैं। बड़े किसानों में से कुछ के पास 10 हेक्टेर से अधिक भूमि है। 240 परिवार आकार में 2 हेक्टेर से कम भूमि के छोटे भूखंडों पर खेती करते हैं । ऐसे भूखंडों की खेती से किसान परिवार को पर्याप्त आय प्राप्त नहीं होती है।

नक्शा 1 यह तेलंगाणा के गाँव में जमीन का एक नक्शा है।

1960 में गोविंद नामक किसान के पास 2.25 हेक्टेर असिंचित भूमि थी। अपने तीन बेटों की मदद से गोविंद खेती करता था। वे बहुत आराम से नहीं रहते थे, परिवार के पास एक भैंस थी जिस से अतिरिक्त आय प्राप्त होती थी। गोविंद की मृत्यु के कुछ वर्ष के बाद खेत को तीन बेटों के बीच विभाजित किया गया था। हर एक को केवल आकारमें 0.75 हेक्टेर जमीन का एक भूखंड मिला। यहाँ तक कि बेहतर सिंचाई और आधुनिक खेती के तरीकों के बावजूद गोविंद के बेटे अपनी जमीन से जीविका प्राप्त करने में सक्षम नहीं हैं। वर्ष के एक भाग के दौरान वे अतिरिक्त काम कर रहे हैं।

नक्शा 1, यह तेलंगाणा के गाँव में, जमीन का एक नक्शा है । आप विभिन्न आकार के भूखंडों और बड़ी संख्या में छोटे भूखंडों को देख सकते हैं।

SCERT TELANGANA

- नक्शा 1 में भूमि के छोटे भूखंडों को छायांकित करें।
- किसानों के कई परिवार भूमि के ऐसे छोटे भूखंडों पर खेती क्यों करते हैं ?
- भारत में किसानों का वर्गीकरण और जितनी भूमि पर वे खेती करते हैं, उसका विवरण निम्न तालिका और वृत्त-चित्र में दियागया है।

किसान के प्रकार	**भूखंड का आकार**	**किसानों का प्रतिशत**	**भूखंड का प्रतिशत (कृषि क्षेत्र)**
लघु कृषक	2 हेक्टेर से कम	87%	48%
मध्यम व बड़े कृषक	2 हेक्टेर से अधिक	13%	52%

सूचना :- यहाँ आँकड़े किसानों द्वारा खेती की भूमि को दर्शाते हैं। यह स्वामित्व या किराए पर लिया जा सकता है।

- सूचक चिह्न से क्या संकेत मिलते हैं? खेती की भूमि का वितरण भारत में असमान है। क्या आप इससे सहमत हैं ? समझाइए ।

आरेख : 2

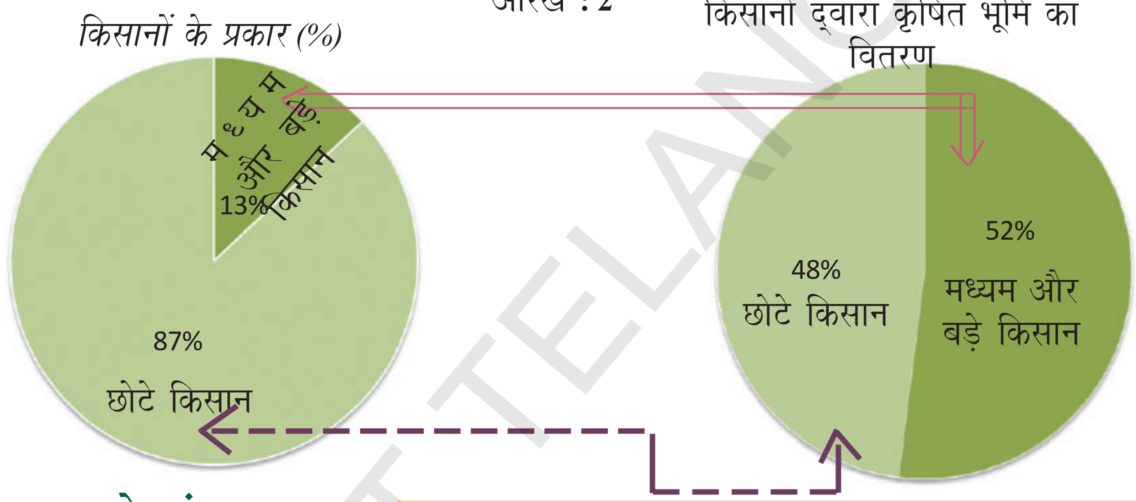

उत्पादन के संगठन

चलिए, हम रामपुर में उत्पादन की समग्र प्रक्रिया को समझने की कोशिश करेंगे। उत्पादन का उद्देश्य है लोगों की ज़रूरत की वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन। इसके अलावा निर्माता को उत्पादन के लिए अनेक वस्तुओं की आवश्यकता होती है। ये इस प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है।

पहली आवश्यकता जमीन और प्राकृतिक संसाधन जैसे पानी, वन, खनिज है। हमने जमीन और पानी का उपयोग रामपुर में खेती के लिए किस प्रकार किया जाता है, इसके बारे में ऊपर पढ़ा है।

दूसरी आवश्यकता श्रम की है। यानि काम करने वाले लोगों की है। कुछ उत्पादन गतिविधियों में आवश्यक कार्य करने के लिए उच्च प्रशिक्षित और शिक्षित श्रमिकों की आवश्यकता होती है। अन्य गतिविधियों में हाथ से काम करने वाले श्रमिकों की आवश्यकता होती है। प्रत्येक श्रमिक उत्पादन के लिए आवश्यक श्रम प्रदान करता है। आम उपयोग के विपरीत, श्रम उत्पादन में, केवल शारीरिक श्रम को ही नहीं बल्कि मानव के सभी प्रयासों को दर्शाया जाता है। इंजीनियर, प्रबंधक, लेखापाल, पर्यवेक्षक, मशीन ऑपरेटर, बिक्री प्रतिनिधि और आकस्मिक श्रमिक सभी कारखानों को (उनके उत्पाद को बनाने और बेचने के लिए) श्रम प्रदान कर रहे हैं।

SCERT TELANGANA

तीसरी आवश्यकता उत्पादन के दौरान हर स्तर पर आवश्यक आगतों की विविधता की है, यानी पूंजी की है। पूंजी के अंतर्गत आने वाली वस्तुएँ क्या हैं ?

(क) उपकरण, मशीन, इमारत

उपकरण और मशीनों की श्रृंखला में जनरेटर, टर्बाइन, कंप्यूटर स्वचालित मशीनों जैसे अत्याधुनिक मशीनें और एक किसान के हल के रूप में बहुत ही सरल उपकरण दोनों शामिल होते हैं। इनका इस्तेमाल उत्पादन की प्रक्रिया में शीघ्रता से नहीं हो रहा हैं। वे कई वर्षों से इन वस्तुओं का उत्पादन करने के लिए मदद कर रहे हैं। ये वर्षों तक इस्तेमाल किये जा सकते हैं। बस कुछ मरम्मत और रखरखाव की आवश्यकता होती है। इसे अचल पूँजी या भौतिक पूँजी कहा जाता है। हालांकि सभी मशीनों और बेहतर उपकरणों को इस्तेमाल करने के कुछ वर्षों बाद बदला जा सकता है।

(ख) कच्चे माल और धन की आवश्यकता :

इस तरह बुनकर और कुम्हार द्वारा मिट्टी या धागे का उपयोग कच्चे माल के रूप में उत्पादन में किया जाता है। इसके अलावा उत्पादन के लिए, अन्य आवश्यक सामग्री खरीदने के लिए और पूर्ण उत्पादन का भुगतान करने के लिए धन की आवश्यकता होती है। उत्पादन को पूरा करने और उसके बाद बाजार में इन वस्तुओं या सेवाओं को बेचने में समय लगता है। उसके बाद ही पैसा उत्पादन की प्रक्रिया में वापस आता है। कच्चे माल और पैसे की इस आवश्यकता को 'कार्यशील पूँजी' कहा जाता है। उपकरणों, मशीनों या इमारतों के विपरीत उत्पादन चक्र में, इसका उपयोग किया जाता है इसीलिए यह भौतिक पूँजी से अलग है ।

चौथी आवश्यकता तकनीकी और उद्यम है :

कुछ वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करने के लिए एक सार्थक तरीके से जिस प्रकार भूमि, श्रम और भौतिक पूँजी की आवश्यकता होती है उसी प्रकार उत्पादन प्रक्रिया के लिए ज्ञान और आत्मविश्वास भी आवश्यक होता है। उनके द्वारा किराये पर लिये गये भौतिक पूँजी के प्रबंधक या मालिक उन्हें यह ज्ञान प्रदान करते हैं। मालिकों को बाज़ार के खतरे उठाने के लिए तैयार रहना पड़ता है क्योंकि उन्हें उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के लिए पर्याप्त खरीददारी की आवश्यकता होती है। हमारे समाज, में सबसे अधिक माल और सेवाएँ बाज़ार में बिक्री के लिए उत्पादित कर रहे हैं, इसीलिए बाज़ार के लिए उत्पादन उद्यमी को योजना, संगठन और प्रबंधन करने की आवश्यकता होती है। उद्यमी किसान, दूकानदार, छोटे निर्माता, डॉक्टर, वकीलों, आदि या बड़ी कंपनियों के रूप में सेवा प्रदाता हो सकता हैं। उनके सामान या सेवाएँ लोगों के द्वारा खरीदे जाते हैं। वे लाभ कमा सकते हैं या नुकसान उठा सकते हैं।

चित्र 8.1 लघु किसान, बड़े किसान। अगले भाग को पढ़ने के बाद इनका संबंध उत्पादन के कारकों के साथ दर्शाने वाला कैप्शन (caption) लिखिए।

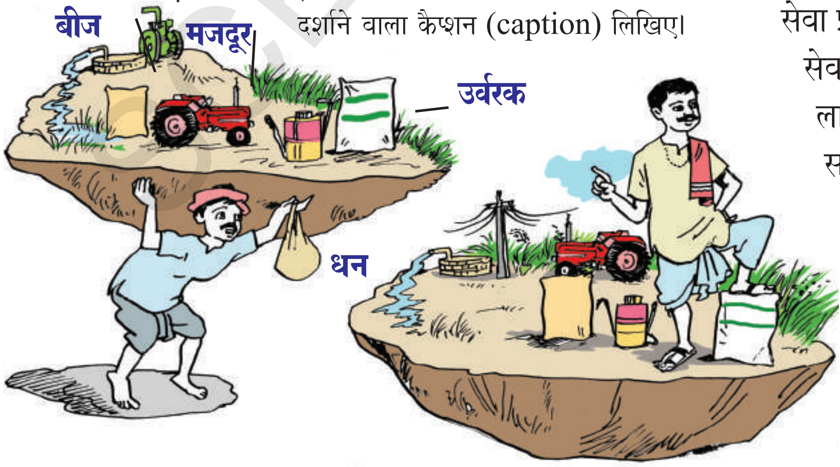

उत्पादन भूमि, श्रम और पूँजी के तत्वों के संयोजन से उद्यमी या लोगों द्वारा आयोजित किया जाता है। इन्हें उत्पादन के कारकों के रूप में जाना जाता है ।

कृषि के लिए श्रम

जमीन के बाद, श्रम, उत्पादन के लिए अगला आवश्यक कारक है। कृषि में कड़ी मेहनत की आवश्यकता है। अपने परिवारों के साथ साथ अधिकतर छोटे किसान अपने खेतों में ही खेती करते हैं। आम तौर पर, वे खुद की खेती के लिए आवश्यक श्रम करते हैं। मध्यम और बड़े किसान अपने खेतों पर काम करने के लिए खेत मज़दूरों को किराये पर लगाते हैं।

खेत मज़दूर, छोटे भूखंडों वाले परिवारों से या भूमिहीन परिवारों से आते हैं। अपने स्वयं के खेतों पर काम कर रहे किसानों के विपरीत, खेत मजदूरों को जमीन पर उगाई जानेवाली फसलों पर कोई अधिकार नहीं होता है। इसके बजाय वे जितना काम करते हैं, उसके लिए किसान उन्हें मज़दूरी का भुगतान करता है। वे काम करने के लिए नियोजित किये जाते हैं।

चित्र 8.2 हिमालय में आलू का संग्रहण

मज़दूरी नकद या वस्तु (फसल) में की जाती है। कभी कभी मजदूरों को भोजन भी मिलता है। मज़दूरी (बुवाई और कटाई) एक खेत गतिविधि से दूसरी फसल से फसल, क्षेत्र से क्षेत्र भिन्न होती है। रोज़गार की अवधि में व्यापक बदलाव होता है। एक खेत मज़दूर दैनिक आधार पर कार्यरत हो सकता है या एक विशेष खेत गतिविधि कटाई के लिए या पूरे वर्ष के लिए अनुबंधित किया जा सकता है।

शिवय्या, रामपुर में दैनिक मज़दूरी पर काम करने वाला एक भूमिहीन खेत मजदूर है। इसका मतलब यह है कि वह नियमित रूप से काम की खोज करता है। शिवय्या की मज़दूरी, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा मज़दूरों के लिए स्थापित मज़दूरी से कम हैं। रामपुर में खेत मज़दूरों के बीच काम के लिए भारी प्रतिस्पर्धा है, इसीलिए लोग कम मज़दूरी पर काम करने के लिए तैयार हैं। बड़े किसानों द्वारा तेज़ी से ट्रैक्टर, थ्रेशर, हार्वेस्टर जैसी मशीनों पर निर्भर होने से एक कार्यकर्ता को उपलब्ध काम के दिनों की संख्या, ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत कम होती जा रही है। पिछले साल शिवय्या को खेत पर काम, पाँच महीने से भी कम मिला। जब काम नहीं होता है तब उस अवधि में शिवय्या और उसके जैसे अन्य लोग MGNREGA के अंतर्गत काम के लिए ग्राम पंचायत को आवेदन भेजते हैं।

तालिका-1 दिसंबर 2011 में एकीकृत आंध्र प्रदेश में अलग कृषि गतिविधियों के लिए दैनिक मज़दूरी। (रुपये में)

- शिवय्या के जैसे खेत मज़दूर गरीब क्यों हैं?
- रामपुर में बड़े और मझोले किसान अपने खेतों के लिए श्रमिक पाने के लिए क्या करते हैं? अपने क्षेत्र के साथ तुलना करें।
- निम्न तालिका भरें :

उत्पादन प्रक्रिया में श्रम	प्रत्येक के लिए उत्पादन गतिविधि के तीन अलग उदाहरण दें।
जहाँ मालिक/परिवार भी आवश्यक श्रम प्रदान करता है।	
जहाँ मालिक काम करने के लिए मज़दूर किराये पर रखते हैं।	

- आपके क्षेत्र में वस्तुओं या सेवाओं के उत्पादन में श्रम उपलब्ध कराने के क्या तरीके अपनाये जा रहे हैं?

उपर्युक्त तालिका एकीकृत आंध्रप्रदेश में श्रमिकों को विभिन्न कृषि गतिविधियों के लिए दिये जाने वाले औसत दैनिक वेतन को दर्शाती है। हालांकि, क्षेत्रों में इसमें बहुत कुछ परिवर्तन है।

श्रमिक	जुताई	बुवाई	निराई	रोपण	कटाई	फटकाई	खलिहान	कपास चुनना
पुरुष	214	197	215	-	164	168	152	-
स्त्री	-	152	130	143	126	124	118	136

एक महिला कार्यकर्ता पूरे दिन में 136 रुपये कपास चुनने के पाती है। आप देख सकते हैं कि रोपण जैसे कुछ काम केवल पुरुषों द्वारा ही मुख्य रूप से किये जाते हैं, इसीलिए महिलाओं के लिए कोई वेतन दर्ज़ नहीं किया गया है। धान की रोपाई और कपास चुनने का कार्य मुख्य रूप से महिलाओं द्वारा किया जाता है। कुछ उत्पादन गतिविधियाँ महिलाओं और पुरुषों दोनों के द्वारा की जाती है। पुरुषों की मज़दूरी एक ही काम के लिए महिलाओं की तुलना में अधिक है। राज्य सरकारों को राज्य के भीतर (निजी और सार्वजनिक) सभी नियोक्ताओं द्वारा भुगतान किये जाने वाले सामान्य न्यूनतम मज़दूरी को तय कर देना चाहिए।

- ऊपर दिये गये दैनिक मज़दूरी के आँकड़ों की तुलना आपके क्षेत्र में इनमें से किसी भी एक कार्य के लिए दी जाने वाली मज़दूरी से कीजिए।
- न्यूनतम मजदूरी पता लगाएँ और इस के साथ तुलना करें।
- एक ही काम के लिए पुरुषों को महिलाओं से अधिक वेतन क्यों दिया जाता है? चर्चा करें।

पूँजी : भौतिक और कार्यशील पूँजी की व्यवस्था

आपने पहले की कक्षाओं में आधुनिक खेती में शामिल अधिक उपज देने वाली बीज की किस्मों सुनिश्चित सिंचाई, उर्वरक और कीटनाशकों के बारे में पढ़ा है। इसका मतलब है कि, किसानों को पर्याप्त उत्पादन के लिए पूँजी और पैसे की आवश्यकता होती है। किसान भौतिक पूँजी और खेती में आवश्यक कार्यशील पूँजी की व्यवस्था कैसे करते हैं, चलिए हम इसे देखते हैं।

ज्यादातर छोटे किसान कार्यशील पूँजी की व्यवस्था के लिए पैसे उधार लेते हैं। खेती के विभिन्न आगतों की आपूर्ति करने वाले बड़े किसानों या गाँव साहूकारों या व्यापारियों से वे उधार लेते हैं। ऐसे ऋण पर ब्याज की दर बहुत अधिक होती है। ऋण चुकाने के लिए वे एक बड़े तनाव से गुज़रते है।

सविता एक छोटी किसान है। वह अपने 1 हेक्टेर भूमि पर गेहूँ की खेती करने के लिए योजना बना रही है। बीज, खाद और कीटनाशकों के अलावा, पानी खरीदने और खेत उपकरणों की मरम्मत के लिए उसे पैसे की जरूरत है। उसका अंदाज़ा है कि कार्यशील पूँजी ही 6000 रुपये की होगी। उसके पास पैसे नहीं है, तो उसने तेजपाल, एक बड़े किसान से उधार लेने का फैसला किया। तेज़पाल 36% वार्षिक ब्याज़ दर (जो एक बहुत उच्च दर है) पर सविता को ऋण देने के लिए तैयार हो जाता है। सविता भी 100 रुपये प्रतिदिन के हिसाब से फसल की कटाई के दौरान एक खेत मजदूर के रूप में उसके (तेजपाल के) खेत पर काम करने का वादा कर लेती है। आप बता सकते हैं कि यह वेतन काफी कम है। सविता अपने खेत पर कटाई को पूरा करने के लिए बहुत मेहनत

SCERT TELANGANA

से काम करती हैं और फिर तेजपाल के लिए एक खेत मज़दूर के रूप में भी बहुत मेहनत करती है। कटाई का समय एक बहुत ही व्यस्त समय होता है। तीन बच्चों की माँ के रूप में उसे घरेलू जिम्मेदारियाँ बहुत है। सविता इन कठिन परिस्थितियों के लिए सहमत हो जाती है क्योंकि वह जानती है कि ऋण प्राप्त करना एक छोटे किसान के लिए मुश्किल है।

छोटे किसानों के विपरीत, मध्यम और बड़े किसानों को आम तौर पर खेती से बचत होती है। इसीलिए वे खेती के लिए आवश्यक कार्यशील पूँजी, बीज, उर्वरक, कीटनाशक, मज़दूरों का वेतन आदि की व्यवस्था करने में सक्षम हैं। ये किसान कैसे बचत कर सकते हैं? आपको अगले भाग में इसका जवाब मिल जायेगा।

इस गाँव में सभी बड़े किसानों के पास ट्रैक्टर है। वे अपने खेतों में हल चलाने और बुवाई के लिए इस का उपयोग करते हैं और अन्य छोटे किसानों को ये ट्रैक्टर बाहर किराये पर देते हैं। उनमें से ज्यादातर के पास थ्रेशर और हार्वेस्टर भी हैं। ऐसे सभी किसानों के पास अपने खेतों की सिंचाई करने के लिए कई ट्यूबवेल हैं। ये सभी उपकरण और मशीनें सब की खेती के लिए भौतिक पूँजी होते हैं।

किसान के लिए बचत या हानि

चलिए हम कल्पना करते हैं कि किसानों में उत्पादन के तीन कारकों का उपयोग कर अपनी भूमि पर गेहूँ का उत्पादन किया है। वे परिवार के उपभोग के लिए गेहूँ का एक हिस्सा रखते हैं और शेष हिस्सा बेच देते हैं। सविता और गोविंद के बेटे जैसे छोटे किसानों के पास बहुत कम गेहूँ शेष बचता है क्योंकि उनका कुल उत्पादन बहुत कम है और इसमें से ही वह अपने परिवार की ज़रूरत के लिए कुछ हिस्सा रख लेते हैं। तो आम तौर पर यह थोक बाज़ार के लिए गेहूँ की आपूर्ति मध्यम और बडे किसान द्वारा ही होती है। बाज़ारों में व्यापारियों गेहूँ खरीदते हैं बाद में कस्बों और शहरों में दुकानदारों को बेच देते है।

तेजपाल, बड़े किसान के पास उसकी भूमि से 350 क्विंटल गेहूँ अधिशेष हैं। वह राइगंज बाज़ार में अधिशेष गेहूँ बेचता है और जिससे उसे अच्छी कमाई होती है।

चित्र 8.3 : अनाज बाज़ार में ले जाते हुए।

तेजपाल अपनी कमाई से क्या करता है? पिछले साल, तेजपाल ने अपने पैसे बैंक खाते में रखे थे। बाद में उसने पैसे सविता और उसकी तरह अन्य किसानों को जिन्हें ऋण की ज़रूरत थी उन्हें दिये थे। उसने अगले सत्र में खेती के लिए कार्यशील पूँजी की व्यवस्था के लिए भी इस बचत का इस्तेमाल किया। इस साल तेजपाल एक और ट्रैक्टर खरीदने के लिए अपनी आय का उपयोग करने की योजना कर रहा है। पड़ोसी गाँवों में ट्रैक्टर को किराये पर देना एक अच्छा व्यवसाय है। एक अन्य ट्रैक्टर से उसकी अचल पूँजी में वृद्धि होगी।

तेजपाल जैसे अन्य बड़े और मध्यम किसान अधिशेष कृषि उपज बेचते हैं। आय का एक बचे हुए भाग को अगले सत्र के लिए पूँजी खरीदने के लिए रखा जाता है। कुछ किसान पशु, ट्रक खरीदने के लिए या दुकानों की स्थापना करने के लिए भी इसका उपयोग करते हैं। ये गैर कृषि गतिविधियों के लिए पूँजी का गठन है। वे अधिक भूमि भी खरीद सकते हैं।

विशेषकर बाढ़ और हानिकारक कीटों के कारण खेत गतिविधियों में प्रायः नुकसान होता है। कृषि उपज की कीमत में अचानक गिरावट आना अन्य खतरे का संकेत होता है। ऐसी स्थितियों में किसानों के लिए खर्च कर दी गयी कार्यशील पूँजी की पुनः प्राप्ति कठिन होती है।

• उत्पादन के लिए अधिशेष और पूँजी

तीन किसानों को ले। हर एक ने अपने खेतों पर गेहूँ उगाया है। हालांकि कॉलम 2 के अनुसार उत्पादन में भिन्नता हैं। विभिन्न किसानों की स्थितियों का विश्लेषण करने के लिए हमें मानना होगा कि कुछ परिस्थितियाँ सभी के लिए समान थीं। कुछ तत्वों को सामान्य रखते हुए हम निम्न परिस्थितियों का अनुमान लगायेंगे।

1. प्रत्येक किसान परिवार में गेहूँ की खपत समान ही (कॉलम 3) है।
2. अधिशेष गेहूँ का इस साल सभी किसानों द्वारा अगले साल के उत्पादन के लिए कार्यशील पूँजी के समान बीज के रूप में प्रयोग किया जाता है। यह करने के लिए उनके पास भूमि है।
3. अनुमान लगाइए कि सभी खेतों में उत्पादन में उपयोग की गई कार्यशील पूँजी से उत्पादन निर्गत (Output) दुगुना हो गया है। इससे उत्पादन में अचानक कोई नुकसान नहीं हुआ।

तालिका को पूरा कीजिए ।

किसान **1**

वर्ष	उत्पादन	उपभोग	अधिशेष उत्पादन-उपभोग	अगले साल के लिए पूँजी
वर्ष 1	100	40	60	60
वर्ष 2	120	40		
वर्ष 3		40		

किसान **2**

वर्ष	उत्पादन	उप भोग	अधिशेष उत्पादन-उपभोग	अगले साल के लिए पूँजी
वर्ष 1	80	40		
वर्ष 2		40		
वर्ष 3		40		

किसान **3**

वर्ष	उत्पादन	उपभोग	अधिशेष उत्पादन-उपभभोग	अगले साल के लिए पूँजी
वर्ष 1	60	40		
वर्ष 2		40		
वर्ष 3		40		

- इन वर्षों में तीन किसानों द्वारा गेहूँ के उत्पादन की तुलना करें ।
- वर्ष 3 में किसान 3 का क्या हुआ? क्या वह उत्पादन जारी रख सकता है? उसे उत्पादन ज़ारी रखने के लिए क्या करना होगा?

SCERT TELANGANA

चित्र 8.4 : चाय और रबड़ की फसल/कृषि क्षेत्र में चाय, कॉफी, रबर बागान और फलों के बगीचे जैसी फसलें शामिल होती हैं।

रामपुर मैं गैर कृषि गतिविधियाँ

खेती जो एक मुख्य उत्पादन गतिविधि है उसके अलावा कुछ गैर कृषि उत्पादन गतिविधियाँ भी हैं। रामपुर में काम कर रहे लोगों में केवल 25 प्रतिशत लोग कृषि के अलावा अन्य गतिविधियों में लगे हुए हैं।

डेयरी-अन्य सामान्य गतिविधि

डेयरी, रामपुर के कई परिवारों में एक सामान्य गतिविधि है। लोग बरसात के मौसम के दौरान उगायी गयी विभिन्न प्रकार की घास, जवार, बाजरा की भूसी अपनी भैंसों को खिलाते हैं। राइगंज में दूध बेचा जाता है। जहाँगीराबाद के दो व्यापारियों ने रायगंज में दूध संग्रहण-प्रशीतन केंद्र स्थापित किये हैं जहाँ से दूध बुलंदशहर और दिल्ली जैसे दूरस्थ स्थानों को भेजा जाता है। इस गतिविधि के उत्पादन कारक संक्षेप में वर्णित हैं :

भूमि : गाँव में वस्तुओं को रखने का छप्परदार (Shed)

श्रमः पारिवारिक श्रम, विशेष रूप से महिलाएँ भैंसों की देखभाल करती हैं।

भौतिक पूँजी : भैंसे जो पशु मेले में खरीदी जाती है।

कार्यशील पूँजी : अपनी ज़मीन से प्राप्त भोजन, कुछ खरीदी गयी दवाइयाँ

रामपुर में छोटे पैमाने पर निर्माण गतिविधियाँ

वर्तमान में, पचास से कम लोग रामपुर में निर्माण में लगे हुए हैं। रामपुर में नगरों और शहरों, के बड़े कारखानों में होने वाले निर्माण के विपरीत बहुत सरल तरीके से उत्पादन एक छोटे पैमाने पर किया जाता है। उत्पादन प्रायः घरों या खेतों में पारिवारिक श्रम की मदद से किया जाता है। श्रमिकों को कभी कभी ही काम पर रखा जाता है।

मिश्रीलाल ने बिजली से चलने वाली एक यांत्रिक गन्ना पेराई मशीन खरीदी और गुड़ तैयार किया है। पहले गन्नों को कुचलने के लिए बैलों का उपयोग किया जाता था, लेकिन इन दिनों लोग मशीनों द्वारा इस काम को करना पसंद कर रहे हैं। अपनी खेती के अलावा मिश्रीलाल अन्य किसानों से भी गन्ना खरीदता है और गुड़ बनाता है। गुड़ वह जहांगीराबाद में व्यापारियों को बेच देता है। इस प्रक्रिया में मिश्रीलाल को छोटा सा लाभ होता है।

- इस प्रक्रिया की स्थापना करने के लिए मिश्रीलाल को किस भौतिक पूँजी की आवश्यकता है।
- कौन इस मामले में श्रम प्रदान करता है ?
- मिश्रीलाल अपने लाभ को बढ़ाने में असमर्थ क्यों है? उन कारणों के बारे में सोचिए जिससे वह नुकसान का सामना कर सकता है।
- मिश्रीलाल अपने गाँव में गुड़ नहीं बेचकर जहाँगीराबाद में व्यापारियों को क्यों बेचता है?

रामपुर गाँव के दुकानदार

- किसकी भूमि पर दूकान होती है?
- कौन इन दूकानों के लिए श्रमिक उपलब्ध कराते हैं जो खाने पीने की चीजें बेचते है ?
- अंदाजा लगाओं कि कितनी कार्यशील पूँजी की इन दूकानों को आवश्यकता है।
- भौतिक वस्तुओं की सूची बनाओ।
- आपके क्षेत्र के फेरी वालों से प्रतिदिन के विक्रय के संबंध में जानकारी प्राप्त कीजिए तथा ज्ञात कीजिए कि क्या उन्हें बचत राशि संभव है अपने शिक्षक से चर्चा कीजिए।

रामपुर में व्यापार करने वाले लोग बहुत कम हैं। रामपुर के व्यापारी विभिन्न वस्तुएँ शहर के थोक बाज़ारों से क्रय करते हैं और उन्हें गाँव में बेचते हैं। गाँव के लघु (छोटे) सामान्य दुकानदार बहुधा अपनी दुकानों में चावल, गेहूँ, शक्कर, चाय, तेल, बिस्कुट, साबुन, टूथपेस्ट, बैटरी, मोमबत्ती, नोटबुक, पेन, पेंसिल और कभी कभी कपड़ें भी बेचते हैं ।

कुछ परिवार जिनके घर बस स्टैंड के निकट होते हैं, वे अपने घर के कुछ हिस्सों में छोटी दुकान चलाते हैं। वे खाने पीने की वस्तुओं की बिक्री करते हैं। जैसे समोसा, कचौरी, नमकीन, कुछ मिठाइयाँ , चॉकलेट, शीतपेयजल इत्यादि । महिलाएँ व परिवार के बच्चे भी इसमें सहायक होते हैं। हमारे देश में अधिकतर स्वरोजगारी व्यक्ति हैं जैसे कृषक, दुकानदार, फेरीवाले आदि। वे स्वामी हैं क्योंकि वे ही योजना बनाते हैं प्रबंध करते हैं और वस्तुओं और सेवाओं का जोखिम उठाते हैं। यथा समय वे अपने मज़दूरों का प्रबंध भी स्वयं करते हैं।

कुछ दूकानदार अपने गाँवों की वस्तुओं का भी क्रय करते हैं और बडे गाँवों व शहरों में ले जाकर विक्रय करते हैं। जैसे जो व्यक्ति गेहूँ की मिल चलाते हैं वे गेहूँ कृषकों से लेते हैं और राइगंज के बाज़ार में विक्रय करते हैं। गेहूँ की मिल चलाना और व्यापार करना दो भिन्न व्यापार हैं।

यातायात - तीव्रता से विकसित क्षेत्र

रामपुर से राइगंज को जोड़ने वाली सड़क पर विभिन्न यातायात के साधन प्रयुक्त होते हैं जैसे - रिक्शावाला, ताँगावाला, जीप, ट्रैक्टर, ट्रक-ड्राईवर कुछ परंपरागत बैलगाडियों और बोगियों को चलाने वाले लोग, परिवहन सेवा करते हैं। वे व्यक्तियों तथा सामानों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर आवागमित करते हैं और उनसे किराया (धन) प्राप्त करते हैं। यातायात कार्यों में व्यक्तियों की संलग्नता विगत वर्षों में बहुधा बढ़ी है।

SCERT TELANGANA

किशोर एक कृषक श्रमिक है अन्य श्रमिकों की भाँति अपनी आय से किशोर भी अपने परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में असमर्थ है। कुछ वर्ष पूर्व किशोर ने बैंक से ऋण लिया। यह सरकार की योजना के अंतर्गत था। जिसमें कमतर ऋण भूमिहीन व्यक्तियों को प्रदान किया गया था । किशोर ने इस धन से भैंस खरीदी। अब वह भैंस के दूध को बेचने का कार्य करता है तथा साथ ही वह भैंस को लकड़ी की गाड़ी लगाकर भैंसगाड़ी के रूप में, यातायात साधन के रूप में प्रयुक्त कर विभिन्न वस्तुएँ लाता हैं। सप्ताह में एक दिन वह कुम्हार के लिए काली मिट्टी गंगा नदी से लाता है और कभी जहाँगीराबाद से गुड़ या अन्य वस्तुएँ भी लाता है। प्रतिमाह वह यातायात साधन का कार्य प्राप्त करता है जिसके परिणाम स्वरूप किशोर विगत वर्षों से अधिक आय की प्राप्ति कर रहा है ।

- किशोर की अचल पूँजी राशि (जमा, कुल राशि) कितनी है ?
- उसकी कार्यशील पूँजी क्या होगी?
- किशोर कितने उत्पादित कार्यों में संलग्न है ?
- क्या आप कह सकते हैं कि किशोर ने रामपुर की अच्छी सड़कों से लाभ उठाया है?

उपसंहार

कृषि गाँव की मुख्य उत्पादन प्रक्रिया है। कृषि के रूप में विगत वर्षों में कई परिवर्तन लक्षित हुये। जिससे समान भूमि पर कृषकों को कई फसलों को उगाना संभव हुआ। यह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। क्योंकि भूमि सीमित व अपर्याप्त है। तथापि उत्पादन में वृद्धि बन जाती है। भूमि क्षेत्र के लिए और प्राकृतिक संसाधनों के लिए भी एक महत्वपूर्ण दवाब बन जाती है। यह अति अनिवार्य है कि हम तीव्रता से नवीन उत्पादन विधियों को ग्रहण करे जिससे प्राकृतिक स्त्रोतों के प्रयोग दीर्घकालिक हो।

कृषि अब अधिक पूँजी की माँग करती है। मध्यम तथा विशाल पैमाने के कृषक अपनी उत्पादन राशि से शेष धन रखने में समर्थ होते हैं जिसे वह आगामी कृषि कार्य में प्रयुक्त कर सके। वहीं छोटे कृषक जो भारत के 87 प्रतिशत कृषकों की गिनती में आते हैं उन्हें पूँजी प्राप्त करने में कठिनाई उत्पन्न होती है । उनका भूमि क्षेत्र कम होता है और उत्पादन भी अपर्याप्त होता है। अतिरिक्त साधनों के अभाव में वे जमा पूँजी (बचत पूँजी) रखने में असमर्थ होते हैं। अपनी कम आय के कारण ऋण के अतिरिक्त ऐसे कृषक अन्य कार्य भी करते हैं। जैसे कृषिगत मज़दूरी आदि।

उत्पादन के लिए मज़दूर प्रमुख तत्व है। यह अति उत्तम होता यदि नयी कृषि पद्धति में मजदूरों का अधिक प्रयोग होता दुर्भाग्यवश ऐसा संभव न हो सका। कृषि योग्य मजदूरी सीमित है जिससे मज़दूर अपने पड़ोसी गाँवों, शहरों, महानगरों में स्थानांतरित होकर मज़दूरी के अवसरों को प्राप्त करते हैं। कभी कभी यह गैर कृषि क्षेत्रों में भी मज़दूर रूप में कार्य करते हैं। वर्तमान में गैर कृषि क्षेत्रों में नियुक्त लोगों की संख्या बहुत कम है। (हमने कुछ उदाहरण ही देखें है) तब भी इनमें कार्य करने वालों की संख्या बहुत कम है। वर्ष 2009-2010 में प्रत्येक 100 ग्रामीण क्षेत्र के श्रमिकों में से 32 श्रमिक अकृषिगत कार्यों में संलग्न रहे। इसमें वे भी सम्मिलित है जो MGNREGA के विभिन्न कार्यक्रमों के अंतर्गत है। MGNREGA ग्रामीण क्षेत्रों के श्रमिकों के लिये बहुताधिक सहायक सिद्ध हुआ है।

SCERT TELANGANA

संभवतः भविष्य में अकृषिगत उत्पादनों की ग्रामों में अधिकता रहेगी । कृषि के समान अकृषिगत कार्यो को अधिक भूमि की आवश्यकता नहीं होती। कम पूँजी के आधार पर भी व्यक्ति अकृषिगत कार्यों को संपन्न कर सकता है। वे कहाँ से इस पूँजी को उपलब्ध करते हैं? कुछ तो अपना शेषधन (स्वयं के धन) का प्रयोग करते हैं पर बहुधा ऋण पर आधारित होते हैं। यह बहुत महत्वपूर्ण है कि ऋण कम ब्याजदरों पर उपलब्ध हो जिससे अपनी बचत राशि के अभाव में भी मानव अकृषिगत कार्यों को प्रारंभ कर सके। द्वितीय अनिवार्य महत्व की बात यह है कि वहाँ बाज़ार भी उपलब्ध हो सके जिससे कि उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं का वह विक्रय कर सकें। हमने रामपुर की कथा में देखा कि उसके पडोसी ग्रामों व शहरों में बाजार उपलब्ध थे जहाँ दुग्ध, गुड़, गेहूँ आदि की उपलब्धता सरल थी। अधिकतः यदि ग्रामों को शहरों से उत्तम सड़कों, यातायात साधनों व दूर संचार साधनों द्वारा संलग्न कर दिया जायेगा तो यह संभव है कि ग्रामों में आगामी वर्षो में अकृषिगत कार्यों में बहुलता आयेगी।

मुख्य शब्द

उत्पादन के कारक	भूमि	मज़दूर	कार्यशील पूँजी
निश्चित(अचल) पूँजी	अधिशेष	कृषि गतिविधि	अकृषिगत गतिविधि

अपनी सीखने की क्षमता सुधारें

1. प्रत्येक दस वर्ष में भारत देश में जनगणना विभाग द्वारा सर्वेक्षण किया जाता है। और निम्न प्रारूप द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। विवरण प्रत्येक गाँव से प्राप्त किये जाते हैं। निम्नलिखित विवरण पत्र को रामपुर गाँव की प्राप्त जानकारी के आधार पर पूर्ण कीजिए। (AS_3)

अ) स्थान :

आ) कुल गाँव का क्षेत्र :

इ) प्रयुक्त भूमि (हेक्टर में)

कृषि भूमि		भूमि, जो कृषि हेतु उपलब्ध नहीं है। (जो निवास, सड़क, तालाब, चारागाह के लिए प्रयुक्त क्षेत्र) 26 हेक्टर
सिंचित	असिंचित	

उ) सुविधाएँ
शैक्षिक
चिकित्सीय
बाज़ार
विद्युत आपूर्ति
संचार सेवा
निकटस्थ शहर

SCERT TELANGANA

2. रामपुर गाँव में कृषक मज़दूरों की मजदूरी अन्य कृषक मजदूरों से कम क्यों है ? (AS_1)

3. अपने क्षेत्र के दो मज़दूरों से चर्चा कीजिए। चाहे वह कृषक मजदूर हो या निर्माण क्षेत्र के मज़दूर ज्ञात कीजिए कि वे प्रतिदिन क्या वेतन पाते हैं ? उन्हें मजदूरी के रूप में धन दिया जाता है या वस्तु? क्या उन्हें प्रतिदिन कार्य प्राप्त होता है ? क्या वे ऋणी (कर्जे में) है ?(AS_3)

4. समान भूमिपर हम किन विभिन्न तरीकों द्वारा उत्पादन में वृद्धि कर सकते हैं। उदाहरण सहित समझाइए। (AS_1)

5. किस तरह मध्यम और बड़े पैमाने के कृषक पूँजी प्राप्त करते हैं तथा किस तरह से छोटे (लघु) कृषक उनसे भिन्न है ? (AS_1)

6. किन शर्तों पर सविता ने तेजपाल से ऋण लिया? यदि सविता बैंक से कम दर पर ऋण लेती तो क्या उसकी स्थिति भिन्न होती ? (AS_1)

7. आप अपने क्षेत्र के वृद्ध व्यक्ति से चर्चा कीजिए तथा पता लगाए कि विगत तीस वर्षों में सिंचाई तथा उत्पादन के माध्यमों (साधनों) में क्या अंतर आये? (AS_3)

8. आपके क्षेत्र में मुख्य गैर कृषि उत्पादन क्रियाएँ कौनसी हैं तथा किसी एक गतिविधि पर संक्षेप में टिप्पणी कीजिए। (AS_3)

9. ऐसी स्थिति की कल्पना कीजिए जहाँ मजदूरों को भूमि के अलावा, उत्पादन के अन्य कारकों की प्राप्ति नहीं होती है। क्या रामपुर गाँव की कहानी इससे भिन्न है? किस तरह? कक्षा में चर्चा कीजिए।(AS_1)

10. गौसपुर और माझोली उत्तर बिहार के दो गाँव हैं। गाँव के कुल 850 आवास गृहों के निवासियों में से 250 मनुष्य अपना रोजगार ग्रामीण पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, मुंबई, सूरत, हैदराबाद और नागपुर में पाते हैं। इस तरह का स्थानांतरण भारतीय गाँवों में सामान्य है। मनुष्य क्यों स्थानांतरित होते हैं? क्या आप वर्णन कर सकते हैं? (आपकी कल्पना और पूर्व अध्याय के आधार पर) बताइए कि गौसपुर और माझोली के स्थानांतरित मनुष्य क्या अपने क्षेत्र में कार्य कर सकते हैं ? (AS_4)

11. उत्पादन हेतु भूमि शहरी (नगरीय) क्षेत्रों में भी अनिवार्य है किन आधारों पर यहाँ भूमि का प्रयोग ग्रामीण क्षेत्रों से भिन्न है ? (AS_1)

12. उत्पादन के आधार पर भूमि के अर्थ को समझिए तथा कृषि अतिरिक्त भूमि के प्रयोग के तीन उदाहरण दीजिए, जिसको उत्पादन की प्रक्रिया में अत्यंत आवश्यक माना जाता है ? (AS_1)

13. 'जल' जो उत्पादन के लिए एक प्राकृतिक स्तोत्र है। विशेषतः कृषिगत उत्पादन में अब यह उपयोग हेतु विपुल राशि (धन) की माँग कर रहा है। इस कथन की व्याख्या कीजिए। (AS_2)

SCERT TELANGANA

अध्याय 9

वैश्वीकरण (Globalisation)

a & b) *स्कूल जाते हुए* , c) *विद्यालय का प्रवेश द्वार* d) *कक्षा,* e) *श्यामपट के पास अध्यापिका*

यदि आपके पास इंटरनेट की सुविधा है तो निम्नलिखित विज्ञापन को देखिए।

http://www.youtube.com/watch?v=VHYtShXI510

लन्दन द्वारा प्रकाशित पत्रिका के विज्ञापन में आप क्या देख रहे हैं? भारतीय पाठक प्रेमी को यह सुझाव देती है कि चीन जैसे देश भी भारतीय भाषाओं को सीखने के लिए भारत की ओर मुड़ रहे हैं। ये भारतीय व्यापारियों और निर्माता या उन रेल चीनी यात्री जो भारत काम की तलाश में आते हैं, उनसे वे बात चीत कर सकते हैं। इस विज्ञापन में आप विभिन्न कोणों से वैश्वीकरण को देख सकते हैं; ब्रिटेन द्वारा अंग्रेजी में प्रकाशित पत्रिका भारत के खरीददारों को ढूँढ़ रही हैं। चीनी भारतीय भाषाएँ सीखना चाहते हैं; चीनी अपने उत्पादों को भारत में बेचने की आशा करते हैं या भारत में उनके कारीगरों को भेजते हैं या भारतीय साझेदार के साथ व्यापार करते हैं।

20 वीं शताब्दी के अन्त में वैश्वीकरण गोलक में एक महान परिवर्तन है। इसके राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक दृष्टिकोण हैं। कक्षा VIII और IX में आपने सेवा क्षेत्र में

इनमें से कुछ विषयों के बारे में पढ़ा है कि जैसे नये रोजगार काल सेंटर उभर रहे हैं। आपको यह भी पता चलेगा कि बाज़ार में ऐसी कितनी उपभोक्ता वस्तुएँ मिलती हैं।

- मोबाईल फोन या वाहन किसी एक को चुनिए; पता लगाइए कि बाज़ार में इसके कितने ब्राण्ड हैं। क्या वे सभी भारत में बनते हैं या विदेशों में ? अपने अभिभावकों या अन्य वयस्कों से चर्चा कीजिए तथा पता लगाइए कि 30 वर्ष पहले इस प्रकार के कितने ब्राण्ड मिलते थे।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक आदान-प्रदान में हम तीन प्रकार की गति देखते हैं। सबसे पहले वस्तु तथा सेवा क्षेत्र में व्यापार का बहाव। दूसरे श्रमिकों का बहाव-रोजगार की खोज में लोगों का स्थान परिवर्तन। तीसरा अधिक दूरी पर थोड़े समय या अधिक समय के लिए पूँजी नियोजन। इसके अतिरिक्त वैश्वीकरण में सांस्कृतिक एवं राजनैतिक दृष्टिकोण भी शामिल हैं। उदाहरण के लिए पिछले वर्ष पश्चिमी एशिया एवं उत्तरी आफ्रिका के अनेक देश जैसे ट्युनिशिया, मिश्र एक दूसरे की क्रान्ति से प्रभावित हुए थे और निरंकुशता को जड़ से उखाड़ना चाहते थे। मीडिया में इसे ''अरब स्प्रिंग'' कहा गया। इन देशों में मीड़िया ने निर्णायक भूमिका निभाई थी। लोगों के द्वारा संचालित दूरदर्शन चैनल ने दूसरे देशों से सहयोग प्राप्त कर इसका संचार किया, जिसने स्थानीय नेताओं के अधिकारों को सुव्यवस्थित किया। नागरिक युद्ध या प्राकृतिक आपदाएँ जैसे सुनामी, आदि घटनाओं की चर्चा देश की सीमा स्तर पर की गई तथा उन्हें सारे विश्व से सहयोग एवं सहानुभूति भी मिली। वैश्वीकरण केवल बाज़ारों के लिए ही नहीं था, इसमें विचारों का आदान-प्रदान तथा फैलाव भी था।

इस अध्याय में हमारा केन्द्र बिन्दु आर्थिक वैश्वीकरण है, जिसे पिछले 30 से 40 वर्षों में अनदेखा किया गया है।

देशों में उत्पादन (Production across countries)

20 वीं शताब्दी के मध्य तक देशों के भीतर उत्पादन किया जाता था। इन देशों के पार केवल कच्चा माल, खाद्यान्न तथा तैयार माल ही जा सकता था। भारत जैसे उपनिवेश ने कच्चा माल और खाद्यान्न निर्यात किया तथा तैयार माल आयात किया। व्यापार दूरस्थ देशों को जोड़ने वाला चैनल था। यह बहु राष्ट्रीय कम्पनियों (MNC) के उद्भव से पहले से है। MNC ही एक देश से अधिक देशों में उत्पादन पर अधिकार अंकुश रख सकती है। यह उन देशों में उत्पादन के लिए कार्यालय या कारखाने स्थापित करती है जहाँ श्रमिक और संसाधन सस्ते मिलते हैं। इस क्रिया के कारण उत्पादन दाम कम होता है तथा MNC अधिक लाभ कमाती है।

निम्न उदाहरणों पर ध्यान दीजिए। बड़ी MNC, जो औद्योगिक उपकरणों का उत्पादन करती है, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के अन्वेषक केन्द्रों में उत्पादनों को आकार देती है तथा चीन में इसके पुर्जे तैयार करती है। फिर इन्हें मैक्सिको और पूर्वी यूरोप में जहाजों की सहायता से भेजा जाता है जहाँ इन्हें जोड़ कर, तैयार माल को सारे विश्व में बेचा जाता है। इसके बीच भारत में स्थित काल सेंटर द्वारा कंपनी की ग्राहक सेवा भी की जाती है। (इन देशों को विश्व के मानचित्र में पहचानिए।)

SCERT TELANGANA

इस उदाहरण में MNC केवल अपने तैयार माल को विश्व स्तर पर बेचती ही नहीं, बल्कि महत्वपूर्ण रूप से वस्तु एवं सेवाएँ विश्व स्तर पर उत्पादित की जाती है। इसका परिणाम यह होता है कि उत्पादन में संयुक्त रूप से वृद्धि होती है। उत्पादन प्रक्रिया लघु भागों में विभाजित की जाती है और विश्व स्तर पर प्रसारित की जाती है। उपरोक्त उदाहरण में, चीन सस्ते स्थानीय निर्माता की विशेषता पाता है। मैक्सिको तथा पूर्वी यूरोप US और यूरोप के बाज़ारों के करीबी होने के कारण उपयोगी है। भारत, अंग्रेज़ी बोलने वाले शिक्षित युवकों द्वारा ग्राहक सेवा उपलब्ध कराता है। यह सभी संभवतः MNC के लिए 50-60 प्रतिशत लागत बचत है। सीमा से बाहर उत्पादन फैलाना MNC के लिए सचमुच बहुत बड़ी विशेषता है।

देशों के पार उत्पादन की कड़ी से जुड़ना

साधारणतः MNC के कार्यों के लिए स्थान का चुनाव निम्न बातों पर आधारित होता है; बाज़ार के निकट, कम दाम पर कुशल एवं अकुशल श्रमिक, उत्पादन के अन्य तत्वों की सुविधा, उनके हित की सुरक्षात्मक सरकारी योजनाएँ। भूमि, भवन, मशीन तथा अन्य उपकरणों जैसी संपत्तियों को खरीदने के लिए MNC जो धन व्यय करती है वह विदेशी निवेश कहलाता है। अधिक लाभ कमाने की आशा से निवेश किया जाता है।

इसी समय MNC इन देशों की स्थानीय कम्पनियों के साथ मिलकर उत्पादन निर्धारित करती है। स्थानीय कम्पनियों को निवेश में अधिक धन जुड़ने का लाभ मिलता है तथा MNC द्वारा लाई गई नई तकनीकी की जानकारी मिलती है।

लेकिन MNC निवेश का सामान्य मार्ग यह है कि स्थानीय कम्पनियों को खरीद ले तथा उत्पादन में वृद्धि करें। धन की अधिकता के कारण MNC आसानी से यह काम कर भी सकती है। उदाहरण के लिए कारगिल फुड़, अमेरिका की बड़ी MNC ने भारत की छोटी कम्पनी परख फुड्स को खरीद लिया। परख फूड्स के चार शुद्धिकरण कारखाने तथा भारत के विभिन्न भागों में बाज़ार का जाल था, जहाँ इसके ब्राण्ड प्रसिद्ध थे। कारगिल ने उसे खरीद लिया तथा भारत में आज खाद्यान्न तेल का बड़ा उत्पादन करता है।

वास्तव में कई उच्च स्तरीय MNC के पास उतनी संपत्ति होती है जो प्रगतिशील देश के सरकारी बजट से अधिक है। इतनी बृहत सम्पति वाली MNC की शक्ति एवं प्रभाव की कल्पना कीजिए।

दूसरे मार्ग द्वारा भी MNC उत्पादन पर नियंत्रण रखती हैं। प्रगति प्राप्त देशों की बडी MNC छोटे उत्पादकों को उत्पादन का आर्डर देती है। सम्पूर्ण विश्व में अधिक संख्या में छोटे उत्पादन कपड़े, जूते, खेल सामग्री- आदि उत्पादन के उदाहरण हैं। उत्पादों को MNC को वितरित किया जाता है तथा MNC उन वस्तुओं पर अपना ब्रांड लगा कर ग्राहकों को बेचती है। MNC के पास विशाल ताक़त होती है जिससे वे दूर के स्थान पर उत्पादन करने के लिए मूल्य निर्धारण, गुण, वितरण तथा श्रमिकों की स्थिति तय करती हैं। MNC के उत्पादन के परिणाम स्वरूप दूर के स्थान भी एक दूसरे से जुड़ जाते हैं।

SCERT TELANGANA

विदेशी व्यापार और बाजारों का समाकलन

बहुत समय से व्यापार देशों को जोड़ने का प्रधान चैनल रहा है। इतिहास में आपने पढ़ा ही होगा कि भारत एवं दक्षिण एशिया के बाज़ारों को पूर्व और पश्चिम से जोड़ा गया था तथा इन मार्गों से विस्तृत व्यापार होने लगा। आपको याद होगा कि व्यापारिक रुचियों ने व्यापारिक कंपनियों जैसे ईस्ट इंडिया कंपनी को आकर्षित किया था। उस समय तक विदेशी व्यापार का मूल क्या था?

सरल रूप से देखा जाए तो विदेशी व्यापार ने उत्पादकों के लिए एक अवसर बनाया। जिसके माध्यम से वे घरेलू बाजारों से आगे निकल गये। उसी प्रकार ग्राहकों को भी घरेलू उत्पादनों से प्राप्त होने वाली वस्तुओं के अतिरिक्त वस्तुओं में चयन करने का अवसर मिला। विदेशी व्यापार का परिणाम यह हुआ कि बाज़ारों को उसने जोड़ा या दूसरे देशों के बाज़ारों में समाकलन होने लगा ।

अमेरिकन कम्पनी फोर्ड मोटर्स विश्व के 26 देशों में अपने उत्पादन एवं निर्माण के लिए फैली हुई विश्व की सबसे बड़ी संचार कम्पनी है। 1995 में भारत के चेन्नई के पास 1700 करोड़ रू. खर्च कर कर विशाल प्लांट लगाया। महिन्द्रा एवं महिन्द्रा जीप और ट्रक निर्माता के साथ मिलकर यह प्लांट लिया गया। 2004 तक फोर्ड मोटर्स ने भारतीय बाज़ारों में 27000 कारें बेची तथा 24000 कार भारत से दक्षिण आफ्रिका, मैक्सिको तथा ब्राजिल निर्यात की गई। कम्पनी चाहती है कि एक और अन्य प्लान्ट फोर्ड इण्डिया के नाम से विश्व स्तर पर विकसित किया जाय।

- क्या आप कहेंगे हैं कि फोर्ड मोटर्स MNC है? क्यों?
- विदेशी पूँजी नियोजन क्या है? भारत में फोर्ड मोटर्स ने कितनी पूँजी निवेश की?

SCERT TELANGANA

- भारत में अपने उत्पादन के संयंत्र को स्थापित करने वाली फोर्ड मोटर्स जैसी MNC केवल भारत जैसे विशाल बाजारों वाले देशों में ही नहीं, बल्कि कम लागत वाले उत्पादनों के लिए भी लाभदायक है। इस कथन को समझाइए।
- आप ऐसा क्यों सोचते हैं कि कम्पनी अपने ग्लोबल आपरेशन के लिए कार के उपकरणों (पार्टस) के उत्पादन के लिए भारत को आधार बनाना चाहती है? निम्न कारकों पर चर्चा कीजिए।

  a. भारत में श्रमिक दर तथा अन्य संसाधन

  b. कई स्थानीय निर्माता की उपस्थिति में फोर्ड के लिए आटो पार्टस बनाती है।

  c. भारत एवं चीन में अधिक संख्या में खरीददारों के साथ निकटता।
- किस प्रकार भारत में फोर्ड मोटर्स द्वारा उत्पादित कार उत्पादन भारत को उत्पादन के साथ जोड़ता है।
- अन्य कम्पनियों से MNC किस प्रकार भिन्न है?
- अधिकतर बृहत रूप से बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अमेरिकन, जापनी या यूरोपीय है। जैसे, नाइक, कोका-कोला, पेप्सी, होंडा, नोकिया? क्या आप कल्पना कर सकते हैं, क्यों?

MNC (बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ) और वैश्वीकरण

पिछले तीन या चार दशकों से अधिक से अधिक बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने विश्व में स्थानों को देखना आरंभ किया ताकि उत्पादन सस्ता हो सके। इन देशों में बहु राष्ट्रीय कंपनियों द्वारा किये गये विदेशी निवेश में बढ़ोत्तरी हुई। इसी समय देशों के बीच विदेशी व्यापार में भी तीव्र वृद्धि हुई। विदेशी व्यापार का बहुत बड़ा भाग बहुराष्ट्रीय कंपनियों के नियंत्रत्र में होता है। उदाहरण स्वरूप, भारत की फोर्ड मोटार्स का मोटार निर्माण संयंत्रत्र केवल भारत के बाजारों के लिए ही मोटारों का उत्पादन नहीं करता है बल्कि यह अन्य विकसित देशों को मोटरों का निर्यात करता है और विश्व के अनेक देशों में स्थापित अपनी फैक्टरियों के लिए भी कार के पुर्जों का निर्यात करता है। इसी तरह अधिकांश बहुराष्ट्रीय कंपनियों की गतिविधियाँ वस्तुओं की सेवाओं के व्यापार में मूल रूप से शामिल होती हैं।

- अतीत में देशों को जोड़ने का कौनसा मुख्य मार्ग क्या था? आज वह किस प्रकार भिन्न हैं?
- विदेशी व्यापार और विदेशी निवेश में अन्तर बताइए।
- वर्तमान वर्षों में चीन भारत से लोहा आयात कर रहा है।

  समझाइए कि किस प्रकार लोहे के आयात ने चीन पर प्रभाव डाला?

  a. चीन की इस्पात कम्पनियाँ

  b. भारत की इस्पात कम्पनियाँ

  c. चीन में अन्य औद्योगिक वस्तुओं के उत्पादन के लिए उद्योग द्वारा इस्पात खरीदना।
- भारत से चीनी बाज़ारों में इस्पात के आयात ने इन दोनों देशों में इस्पात के बाज़ारों को एकीकरण के लिए कैसे अग्रसर किया?

SCERT TELANGANA

चीनी उत्पादनकर्त्ता भारत में प्लास्टिक के खिलौने निर्यात करने लगे। भारतीय ग्राहकों में पास अब भारतीय एवं चीनी खिलौनों में चुनने का विकल्प मिला। सस्ते तथा नए आकार के कारण भारतीय बाजारों में चीनी खिलौने अधिक प्रसिद्ध होने लगे। एक वर्ष के भीतर ही 70 से 80 तक खिलौनों की दुकानों में भारतीय खिलौनो के बदले चीनी खिलौने आ गए। अब पहले की अपेक्षा भारतीय बाज़ारों में खिलौनें सस्ते मिलने लगे। चीनी खिलौनें ने निर्माताओं के लिए व्यापार विकसित करने का अवसर दिया। भारतीय खिलौना निर्माता के लिए यह स्थिति भिन्न थी। प्रतियोगिता ने भारतीय निर्माता को अन्य तरीके खोजने पर मज़बूर किया। इनमें से कुछ नष्ट हो गये।

विदेशी निवेश की अधिकता तथा अति विदेशी व्यापार अधिकता से देशों के पार उत्पादन एवं बाजारों में महान समांकलन होता है। वैश्विीकरण देशों में समाकलीन या आन्तरिक संबंध की तीव्र प्रक्रिया है। वैश्वीकरण प्रक्रिया में MNC की प्रमुख पात्रता है। देशों में अधिक से अधिक वस्तुएँ एवं सेवाएँ पूँजी नियोजन तथा तकनीक विभिन्न देशों के बीच उत्पन्न होने लगी। पिछले दशकों की अपेक्षा विश्व के अधिक क्षेत्र एक दूसरे के करीबी संपर्क में आने लगे।

पूँजी, व्यक्ति, तकनीकी बहाव ने विश्व को सीमारहित बना दिया। परिमाम स्वरूप राज्य अपनी सीमा के भीतर अनेक पहलूओं में अधिकार खोने लगे। उदाहरण के लिए महत्वपूर्ण विषय मुद्रा की कीमत पर निर्णय लेने का था। पहले जिसे सर्वप्रभुत्व सरकार द्वारा लिया किंतु आज सरकारी बरामदी के बाहर प्रायः बाज़ारी खिलाड़ियों या ऐसी शक्तियाँ जिन पर सरकारी नियंत्रण कम था, उनके द्वारा लिये जाने लगे।

वैश्वीकरण को समर्थ बनाने वाले कारक

प्राद्योगिकी

वैश्वीकरण प्रक्रिया को प्रोत्साहित करने में प्राद्योगिकी में तीव्र प्रगति एक प्रमुख कारक है। उदाहरण के लिए, पिछले पचास वर्षों में परिवहन तकनीकी में अनेक सुधार देखी गई हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि कम कीमत में अधिक दूरी तक तेज़ी से सामान को पहुँचाया जा सकता है।

सूचना एवं संचार तकनीकी में अधिक ध्यान देने योग्य तथा तीव्र प्रगति देखी गई है। दूर संचार सुविधाएँ (तार, दूर भाष्य, मोबाईल, फैक्स) विश्व में एक दूसरे से संपर्क बनाने में उपयोगी है, तुरंत सूचना देने में तथा ग्रामीण क्षेत्रों से संपर्क बनाने में सेटेलाईट संचार उपकरणों से यह सुविधाएँ प्राप्त होती है। कम्प्यूटर लगभग जीवन की प्रत्येक क्रिया में प्रवेश कर चुका है। आपने इंटरनेट जगत में

- वैश्विकरण प्रक्रिया में MNC की क्या भूमिका हैं?
- किन विभिन्न मार्गों से देश एक दूसरे से जुड़ते हैं?
- सही विकल्प चुनिए : एक दूसरे से जुड़े देशों पर वैश्वीकरण का परिणाम

  a. उत्पदान कर्ताओं में कम प्रतियोगिता

  b. उत्पादकों में अधिक प्रतियोगिता

  c. उत्पादकों की प्रतियोगिता में कोई परिवर्तन नहीं

साहसिक पहल की होगी, जहाँ आप किसी भी चीज़ को जानने के लिए सूचना प्राप्त कर सकते हैं और दे भी सकते हैं। इन्टरनेट से हम तुरन्त इलक्ट्रोनिक मेल (E-mail) भेज सकते हैं तथा बहुत ही कम दर पर विश्व के किसी भी भाग में बात (Voice - mail) कर सकते हैं।

विदेशी व्यापार और विदेशी पूँजी निवेश नीति में उदारता

चलिए फिर से चीनी खिलौनों का भारत में आयात के उदाहरण की ओर चलते हैं। मान लीजिए भारतीय सरकार खिलौने के आयात पर कर लगा देती है। कर के कारण, आयातित खिलौनों को खरीदने के लिए ग्राहकों को अधिक पैसे देने पडेगें। भारतीय बाज़ारों में चीनी खिलौने अधिक समय टिक नहीं सकते और चीन द्वारा आयात अपने आप कम हो जाएगा। भारतीय खिलौन निर्माता समृद्ध हो जाएँगे।

आयात पर कर एक प्रकार से व्यापार में अवरोध है। यह अवरोध इसीलिए कहा जाता है क्योंकि कुछ रोक लगा दी जाती है। सरकार विदेशी व्यापार को कम करने या बढ़ाने में अवरोध का उपयोग करती है तथा किस प्रकार की वस्तुएँ कितनी मात्रा में देश में आनी चाहिए, इसका निर्णय लेती है।

स्वतन्त्रता के पश्चात भारतीय सरकार ने विदेशी व्यापार और विदेशी निवेश पर अवरोध लगा दिए। यह आवश्यक था कि विदेशी प्रतियोगिता से, उत्पादक की, देश में रक्षा करना।

लगभग 20 वर्षो पहले: नगरीय भारत "कम्प्यूटरस के लिए हमें शीघ्र कनेक्शन मिला।" ग्रामीण भारत" कभी भी बिजली काटी जाती है।"

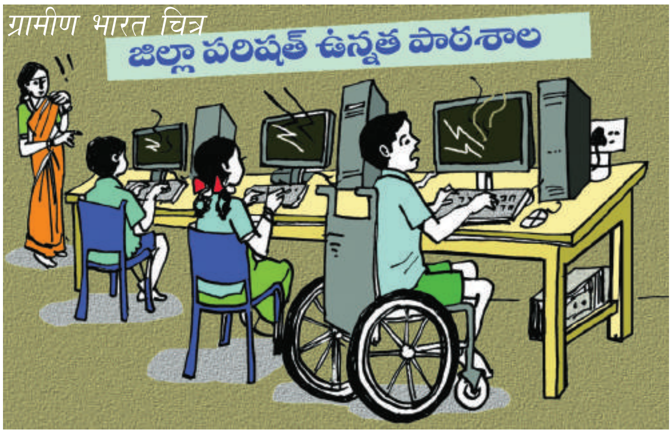

आज नगरीय भारत" मोबाईल में भी हमें इन्टरनेट मिल गया" ग्रामीण भारत" 3G और 4G क्या है, अभी भी हम कनेक्शन के लिए संघर्ष कर रहे हैं।"

लन्दन के पाठकों के लिए एक नई समाचार पत्रिका प्रकाशित की गई जिसकी डिजाईन और छपाई नई दिल्ली में की गई। पत्रिका की पाठ्य वस्तु इन्टरनेट द्वारा दिल्ली कार्यालय भेजी गई। दूर संचार सुविधाओं द्वारा लंदन के कार्यालय से दिल्ली कार्यालय के डिजाईनरों को पत्रिका के ड़िजाईन बनाने के निर्देश दिए गये। कम्प्यूटर पर डिज़ाईन बनाए गए। छपाई के पश्चात हवाई मार्ग से पत्रिका लंदन भेजी गई। इन्टरनेट (ई-बेंलिंग) के द्वारा लन्दन की बैंक से दिल्ली की बैंक में ड़िजाईन और छपाई का पारिश्रामिक भेज दिया गया।

- इस उदाहरण में उन शब्दों को रेखांकित कीजिए जिनमें उत्पादन में तकनीकी का उपयोग किया गया।
- सूचना तकनीकी किस प्रकार वैश्वीकरण से जुड़ी हुई है? सूचना- प्राद्योगिकी IT के विस्तार के बिना क्या वैश्वीकरण संभव था?

1950 और 1960 में अधिक उद्योग उभरने लगे और आयात के कारण इन उद्योंगों को जीने नहीं दिया गया। इसलिए भारत ने केवल आवश्यक वस्तुओं को ही आयात होने दिया जैसे मशीनरी, खाद, पेट्रोलियम, आदि। याद रखिए कि सभी प्रगति प्राप्त देशों ने आरम्भिक प्रगति काल में, विभिन्न अर्थो में, घरेलू उत्पादकों को सुरक्षा प्रदान की।

फिर भी, 1991 के आरम्भ में, भारत में योजना में असंभावित परिवर्तन किए गए। सरकार ने निर्णय लिया कि अब भारतीय उत्पादकों को विश्व में बराबरी करनी होगी। इसने यह सोचा कि देशों के भीतर उत्पादकों के प्रदर्शन में विकास तभी होगा जब वे गुणों में वृद्धि करेंगे। इस निर्णय को शक्तिशाली अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं ने सहयोग दिया।

इसीलिए विदेशी निवेश तथा विदेशी व्यापार पर से विशाल स्तर पर अवरोध हटा दिए गए। इसका अर्थ है कि वस्तुओं का आयात और निर्यात सरलता से किया जा सकता है। और विदेशी कंपनियाँ यहाँ कंपनियाँ और कारखाने स्थापित कर सकती हैं।

सरकार द्वारा लगाए गए अवरोध या प्रतिबन्ध को हटा देना उदारीकरण कहलाता है। व्यापार के उदारीकरण से, व्यापार में स्वतन्त्रापूर्वक इच्छा से वे क्या आयात या निर्यात करना चाहते हैं निर्णय ले सकते हैं। सरकार उनपर पहले से भी कुछ कम प्रतिबन्ध लगाती है जिसे अधिक उदारता कहते हैं।

हमें अब स्वयं से प्रश्न करना होगा कि वैश्वीकरण को कौन आगे बढ़ाता है। क्या यह राजनैतिक निर्णय है या आर्थिक एवं तकनीकी क्रांति है? वैश्वीकरण के आर्थिक समर्थकों की बहस है कि आर्थिक बल ही वैश्वीकरण का कारण हैं तथा वह ही इसकी सीमा पर नियंत्रण रखता है। राजनीति के समर्थक विवाद करते हैं कि यह सरकार का निर्णय था, जिसमें प्रथम स्थान पर आन्दोलन आरम्भ किया। सरकार प्रतिबन्ध लगा सकती है या कानून सरल बनाती है। स्थानों की आकृष्टता या निकृष्टता राजनैतिक मौसम से संबंधित होती है न की बाज़ारी परिस्थितियों से और इसीलिए भूमि भी महत्व रखती है। वास्तव में दोनों जुडे हुए है। हमें स्मरण रखना चाहिए कि विशेष संदर्भ में ही राजनैतिक निर्णय लिए जाते हैं, जो आर्थिक एवं तकनीकी परिवर्तन जो पहले से ही हो चुके हैं, उसका विवरण होते हैं।

SCERT TELANGANA

वैश्विक प्रभुत्व की संस्थाएँ

- विदेशी व्यापार का उदारीकरण (बन्धन मुक्त) से आप क्या समझते है?
- आयात वस्तुओं पर कर लगाना एक प्रकार का अवरोध है। सरकार आयात वस्तुओं की संख्या पर भी सीमा लगा सकती है। जिसे कोटा के रूप में जानते हैं। क्या आप चीनी खिलौना का उदाहरण लेकर यह समझा सकते है कि व्यापारिक अवरोध में कोटा किस उपयोगी है? क्या आप सोचते है कि यह किस तरह उपयोगी है? चर्चा कीजिए।

आज, कई मुख्य विषयों पर निर्णय जो विश्व के बड़े भाग को प्रभावित करते हैं वे वैश्विक प्रभुत्व की संस्थाओं द्वारा लिये जाते हैं। मौसम परिवर्तन इसका अच्छा उदाहरण है। कार्बन उत्सर्जन के विषय में कमी करना व्यक्तिगत देश पर निर्भर करता था। यह तुरन्त ही पता चला है कि यदि एक देश कार्बन उत्सर्जन को कम करता है तो उसे दूसरे स्थान पर उद्योग लगाना पड़ता है, जहाँ कम नियम हो। उत्सर्जन एवं मौसम परिवर्तन के विषय को सभी देशों ने मिलकर सुलझाया।

आइए एक और वैश्विक सरकारी संस्था की ओर ध्यान देंगे, वह है- WTO विश्व व्यापार संस्था

विश्व व्यापार संस्था (WTO)

हमने देखा कि भारत में विदेशी व्यापार और निवेश को शक्तिशाली अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा उदारवादिता में सहायता मिली। ये संस्थाएँ कहती हैं कि विदेशी व्यापार एवं निवेश में अवरोध हानिकारक होता है। WTO एक ऐसी संस्था है जिसका लक्ष्य अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में उदारवादिता है। सबसे प्रथम प्रगतिशील देशों द्वारा आरंभ किये गये, WTO ने अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में कानून का निर्धारण किया और देखा कि इन कानूनों का पालन किया जाय। लगभग विश्व के 150 देश वर्तमान में WTO के सदस्य हैं।

जबकि WTO ने सभी के लिए मुक्त व्यापार को सहयोग दिया, यह देखा गया कि प्रगतिशील देशों ने व्यापार में अवरोधों को अनुचित रूप से जकड़े रखा है। दूसरी तरफ, WTO प्रगतिशील देशों को व्यापारिक अवरोधों को हटाने के लिए विवश कर रहा था। यह कृषि क्षेत्र में व्यापार पर हुए तत्कालीन वाद-विवाद का उदाहरण है।

भारत में वैश्वीकरण का प्रभाव

लोगों के जीवन पर वैश्वीकरण का क्या प्रभाव हुआ? क्या वैश्वीकरण उपभोक्ताओं के लिए लाभदायक है, विशेषकर नगरीय क्षेत्रों के समृद्ध क्षेत्रों में। यह उन उपभोक्ताओं के लिए महा चुनाव है जो विकसित गुणों का मजा ले रहे हैं और कई उत्पादों को कम कीमत पर प्राप्त कर रहे है। इसके परिणाम स्वरूप ये लोग पहले की जीवन शैली से अब उच्च स्तर के जीवन का आनन्द ले रहे हैं। उत्पादकों तथा श्रामिकों में, वैश्वीकरण का प्रभाव समान रूप से नहीं हुआ।

सबसे प्रथम, भारत में MNC ने पूँजी निवेश में वृद्धि की, इसका अर्थ है भारत में निवेश उनके लिए अधिक लाभदायक रहा। MNC मुख्य रूप से सेल फोन, आटोमोबाईल्स, विद्युत उपकरण, साफ्ट ड्रिंक्स, फास्ट फूड़ या सेवाएँ जैसे नगरीय क्षेत्रों में बैंकिंग आदि में अधिक रूचि लेते हैं। इन कंपनियों के पास कई समृद्ध ग्राहक भी होते हैं। इन उद्योगों एवं सेवाओं में, नए रोज़गार निर्मित किए जाते हैं। स्थानीय कम्पनियाँ भी कच्चा माल वितरण करती है, जिससे ये उद्योग समृद्ध बनते हैं।

SCERT TELANGANA

इसके अतिरिक्त कई भारतीय कम्पनियाँ प्रतियोगिता के विकास से लाभ प्राप्त कर रही हैं। वे नयी तकनीकी और उत्पादन प्रक्रिया में नियोजन करती हैं और अपने उत्पादनों के स्तर में बढ़ोत्तरी करती हैं। कुछ विदेशी कम्पनियों के साथ सफलतापूर्वक मिलकर लाभ प्राप्त कर रही हैं।

भारत में कृषिक्षेत्र रोजगार की सुविधा प्रदान कर रहा है। इसकी तुलना US जैसे प्रगतिप्राप्त देश से कीजिए जिसका कृषि में GDP 1% है तथा सम्पूर्ण रोजगार में 0.5% अंश है। U.S. में बहुत कम अंश में जनता कृषि से जुड़ी है, परन्तु US सरकार उत्पादन से और इसे देशों को निर्यात करने के बदले बहुत धन प्राप्त करती है। इतने धन के मिलने के कारण US के किसान खेती के उत्पादनों को बहुत कम कीमत पर बेच सकते हैं। खेतो के उत्पादन का अधिक भाग अन्य देशों के बाजारों में सस्ते दामों में बेचते हैं इसके विपरीत इन देशों के किसानों पर इसका प्रभाव पड़ता है।
इसीलिए प्रगतिशील देश प्रगति प्राप्त देशों की सरकार से पूछते हैं कि, ''हमने WTO के नियमों के अनुसार व्यापारिक अवरोधों को कम कर दिया है। परन्तु आपने WTO के नियमों का उल्लंघन किया है और निरन्तर अपने कृषकों को अधिक धन दे रहे हैं। आपने हमारी सरकार से किसानों को समर्थन नहीं देने के लिए कहा है। किंतु आप अपने किसानों को समर्थन दे रहे हैं। क्या यह स्वतंत्र और निष्पक्ष व्यापार है?

- रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए
  .... देशों ने WTO के आरंभ में पहल की। WTO .... के लिए है। WTO कानून की स्थापना के सदंर्भ में सभी देशों .... देखती है। वास्तव में देशों के बीच व्यापार में .... नहीं हुआ। भारत जैसे प्रगतिशील देश ...., जबकि प्रगति प्राप्त देश कई चीजों में अपने उत्पादन कर्ता को सुरक्षा प्रदान कर रहे है।
- क्या आप सोचते हैं कि कुछ ऐसा होना चाहिए जिससे देशों के मध्य उचित व्यापार किया जा सके?
- उपरोक्त उदाहरण में, हमने देखा कि किसानों को उत्पादन के लिए U.S बहुत धन दे रहा है। उसी के साथ इस प्रकार के उत्पादों में प्रोत्साहन के लिए सरकार भी सहायता दे रही है, जो पर्यावरणीय प्रेमी है। चर्चा कीजिए कि क्या ये उचित है या नहीं?

अधिकतर वैश्वीकरण ने भारतीय कम्पनियों को बहु राष्ट्रीय बनने के योग्य बनाया। टाटा मोटर्स (आटोमोबाईल्स) इन्फोसेस (IT), रेनबेक्सी (दवाईयों) एशियन पेन्टस (पेन्टस), सुन्दरम फास्टनरस (नट्स और बोल्टस) आदि कुछ भारतीय कंपनियाँ हैं जिनकी क्रियाएँ विश्व स्तर पर दिखाई देती हैं।

वैश्वीकरण ने विशेषकर उन कम्पनियों को नए अवसर प्रदान किए जो IT के साथ विशेषतः जुड़ी हुई हैं। लन्दन आधारित कम्पनी के लिए भारतीय कम्पनी ने पत्रिका बनाई तथा काल सेन्टर उसके उदाहरण हैं। इसके अतिरिक्त अधिक संख्या में मेजबान सेवाएँ जैसे आँकड़े लिखना, हिसाब किताब, प्रशासनिक वार्ता, इंजीनियर आदि भारत जैसे देशों में सस्ते कर दिए गए तथा प्रगति प्राप्त देशों को निर्यात किये गये है।

SCERT TELANGANA

लघु उत्पादनकर्त्ता : स्पद्र्धा या विनाश

वहु संख्यक लघु उत्पादन कर्त्ता तथा श्रमिकों के लिए वैश्वीकरण महा चुनौती बन गया है।

वर्तमान वर्षों में भारत की केंद्रीय एवं प्रांतीय सरकारें भारत में पूंजी नियोजन करने के लिए विदेशी कंपनियों को आकर्षित करने के लिए विशेष क़दम उठा रही हैं। औद्योगिक क्षेत्र, जिन्हें विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZs) कहा जाता है, स्थापित की गई है। SEZ के पास विश्व स्तरीय सुविधाएँ होती हैं, विद्युत, जल, सड़क मार्ग, परिवहन, सुविधाएँ आदि। जो कंपनियाँ SEZ के उत्पादन इकाइयों में स्थापित होती है उन्हें कोई कर नहीं देना पड़ता है।
सरकार ने श्रमिक कानूनों को भी कुछ लचीला बना दिया है जिससे विदेशी पूंजी नियोजन को आकर्षित किया जा सकता है। हमेशा के अनुसार कम्पनी द्वारा मज़दूरों को किराए पर लिए जाने के बदले, जब कभी काम का अधिक दबाव बढ़ जाता है तो कम्पनियाँ थोड़े समय के लिए मजदूरों को "छूट" (लचीला) पर किराये पर ले सकती है। यह कम्पनी के लिए पारिश्रामिक कम करने के लिए किया जाता है। विदेशी कम्पनियों ने श्रमिक कानूनों में लचीलेपन की माँग की।

रवि ने कभी आशा नहीं की थी कि उद्योगपति के रूप में जीवन के इस छोटे दौर में उसे कष्टों को झेलना पड़ेगा। 1992 में तमिलनाडु के औद्योगिक शहर हुसूर में रवि ने बैंक से ऋण लेकर अपनी केपेसिटर कम्पनी लगाई। केपेसिटर का उपयोग कई घरेलू विद्युत उपकरणों जैसे ट्यूब लाइट, दूरदर्शन, आदि में होता है। तीन वर्षों के भीतर उसने उत्पादन को बढ़ा दिया तथा 20 कर्मचारी उसके अधीन कार्यरत थे।

- प्रतियोगिता ने भारत में किस प्रकार लोगों को लाभ पहुँचाया?
- कुछ अन्य भारतीय कम्पनियाँ MNC की तरह उभरनी चाहिए? देश के लोगों के लिए यह कैसे लाभकारी हैं।
- क्यों सरकार विदेशी निवेश को अधिक आकर्षित कर रही है?
- किसी एक की प्रगति अन्य के लिए विनाशकारी होती है कहीं हमने पढ़ा था। भारत में कुछ लोगों ने SEZs का विरोध किया था। पता कीजिए कि वे कौन लोग थे और उन्होंने विरोध क्यों किया था?

निम्न दृश्य के लिए काल्पनिक शीर्षक लिखिए। यह वैश्वीकरण के लिए क्या बताता है?

SCERT TELANGANA

सरकार ने WTO के 2001 समझौते के अनुसार प्रतिबन्धों को हटा दिया जो केपसिटर के आयात पर लगाए गए थे, तो उसने अपने द्वारा स्थापित कंपनी के लिए संघर्ष शुरु किया। उसकी प्रमुख ग्राहक, दूरदर्शन कंपनियाँ थीं, जो विभिन्न पार्टस के साथ-साथ केपेसिटर दूरदर्शन सेट बनाने के लिए खरीदती थी। MNC ब्राण्ड की प्रतियोगिता के कारण MNC क्रियाओं के साथ मिलने के लिए भारतीय कंपनियों पर दवाब उत्पन्न हुआ। इन में से कुछ ने केपेसिटर बनाये तथा उन्हें आयातित वस्तुओं की कीमत पर आयात करना चाहा जो रवि जैसे लोगों द्वारा लगाई गई कीमत की आधी थी।

रवि अब 2000 में उत्पादित किए जाने वाले केपेसिटर की तुलना में आधा उत्पादन करने लगा और अब केवल सात कर्मचारी उसके साथ काम करते थे। हैद्राबाद और चेन्नई में समान व्यापार करने वाले रवि के मित्रों ने अपने यूनिट्स को बन्द कर दिया।

- वे कौनसे मार्ग थे जिनसे रवि की लघु उत्पादन इकाई प्रतियोगिता के उदय से प्रभावित हुई?
- रवि जैसे उत्पादन कर्त्ता ने उत्पादन बन्द कर दिया क्योंकि अन्य देशों के उत्पादनों की दर से इन देशों की उत्पादन दर उच्च थी। इस बारे में आप क्या सोचते हैं?
- वर्तमान अध्ययन यह बताता है कि भारत में लघु उत्पादन कर्त्ता को बाज़ार में प्रतियोगिता के लिए तीन चीज़ों की आवश्यकता है; (a) उचित सड़कें, विद्युत, जल, कच्चा माल, बाज़ार तथा सूचना जाल, (b) तकनीकी की वद्धि एवं आधुनि कीकरण, (c) उचित ब्याज दर पर समय पर ऋण मिलने की सुविधा। समझाइए कि ये तीनों चीज़ें भारतीय उत्पादकों की किस प्रकार सहायता करती है?
- आप सोचते हैं कि MNC इनमें निवेश करने में रूचि लेते हैं? क्यों?
- क्या आप सोचते हैं कि सरकार इन सुविधाओं को उपलब्ध कराने में भूमिका निभाती हैं? क्यों ?
- किसी अन्य कदम के बारे में सोचिए जो सरकार उठा सकती है? चर्चा कीजिए।

उचित वैश्वीकरण के लिए संघर्ष

उपरोक्त घटना यह सूचित करती है कि हर कोई वैश्वीकरण से लाभान्वित नहीं हुआ। शिक्षित, कुशल एवं समृद्ध लोगों ने इस नई योजना से अधिक लाभ उठाया। दूसरी ओर, ऐसे कई लोग थे जिन्हें लाभ का आंशिक लाभ भी प्राप्त नहीं हुआ। तभी से वास्तव में प्रश्न यह है कि वैश्वीकरण कैसे अधिक ''न्यायसंगत'' बनाया जाय? न्यायसंगत वैश्वीकरण सभी के लिए अवसरों का निर्माण करती है तथा सुनिश्चित करता हैं कि वैश्वीकरण का लाभ सभी को मिले।

सरकार ने इसे संभव बनाने में महत्वपूर्ण पात्रता निभाई। इसकी योजनाओं ने न केवल अमीर और शक्तिशाली लोगों के हितों की रक्षा की बल्कि देश के सभी लोगों के हितों की रक्षा भी की। सरकार द्वारा इसे संभव करने वाले कदमों के बारे में आपने पढ़ा ही है। उदाहरण के लिए, सरकार यह आश्वासन दें कि श्रमिक कानून उचित रूप से लागू किए जाएँगे और कर्मचारियों को उनके अधिकार मिलेंगे। यह उन उत्पादकों की तब तक सहायता करें जब तक

SCERT TELANGANA

कि वे प्रतियोगिता के लिए शक्तिशाली न बन जाए। यदि आवश्यक हो, सरकार व्यापार और निवेश पर अवरोधों का उपयोग कर सकती है। ''उचित नियमों'' के लिए WTO से समझौता कर सकती है। यह समान रुचि वाले अन्य विकसित देशों के साथ भी समझौता कर सकती है और WTO में जिन विकसित देशों ने आधिपत्य जमाया है, उनका विरोध भी कर सकती है ।

पिछले कुछ वर्षों में तीव्र प्रचार एवं जन संस्थाओं के प्रदर्शन ने WTO में व्यापार एवं नियोजन के महत्वपूर्ण निर्णय पर भी प्रभाव डाला है। इससे यह स्पष्ट होता है कि उचित वैश्वीकरण के संघर्ष में जनता भी महत्वपूर्ण भूमिका रखती है।

अन्य विषय

एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि क्या वैश्वीकरण राष्ट्र के हित को देखता है या नहीं? अधिक समय के लिए भौतिक स्तर पर लोगों के संगठन के साथ राष्ट्र-राज्य मुख्य राजनैतिक संस्थाओं के रूप में सीमांकित देशों में उभरते हैं। यह भौगोलिक विभाजन हमारा और उनका भी विभाजन करता है, बाहरी और आन्तरिक रूप से तथा अपने देश के प्रति मनोवैज्ञानिक आधार बनाता है, जो राष्ट्रीयता की भावनाएँ कहलाती हैं। वैश्वीकरण का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव यह होता है कि यह भावनाओं को धीरे-धीरे घुलनशील बना देती है।

एक और विषय वह है- जो हमारा ध्यान खींचता है, क्या वैश्वीकरण सांस्कृतिक घनिष्ठता को बढ़ाता है या सांस्कृतिक विविधता को विकसित करता है? जबकि कुछ लोग बहस करते हैं कि आधुनिक संचार एवं तकनीक का प्रभाव कुछ संस्कृतियों और विचारों को फैलाता है, जो स्थानीय एवं लघु संस्कृतियों को घटाता है। दूसरे बहस करते हैं कि वैश्वीकरण ने विषम और गिरते सांस्कृतिक रिवाज़ों को फैलाया है। यह भी निष्कर्ष निकाला गया कि कुछ भाषाएँ विस्तृत रूप में उपयोग की जा रही हैं और अन्तर्राष्ट्रीय संचार का माध्यम है, अन्य को अनदेखा किया गया है तथा कुछ समाप्ति की सीमा पर है।

WB और IMF तथा उनकी शक्तियाँ

अन्तर्राष्ट्रीय पुनःनिर्माण एवं विकास बैंक (IBRD) और अन्तर्राष्ट्रीय विकास संगठन (IDA), विश्व बैंक माने जाते है। इन दोनों संस्थाओं में 170 से अधिक (प्रत्येक में) सदस्य है। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका जैसे देश इन संस्थाओं पर नियंत्रण रखते हैं। आज भी USA का 16% मतदान मूल्य रखता है। कुछ और अन्य देश जैसे जापान, जर्मनी, ब्रिटेन, फ्रान्स के पास 3 से 6% तक मतदान अधिकार है। निर्धन देशों को मतदान अधिकार कम है। आज भारत या चीन के पास भी अन्य गरीब देशों की अपेक्षा अधिक मतदान मूल्य है। विश्व बैंक उन्हें राय देता है और सरकार किस प्रकार योजनाएँ लागू करें और उनका मार्गदर्शन करता है।

उपसंहार

वैश्वीकरण देशों की समाकलन की तीव्र प्रक्रिया है। 20 वीं शताब्दी में गोलक पर महा परिवर्तन हुआ है। इसमें आर्थिक राजनैतिक एवं सांस्कृतिक मोड़ (दृष्टिकोण) हैं। वैश्वीकरण के वर्तमान चरण का एक प्रमुख प्रयोग चिह्न बहु राष्ट्रीय कार्पोरेशन का अत्यधिक सम्पति और शक्ति के द्वारा व्यापार और निवेश पर नियंत्रण और बाजारों एवं उत्पादनों का समाकलन है। उदारीकरण द्वारा

व्यापार और निवेश पर से अवरोध हटा देने से वैश्वीकरण से विवश कर आर्थिकता को खोल दिया है।

वैश्वीकरण के लाभ असमान रूप से वितरित किए गए। समृद्ध उपभोक्ता तथा कुशल, शिक्षित एवं अधिक सम्पतिवान उत्पादन कर्त्ता को इसका लाभ मिला। कुछ सेवाएँ योग्य तकनीकी का विस्तार हुआ। दूसरी ओर हज़ारों लघु उत्पादकर्त्ता और कर्मचारियों के रोज़गार एवं काम के अधिकार क्षीण हो गए। यह महत्वपूर्ण है कि हमें वैश्वीकरण के स्वभाव के दोनों पहलूओं को समझना चाहिए।

असमानता का दूसरा दृष्टिकोण, जो हमने देखा है वह है नीतियों के विषय में धनी देशों के नियंत्रण का प्रभाव। अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक नीतियों के आदान प्रदान - व्यापार, निवेश, स्थान परिवर्तन या घरेलू विषय सभी पर धनी पश्चिमी देशों का विश्व के बचे भाग पर अनुचित प्रभाव रहा। अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएं जैसे WTO, WB और IMF विकासशील देशों की अपेक्षा विकसित देशों की रुचियों का प्रतिनिधित्व प्रदर्शित करते हैं। इसीलिए वैश्वीकरण के समर्थक वैश्विक समाकलन की विशेषताओं के बारे में बोलते हैं और वैश्वीकरण विकास और समृद्धि का एक अवसर है, यह मानते हैं। इसके आलोचक यह दर्शाते हैं कि यह कुछ देशों का पश्चिम विश्व पर वर्चस्व पाने का दूसरा उपक्रम है। वे कहते हैं कि यह निर्धन देशों में प्रजातन्त्र, कर्मचारियों के अधिकार और वातावरण के लिए हानिकारक है।

मुख्य शब्द

बहुराष्ट्रीय संस्थाएँ (MNCs)	राष्ट्रीय राज्य	प्राद्योगिकी
विदेशी निवेश	विदेशी व्यापार	उदारीकरण

अपनी सीखने की क्षमता सुधारें

1. भारतीय सरकार द्वारा विदेशी व्यापार और विदेशी निवेश पर अवरोध लगाने के क्या कारण हैं? वह इन अवरोधों को हटाने की इच्छुक क्यों हैं ?(AS_1)
2. श्रमिक कानूनों में लचीलेपन का कम्पनियों को क्या लाभ मिलता है ? (AS_1)
3. किन विभिन्न मार्गों द्वारा MNC अन्य देशों में स्थापना, नियंत्रण, और उत्पादन करती है ? (AS_1)
4. क्यों विकसित देश विकास शील देशों से उनके व्यापार और नियोजन में उदारीकरण करवाना चाहते हैं? (AS_4)
5. ''वैश्वीकरण का प्रभाव समान रूप से नहीं हुआ ।'' इस कथन को समझाइए ? (AS_1)
6. किस प्रकार व्यापार एवं निवेश नीतियों में उदारीकरण ने वैश्विक प्रक्रिया में सहायता की? (AS_1)
7. भविष्य में वैश्वीकरण निरन्तर बना रहेगा। आज से 20 वर्षों बाद विश्व कैसे होगा, क्या आप कल्पना कर सकते हैं? आपके उत्तर के लिए कारण बताइए। (AS_4)
8. संसार के मानचित्र में निम्नांकित स्थानों को सूचित कीजिए। (AS_5)

   1) चीन   2) जपान   3) ब्राजील   4) दक्षिण आफ्रिका

SCERT TELANGANA

अध्याय

10

खाद्य सुरक्षा (Food Security)

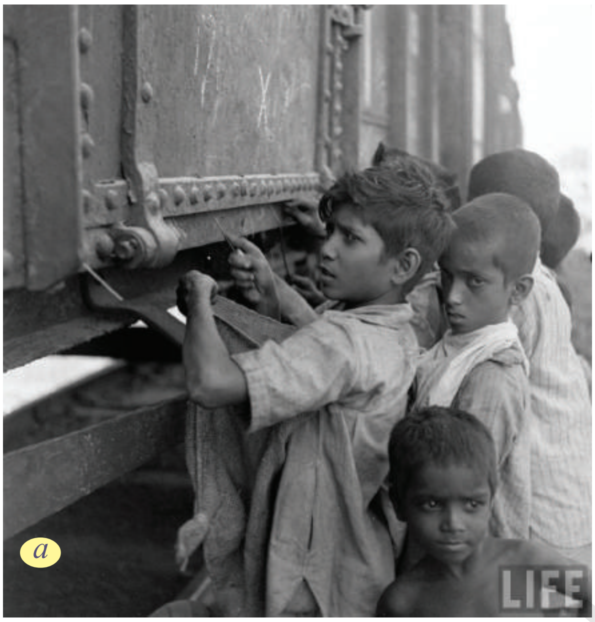

चित्र 10.1 लाइफ पत्रिका से लिया गया चित्र: *(अ) मालगाड़ी से अन्न जमा करने का प्रयास करते हुए बच्चे (आ) भूमि पर गिरे हुए अन्न को बुहारती हुई महिला*

आज़ादी से पहले भारत में अकाल में खाद्य का बृहद स्तर पर अभाव था। बड़े स्तर पर भूख से मौत एक सामान्य कारण था। उदाहरण के लिए 1943-45 में बंगाल में अकाल के समय 3 से 5 मिलियन लोग बंगाल, असोम और उड़ीसा के आस-पास रहते थे। निम्नलिखित को पढ़िए।

"मैं अपने भाई बहनों में सबसे बड़ा था। जीवनयापन के लिए मैं प्रतिदिन एक मज़दूर का कार्य करता था। उस समय अपने पिताजी को गाँव में छोड़कर, अपने भाई-बहनों को साथ लेकर कलकत्ता आ गया। भोजन के लिए उनके पास केवल थोड़ा सा आटा था। हम जहाँ भी भोजन बाँटा जा रहा था उन सभी जगहों पर गये। कलकत्ता की गलियों में मैंने बहुत से लोगों को संघर्ष करते हुए देखा। मैंने उन माताओं को देखा जिनके बेटे वास्तव में मर चुके थे, पर उन्हें हाथों में थामे वे घूम रही थीं। लेकिन माताएँ फिर भी उन पर पानी के छींटे मार रही थी ताकि, वे सक्रिय अवस्था में आ सकें। मैंने बहुत सी चीज़ों को देखा। उन लोगों को देखा जो साँप और घास तक को खा रहे थे। मैं अपने एक भाई-बहन को खो चुका था।

वहाँ पर कुछ लोग किसान थे जो कृषि से जुड़े थे। वे भिखारी नहीं थे इसलिए भीख माँगना नहीं जानते थे। उनके अंदर बहुत स्वाभिमान था। जब वे आये तो फुटपाथ पर बैठे-बैठे उन्होंने दम तोड़ दिया। ऐसी तस्वीरें जब कलकत्ता की जनता के सामने आई तभी वे लोग इतने बड़े स्तर की आपदा के बारे में समझ सके।"

उस समय जो अकाल पड़ा वह भारतीय इतिहास में एक उदाहरण है। क्योंकि उस समय के शासक संगठित रूप से खाद्य उपलब्ध नहीं कर सके। भारत में स्वतंत्रता के समय सरकार ने बहुत सारी व्यवस्थाओं के माध्यम से खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित की। राशन की दुकान

जहाँ जाकर जनता सब्सिडी मूल्य (अनुदान)पर खाद्य पदार्थ खरीदती हैं। मध्याह्न भोजन जिसे आप जैसे बहुत से लोग खाते हैं। आंगनबाड़ी जहाँ छोटी आयु के बच्चे सुरक्षा पाते हैं, दिन का भोजन आदि के लिए सरकार के द्वारा खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित की जाती है। इस अध्याय में हम खाद्य सुरक्षा से संबंधित कुछ मुद्दों को देखेंगे।

पहला खण्ड संपूर्ण खाद्य सुरक्षा के मुद्दे पर ध्यान देता है। उत्पादन का मुद्दा और भोजन की उपलब्धता सारे देश के लिए है। दूसरा खण्ड जनता को मिलने वाली सुलभताओं के बारे में चर्चा करता है - उपलब्ध भोजन लोगों तक पहुँचे-इसे कोई एक व्यक्ति कैसे सुनिश्चित कर सकता है। अंत में, इन नीतियों की प्रभावोत्पादकता को जानने के लिए हमें परिवारों के पोषण स्तर पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

देश के लिए खाद्य सुरक्षा, खाद्य उत्पादन में वृद्धि (Food Security for the Country, Increasing foodgrain production)

खाद्य सुरक्षा के लिए प्रचुर मात्रा में उनका उत्पादन करना एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। उदाहरण के लिए भारत में इसका अभिप्राय है कि, सरकार इस तरह की स्थितियों को बनाए ताकि किसान प्रचुर मात्रा में खाद्यानों का उत्पादन कर पाए।

आरेख 1 का निरीक्षण करें एवं रिक्त तालिका को भरें। (प्रत्येक बिंदु का महत्व और **y-** अक्ष की सही राशि को जानने के लिए एक स्केल का उपयोग करें।)

- खाद्य उत्पादन में 1970-71 से .... तक वृद्धि हुई। धान के उत्पादन में, 1970-71 में 40 मिलियन टन से 2010-11 तक .... मिलियन टन की वृद्धि हुई है। गत 40 वर्षों में उत्पादन में वृद्धि की एक और प्रमुख खाद्य फ़सल ....। धान, गेहूँ की तुलना में - 1970-211 तक के समय में .... उत्पादन में वृद्धी नहीं हुई। इसका कारण .... हो सकता है।
- अध्याय '9' 'रामपूर गाँव : एक ग्रामीण - अर्थ व्यवस्था'' में भूमि और अन्य प्राकृतिक संसाधन वाले भाग को फिर से पढ़िए। भूमि से फसल उत्पादन की वृद्धि के लिए कौन-कौन से संभावित कारक है?

आरेख 1 :चुनिंदा खाद्यान्नों का उत्पादन (मिलियन)

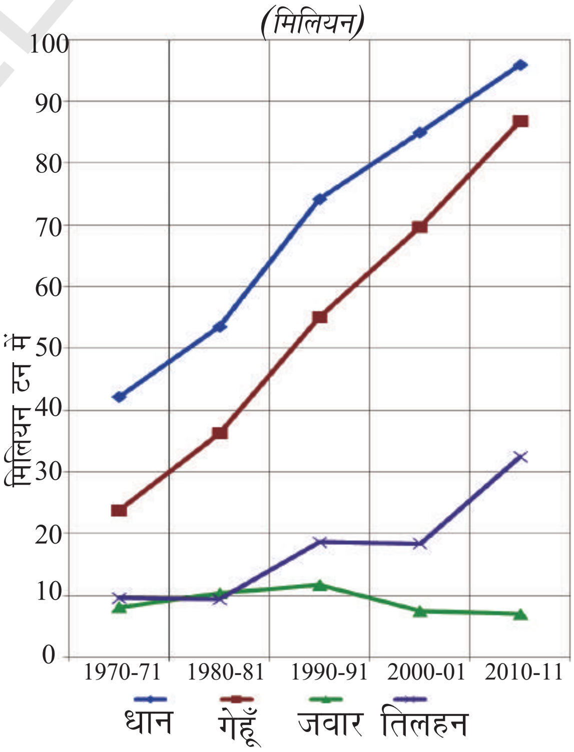

पिछले कुछ दशकों से खेती के अंतर्गत आने वाले क्षेत्रों में परिवर्तन नहीं हो रहा है। फसल एक जटिल चरराशि बन गयी है। आरेख:2 को देखिए।

प्रति हेक्टर फसल की उपज में आवश्यक आगतों द्वारा उचित तरीके उपलब्ध कराकर फसल में न्याय संगत तरीके से वृद्धि की जा सकती है। इसका एक रास्ता यह है कि, सिंचाई के जल का उपयोग समुचित तरीके से हो।

SCERT TELANGANA

आरेख *2 :* चुनिंदा खाद्यान्नों की फसल *(*प्रति हेक्टर में किलो ग्राम*)*

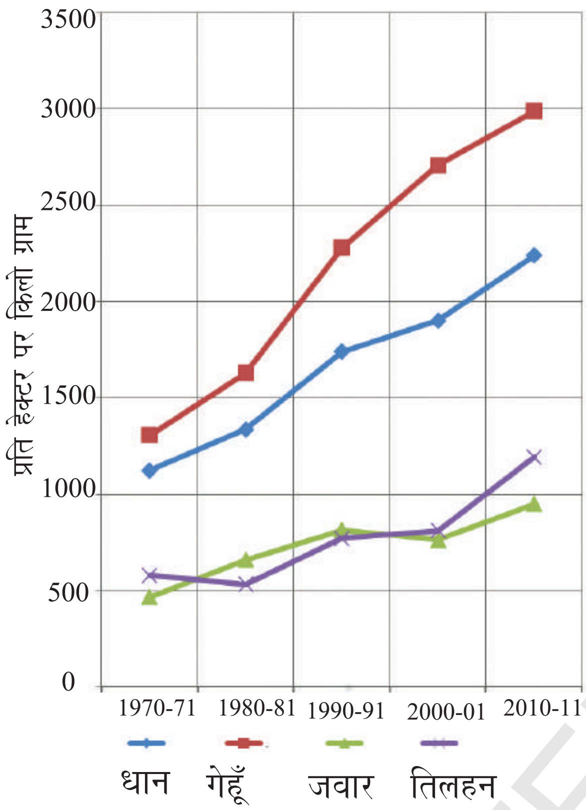

क्योंकि जल सिंचाई का एक आवश्यक साधन है, इसलिए इसे प्रत्येक के लिए उपलब्ध कराना आवश्यक है।

कम उपज वाली पैदावार को सारणी 2 में दिखाया गया है जो कि ज्यादातर सूखी जमीन में पैदा होती हैं। जहाँ वर्तमान में यहाँ तक कि, भविष्य में भी सिंचाई की सुविधा कम है। सूखा अवरोधक फसलों को स्थानीय स्थिति में भी लगाने पर पैदावार में वृद्धि हो सकती है।

यहाँ यह भी महत्वपूर्ण है कि हम यह सुनिश्चित करें कि, भूमि और अन्य प्राकृतिक संसाधन इस प्रक्रिया में क्षतिग्रस्त न हो। कुछ वैज्ञानिक एवं कुछ लोग जो कृषि क्षेत्रों में काम करते हैं, वे बताते हैं कि किस प्रक्रिया द्वारा भारत में धान और गेहूँ के खेतों की जुताई होती है। किस तरह अवैज्ञानिक तरीके से रासायनिक खाद कीटनाशक का लगातार प्रयोग होता है। जो उपज की दर में निरंतर किंतु अस्थायी वृद्धि करता है। यह विधि नम भूमि के अपक्षय को बढ़ाती है। यदि यही स्थिति रहेगी तो वृद्धि की अपेक्षा हमारी फसलें और कम होती जायेगी एवं भूमिगत जल में भी कम होगी।

नीचे के गद्यांश में धान और गेहूँ की प्रति हेक्टर उपज का वर्णन किया गया है।रिक्त स्थान भरिए।

- दो फसलों --------और ------------में हमेशा न्यून पैदावार होती है जब हम धान और गेहूँ से उसकी तुलना करते हैं। कुछ वर्षों से दोनों में धीमी वृद्धि है।
- जवार की पैदावार की वृद्धि पर ध्यान देने की आवश्यकता क्यों है? चर्चा कीजिए।
- लंबे समय से धान और गेहूँ की पैदावार में वृद्धि में योगदान देने वाले कारक क्या है?

खाद्यानों की उपलब्धता (Availability of Foodgrains)

हमें सबसे पहले यह देखना चाहिए कि एक देश संपूर्ण देश खाद्यान्न के उत्पादन में समर्थ है या नहीं। हम कैसे समझेंगे कि, सभी के लिए भोजन है या नहीं? क्या वह भोजन परिवार तक पहुँचता है? इसकी जाँच बाद में की जाएगी। पहले हम यह देखें कि क्या उपलब्ध है? अर्थात प्रत्येक व्यक्ति के लिए देश में खाद्यान की उपलब्धता प्रचुर मात्रा में होगी एवं कुछ वर्षों में इसमें वृद्धि होगी। खाद्यान में वृद्धि क्या सच में संभव है?

SCERT TELANGANA

यहाँ उत्पादन एवं खाद्यान्न की उपलब्धता में अंतर है?इसका आकलन ऐसे हो सकता है।

खाद्यान्न की वार्षिक उपलब्धता = उस वर्ष के दौरान खाद्यान्न का उत्पादन (उत्पादन-बीज, भोजन, व्यर्थपदार्थ)+ वास्तविक आयात (आयात - निर्यात) - स्टॉक में परिवर्तन सरकार के साथ (वर्ष के अंत में स्टॉक - प्रारंभ में स्टॉक)

प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रतिदिन खाद्यान्न की उपलब्धता = (वर्ष भर के खाद्यान्न की उपलब्धता ÷ आबादी)/365

उत्पादन निर्यात और सरकारी स्टॉक में परिवर्तन संबंधी सूचनाएँ नीचे तालिका में दी गयी हैं। (1971,1999 एवं 2011 के) उत्पाद, आयात का एक तरीका है जिससे खाद्यान्न की उपलब्धि किसी विशेष साल में बढ़ाई जा सकती है। सरकार के भंडार में बदलाव खाद्यान्न की उपलब्धि बढ़ाने का एक और तरीका है। उदाहरण के लिए सरकार अपने भंडार में से चावल बेचकर उसकी उपलब्धि बढ़ा सकती है।

जिस समय सरकार का चावल भंडार कम होता है, उसी समय उस साल उपलब्ध चावल की मात्रा खपत के लिए बढ़ जाती है।

(सरकारी भंडार के बारे में आप अगले भाग में पढेंगे।)

जैसा कि 1971 के लिए दिखाया गया है, वैसे ही 1991 और 2011 के प्रति व्यक्ति के लिए खाद्यान्न उपलब्धि की गणना कीजिए।

तालिका 1: खाद्यान्न की उपलब्धि - प्रति व्यक्ति

वर्ष	जनसंख्या (मिलियन)	खाद्यान्न का वास्तविक उत्पादन	वास्तविक निर्यात	सरकारी भंडार में परिवर्तन	खाद्यान्न की वास्तविक उपलब्धतता	प्रदि दिन प्रति व्यक्ति के लिए उपलब्ध (ग्राम)
col (1)	col (2)	col (3)	col (4)	col (5)	col (6)	col (7)
1971	551	94.9	2	2.6	col (3) + col (4) – col (5) = 94.3	={col (6)/col (2)}/365} =(94.3/551)/365 = 0.000469 टन * = 0.000469 x 1000 = 0.469 किलोग्राम * = 0.469 x 1000 = 469 ग्राम
1991	852	154.3	–0.1	–4.4		
2011	1202	214.2	–2.9	8.2		

** नोट: 1 टन =1000 किलोग्राम; 1 किलोग्राम = 1000 ग्राम*
 # मिलियन टन

- अपनी गणना के आधार पर रिक्त स्थान भरिए: 1971 और 1991 के बीच प्रति व्यक्ति खाद्यान्न की उपलब्धि_______________ (बढ़ी/घटी) है लेकिन 2011 में ________ (कम/ज्यादा) थी। कुछ दशकों से जनसंख्या वृद्धि कम होने के बावजूद यह सब हुआ है। भविष्य में सरकार को _________ के जरिए अधिक उपलब्धि सुनिश्चित करनी होगी।

SCERT TELANGANA

खाद्यान्न के अंतर्गत क्या आता है?
(What falls under food grains)

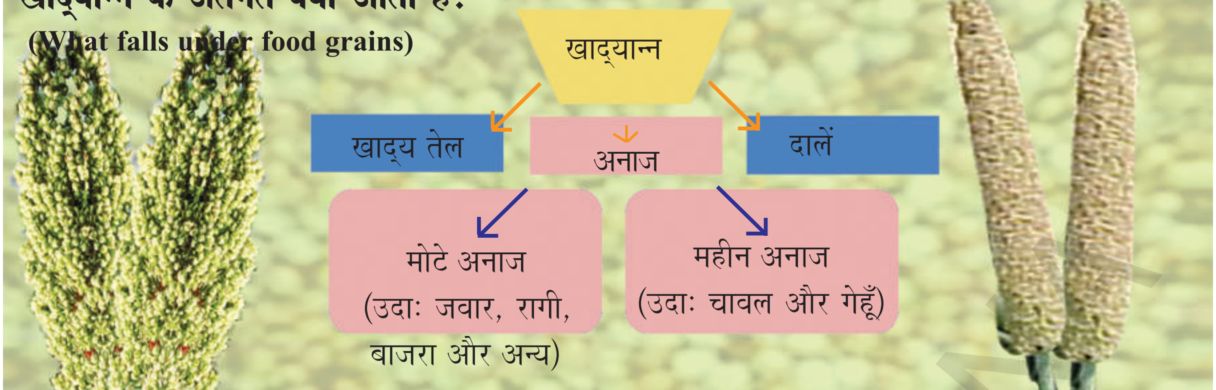

बहुत लोग सोचते हैं कि मोटा अनाज हीन होता है। इन्हें मोटा कहा जाता है इसलिए हम समझते हैं कि ये खुरदुरे और अस्वास्थ्यकर होते हैं। वास्तव में ये ही पोषक और पूर्ण आहार होते हैं। देश के शुष्क भागों में रहने वाले लोगों का यह प्रमुख आहार है। भारत के घरों में ये 'मोटे' अनाज उपनिवेशी शासकों के कारण प्रचलित हुए क्योंकि वे सफेद चावल और गेहूँ की प्राप्ति के लिए स्थानीय अनाज और सांस्कृतिक रिवाजों पर निर्भर होने लगे। बहुत लोग इन अनाजों को 'पोषक-अनाज' कहते हैं।

अन्य खाद्य पदार्थों की उपलब्धता (Availability of Other Food Items)

जव लोग प्रचुर मात्रा में फल, सब्जी, दूध और माँस, मछली की माँग करते हैं तो यह उपभोगविधि में परिवर्तन लाता है। यह एक अच्छा संकेत है उपभोक्ता के लिए और उत्पादक के लिए। उपभोक्ताओं को विभिन्न खाद्य पदार्थों और संतुलित आहार की आवश्यकता होती है। किसान विभिन्न प्रकार की फसल का उत्पादन कर रहे हैं ताकि खाद्यान्न में विविधता के साथ-साथ उनकी आय में भी वृद्धि हो। आप स्मरण कीजिए कि पिछली कक्षाओं में आपने पढ़ा कि, तेलंगाणा में किस तरह किसान तनाव की स्थिति से गुजरें हैं। यहाँ तक कि, उन्होंने आत्म हत्या भी की। क्योंकि पिछले दो दशकों में तेलंगाणा में खाद्यान्न फसलों के स्थान पर नगदी फसलों जैसे कपास को उगाया गया था। किसान इसके बदले में अपना ध्यान इसके समान अन्य कार्यों जैसे - पोल्ट्री, (मुर्गीपालन) मत्स्य पालन, दुग्ध उत्पादन आदि जो नए अवसर किसानों को देते हैं, उन पर लगा सकते हैं।

कुछ वर्षो में अन्य खाद्य पदार्थो के उत्पादन में वृद्धि हुई है। लेकिन यह खाद्य की आवश्यकता की न्यूनतम दर है। जो संतोषजनक नहीं है। आहार विज्ञानी यह सलाह देते हैं कि, प्रत्येक व्यक्ति को 300 ग्राम सब्ज़ी, 100 ग्राम फल एक दिन में लेना चाहिए। किंतु यह खाद्य सामग्री क्रमशः 180 ग्राम एवं 58 ग्राम ही मिल पाती है। उसी तरह अंडा की आवश्यकता प्रत्येक व्यक्ति 180 है पर इसकी उपलब्धता है-30। मांस की आवश्यकता 11 किलो है पर प्रत्येक व्यक्ति को 3.2 किलोग्राम उपलब्ध हो पाता है। हमें 300 मिली लीटर दूध की आवश्यकता है जबकि प्रत्येक व्यक्ति को 210 मिलीलीटर दूध ही उपलब्ध हो पाता है।

किसानों को निवेश के संबंध में सहयोग की आवश्यकता है। अन्य विविधि खाद्यान्न के लिए उन्हें बाज़ार उपलब्ध करवाया जाना चाहिए। इस नयी परिस्थिति में जिस चुनौती का सामना वे 'बाज़ार' में करते हैं उसमें किसानों को समर्थन, सहयोग एवं निर्देशन की आवश्यकता होती है।

कृषिगत विविधता (Agricultural Diversification)

मिदनापुर में लाल लेटराइट मिट्टी है। यह गाँव बोर कोल्लाह ग्राम पंचायत क्षेत्र में कसपाल था। ज़्यादातर लोगों के पास ट्यूबवेल थे। जल स्त्रोत में वृद्धि के लिए बैंक ऋण देता था। मैंने हरि प्रसाद समंथा से बात की। चिट्टू, मैती, जार लंका एवं अन्य किसी के पास दो एकड़ से ज्यादा जमीन नहीं थी। तकनीक अच्छी है। परिष्कृत बीज़ यूनिवर्सिटी के द्वारा आते थे जो कि धान के लिए स्थानापन्न था। लेकिन वे नगदीफसलों एवं सब्जी से प्रचुर पैसा बनाते थे। ये बीज व्यापारिक कंपनियों के माध्यम से आने की वजह से महंगे थे। उसी समय एक अच्छी शुरुआत हुई थी- दुग्ध उत्पादन की और उनमें से सभी के पास तीन से पाँच गाये थीं। महिलाएँ इनकी देखभाल करती थी। किसान जानते थे कि सर्वश्रेष्ठ दलहन महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश से आ रही थी। उनकी स्वयं की सरसों (राई) बहुत अच्छी किस्म की थी। जमीन की ढलान नदी से ऊपर थी। दो सौ तीन सौ मीटर के बीच की दूरी मैंने दूसरे गाँव पर ध्यान दिया। लगभग आधी आबादी गरीब थी। यह दूसरी फसल के साथ एकाधिकार वाली फसल का क्षेत्र था। यह फसल वर्षा पर आधारित थी। पैदावार निम्न थी। कई उत्तर संभावित थे किंतु योजना और सरकार की सहायता के बिना उनमें विविधता उत्पन्न करने की बात एक प्रकार का मज़ाक थी।

उसके लिए ध्यान देने की बात है कि, कृषिगत विविधता का प्रभाव खाद्यान्न के उत्पादन पर पड़ता है। इसके कारण नीति असमंजस की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। जिसे योजना के द्वारा सावधानी पूर्वक निर्वहण करना चाहिए। आज भी संसाधनों का उपयोग कृषि के अलावा अन्य चीजों में हो रहा है। जिसकी वजह से उत्पादन दर निम्न हो सकती है। जब हम अन्य देशों से इसकी तुलना करते हैं तो पाते हैं कि, यह दर भारत में अत्यंत अल्प है। यूरोप में यह (700 ग्राम) और USA(850 ग्राम) है। भारत में खाद्य सुरक्षा की उपलब्धता की स्थिति चिंताजनक है। एक गरीब घरेलू उर्जा का अधिक निष्कासन करता है और उस उर्जा को पाने के लिए पूर्णतः खाद्यान्न पर निर्भर करता है इसीलिए नीति का उद्देश्य खाद्यान्न के साथ साथ अन्य खाद्य पदार्थों का उत्पादन भी होना चाहिए ।

- उन शब्दों और वाक्यों को रेखांकित कीजिए जो हमें कृषिगत विभिन्नता के बारे में बताती हैं और सविस्तार बताइए कि ये भारतीय किसानों के लिए क्यों आवश्यक है।
- अपने-अपने गाँव की या जिस गाँव के बारे में आप जानते हैं उसकी कृषिगत विभिन्नता का वर्णन कीजिए।

भोजन की सुलभता (Access to Food)

अगला महत्वपूर्ण पहलू खाद्य सुरक्षा का है ताकि, खाद्य-पदार्थ सुलभ हो सके। अन्य पदार्थों एवं खाद्यान्नों का उत्पादन संतोषजनक नहीं है। प्रत्येक को उपभोग के लिए इसे खरीदने में सक्षम होना चाहिए। क्या प्रत्येक व्यक्ति खाद्यान्न की न्यूनतम आवश्यकता की पूर्ति हेतु समर्थ है?

आप स्मरण कर सकते हैं जो आपने आठवीं कक्षा में पढ़ा है। भोजन जो हम खाते हैं, वह हमारे शरीर के लिए उपयोगी होता है एवं कैलोरी प्रदान करता हैं। यह हमारे कार्य करने में सहायक होता है। यदि हम कम से कम पोषक तत्व युक्त भोजन खाते हैं तो हमारे शरीर में कैलोरी की मात्रा कम हो जाती है जिससे हम कमज़ोर हो जाते हैं तथा काम नहीं कर पाते हैं। तो यह हमारे स्वास्थ्य एवं

SCERT TELANGANA

आरेख - 3 : ग्रामीण क्षेत्रों में प्रति व्यक्ति ली जाने वाली कैलोरी

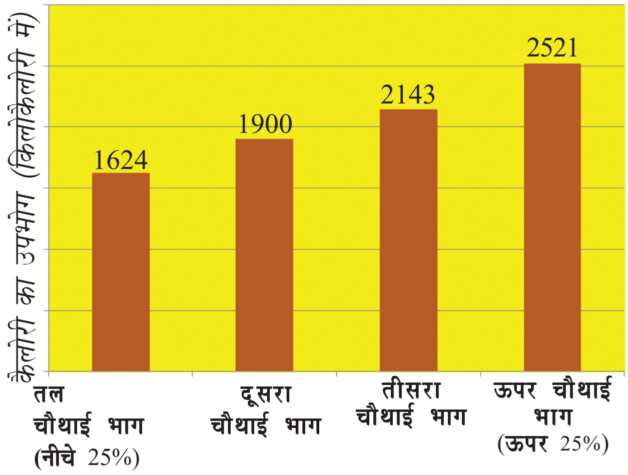

* *'व्यय' के विवरण के बारे में, आप आठवीं कक्षा के इसी आरेख से पढ़ चुके हैं।*

कार्य क्षमता पर बुरा प्रभाव डालता है। शहरी क्षेत्रों में 2100 कैलोरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में 2400 कैलोरी प्रत्येक दिन भोजन में आवश्यक है।

राष्ट्रीय स्तर पर औसत कैलोरी का स्तर ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों में आवश्यकता से कम है। 1983 और 2004 के बीच में कैलोरी की खपत निम्न है। यह एक चौंकाने वाला तथ्य है कि, अर्थव्यवस्था में वृद्धि तीव्र गति से हो रही है। वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में कई गुना वृद्धि हुई है।

वितरण की असमानता छिपाया जाना सामान्य नहीं है। बहुत समृद्ध लोग जो खाना खाते हैं वह आवश्यक कैलोरी से ज्यादा पोषक होता है। आबादी का बहुत बड़ा भाग आवश्यक कैलोरी से कम लेता है। ग्रामीण क्षेत्रों में 80% लोगों के भोजन में आवश्यक कैलोरी की खपत कम है। आरेख 3 में आप देख सकते हैं ग्रामीण क्षेत्रों के निर्धन लोग कैलोरी की न्यूनतम मात्रा ले पाते हैं। वे मानकीकृत 2400 कैलोरी से कम कैलौरी का उपभोग करते हैं। तथापि ये लोग कठिन मेहनत और शारीरिक श्रम करते हैं।

न्यूनतम कैलोरी का सबसे बड़ा कारण है लोगों की क्रय-शक्ति का कम होना। लोगों के पास पर्याप्त आय नहीं है कि, वे खाद्य पदार्थ खरीद सके। यहाँ पर बहुत से कारण हैं जो आप पढ़ चुके हैं, जैसे गरीबी, बेरोज़गारी, जन संसाधन आदि। आगे पढ़ने से पहले क्या आप इनमें से कुछ का स्मरण कर सकते हैं?

जन वितरण प्रणाली (Public Distribution System (PDS))

राशन की दुकान लोगों की खाद्यान्न आवश्यकता को पूर्ण करने का महत्वपूर्ण जरिया है। 2004-05 में एक सर्वेक्षण किया गया था; यह पता लगाने के लिए कि भिन्न-भिन्न राज्यों के लोग जन वितरण प्रणाली की उचितदरों की दुकानों से क्या खाद्यान्न प्राप्त करते हैं और कुल खाद्यान्न उपभोग में उनका हिस्सा कितना है? आरेख 4 में देखिए। यह भारत के विभिन्न राज्यों के लोगों की खाद्यान्न पर निर्भरता को दर्शाता है।

- कक्षा आठवीं में की गयी जन-वितरण प्रणाली की चर्चा का पुनःस्मरण कीजिए। देश की खाद्य सुरक्षा से जन वितरण प्रणाली किस प्रकार संबंधित है?

अध्ययन यह बताता है कि, भारत के दक्षिणी क्षेत्रों में जन वितरण प्रणाली का अच्छा रिकार्ड रहा है। कोई भी प्रांत ऐसा नहीं है जहाँ वैश्विक PDS(जनवितरण प्रणाली) को अपनाया नहीं जाता है, अर्थात सभी के पास न्यून दर पर खाद्यान्न उपलब्ध है। यह विरोधाभास अन्य राज्यों में है जहाँ निर्धन परिवार रहते हैं वहाँ खाद्यान्न अलग दामों पर बेचा जाता है। गरीबों के लिए

SCERT TELANGANA

अलग और अमीरों लोगों के लिए अलग। यहाँ तक कि, निर्धन, अति निर्धन को अन्य हक दिए जाते हैं या सुलभता को सुनिश्चित किया जाता है। उदाहरण के लिए, अंत्योदय कार्डधारक के लिए 35 किलोग्राम खाद्यान्न(चावल एवं गेहूँ) प्रत्येक परिवार के लिए प्रत्येक माह सुनिश्चित है।

आरेख 4 : 2009-10 में चावल एवं गेहूँ का क्रय(प्रतिशत में) जनवितरण प्रणाली (PDS)

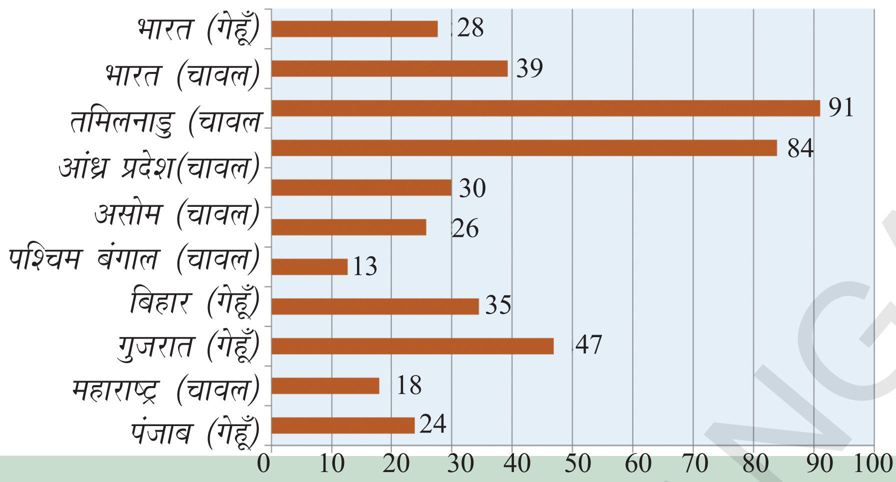

- रिक्त स्थान भरिए। पूरे भारत के लिए, ... प्रतिशत लोग चावल और .... प्रतिशत लोग कुल खपत का गेहूँ राशन की दुकान से खरीदते हैं। यह दिखाता है कि लोग अपनी जरूरत का अधिकांश ..... से खरीदते हैं। वहाँ कुछ बेहद अच्छे प्रदर्शन वाले राज्य जैसे .... और कुछ राज्य ...., ..., ... हैं। जहाँ PDS मुश्किल से लोगों की खाद्यान्न ज़रूरतों को पूरा करता है।

जन वितरण प्रणाली और बफ़र संग्रह (PDS and Buffer Stock)

खाद्यान्न के भंडार की देखरेख एवं सुरक्षा मुख्यत: FCI (भारत खाद्यान्न निगम) के द्वारा की जाती है। जिसे बफर स्टॉक कहा जाता है। FCI गेहूँ और चावल उन राज्यों के किसानों से खरीदती हैं जहाँ इनका उत्पादन प्रचुर होता है। किसान को पूर्व घोषित कीमत इन फसलों के बदले चुकाई जाती है। इसे न्यूनतम समर्थन कीमत कहा जाता है। MSP प्रत्येक वर्ष 'गर्वनमेंट एजेंसी' द्वारा घोषित किया जाता है।

राज्य एवं केंद्र सरकार खाद्यान्न का एक तिहाई भाग किसानों से लेते हैं। वर्त्तमान स्थिति में यह खाद्यान्न लोगों में विभिन्न यांत्रिकियों द्वारा बाँटे जाते हैं। इस समय सरकारी एजेंसियाँ जन वितरण प्रणाली के आवश्यक खाद्यान्न की अपेक्षा और अधिक खाद्यान्न हासिल कर रही हैं। अगर सरकारी स्टॉक में प्रत्येक एक वर्ष के बाद वृद्धि होती है तो उपलब्धतता कम होती है। (देखिए 2011 के सारणी में खाद्यान्न की उपलब्धता) सरकार की आलोचना होती है कि, जरुरतमंद व्यक्तियों को खाद्यान्न नहीं पहुँच पाता है। कभी-कभी सरकार इसे दूसरे देशों को भी निर्यात करती है। क्या आप सोचते है कि खाद्यान्न का निर्यात जो एक मामूली रकम देता है, अच्छा है?जबकि देश की आबादी का बड़ा भाग प्रचुर खाद्यान्न प्राप्ति में सक्षम नहीं है।

2013 में भारत सरकार ने एक नया कानून लागू किया जिसे राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा कहा गया। कानूनी तौर पर यह लोगों के लिए 'खाद्य का अधिकार' है। यह भारत के दो चौथाई लोगों पर लागू होता है। इस कानून के अनुसार न्यूनतम आय वाला प्रत्येक परिवार 5 किलोग्राम खाद्यान्न प्रत्येक महीने सब्सिडी दर पर पाने का अधिकारी होगा।

SCERT TELANGANA

इस तरह के परिवारों में अति निर्धनों को 35 किलोग्राम खाद्यान्न देना सुनिश्चित किया गया। कुछ वर्षों तक केन्द्र सरकार चावल गेहूँ ज्वार बाजरा की आपूर्ति क्रमशः 3 रुपये, 2 रुपये और 1 रुपये में करेगी। इस नियम-कानून के अनुसार-75% लोग जो ग्रामीण क्षेत्रों में रह रहे हैं और 50% शहरी आबादी को अधिकार के है वे जन वितरण प्रणाली से खाद्यान्न खरीदें। अगर सरकार खाद्यान्न उपलब्ध कराने में समर्थ नहीं होगी तो खाद्यान्न खरीदने के लिए नगद राशि दी जायेगी। यह कानून यह भी ध्यान रखता है कि, गर्भवती स्त्रियों, दूध पिलाने वाली महिलाओं को और 1 से 6 वर्ष के बच्चे जो आंगनबाडी में आते हैं उनके लिए पकाया हुआ भोजन उपलब्ध कराया जाए। 6-14 वर्ष के बच्चों के लिए स्कूल में दोपहर का भोजन उपलब्ध करवाया जाय।

भारतीय संसद विभिन्न प्रकार के कानून जैसे राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम कार्यान्वित कर रही है- जैसे एकीकृत बाल विकास योजना' (ICDS)। जहाँ भारतीय संसद राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा जैसे अधिनियम और एकीकृत बाल विकास योजना जैसी योजनाएँ लागू कर रही हैं, वहीं खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए भारतीय न्यायपालिका भी पूर्व सक्रिय हो रही है। पर गैर सरकारी संस्थानों द्वारा याचिकाकृत कोर्ट केसों पर न्यायिक निर्णयों द्वारा, सर्वोच्च न्यायालय ने सभी राज्य सरकारों और केन्द्र सरकार को आदेश दिया कि पाठशालाओं में पढ़नेवाले सभी छोटे बच्चों को माध्याह्न भोजन उपलब्ध करवायें। पहले यह योजना लघु पैमाने पर तमिलनाडु में प्रचलित थी किंतु इसे अब सभी राज्यों में लागू कर दिया गया है। आज पाठशालाओं में लगभग 14 करोड़ बच्चों मध्याह्न भोजन खाते हैं। जब राज्य सरकार इसे लागू करने से इंकार कर देते हैं तो न्यायालय विभिन्न यॉंत्रिकियों और सुझावों द्वारा उन्हें लागू करने का आदेश देता है। जैसे :- मध्याह्न भोजन गर्म-गर्म स्थानीय तौर पर पकाकर दिया जाय (यह अनाज या शुष्क नाश्ते के रूप में न हो) जिसकी आपूर्ति पहले सरकार द्वारा की जाती थी। यह साफ-सुथरा और पोषक (निर्धारित निम्नतम कैलोरी स्तर) हो और सप्ताह के हर दिन अलग-अलग भोजन पदार्थ हो। रसोइये के रूप में दलित, विधवा और लाचार स्त्री को प्रधानता दी जायेगी। यह विश्व की सबसे बड़ा 'विद्यालयी भोजन कार्यक्रम है'। इस योजना के लिए आवश्यक राजस्व की प्राप्ति, सरकार के आदेशानुसार विभिन्न करों द्वारा की जाती है। अब आँगनवाड़ी के बच्चों को भी गर्म, पका हुआ भोजन उपलब्ध हो रहा है।

पोषण स्थिति (Nutrition status)

अंत में, भोजन की वास्तविक पर्याप्तता को देखने के लिए हम बच्चों और व्यस्कों की पोषण स्थिति को देखेंगे। इससे हमें उपर्युक्त चर्चित व्यवस्थाओं के कार्यान्वियन के साथ-साथ इन क्षेत्रों की समस्याओं के बारे में भी पता चलता है। शरीर के लिए प्रत्येक स्तर पर - उर्जा के लिए, शारीरिक अभिवृद्धि, स्वस्थ्य रहने के लिए एवं बीमारियों से लड़ने के लिए भोजन की आवश्यकता होती है। जिस भोजन का हम उपभोग करते हैं उसे इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है।

कार्बोहाइड्रेट्स : यह उर्जा प्रदान करता है जो गेहूँ, चावल, रागी, जवार, खाद्य तेल, चीनी, वसा आदि से मिलता है।

प्रोटीन : यह शारीरिक - मानसिक वृद्धि में सहायक होता है एवं उतकों आदि को सक्रिय करता है। यह हमें बीन्स, दाल, मीट, अंडा, चावल, गेहूँ आदि से मिलता है।

विटामिन्स : यह शरीर को सुरक्षा देता है और कई प्रकार के शारीरिक कार्य प्रणालियों को स्वस्थ्य बनाता है। यह हमें फल, पत्तेदार सब्जी, अंकुरित बीज़ों, मोटे चावल आदि से मिलता है।

खनिज : इसकी आवश्यकता अल्प मात्रा में शरीर की विभिन्न क्रिया कलापों के लिए होती है। जैसे- रक्त के निर्माण के लिए लौह। यह हमें हरी पत्तेदार सब्जियों, रागी आदि से प्राप्त होता हैं।

अगर हम एक सर्वेक्षण करते हैं जैसा कि, हमने पूर्व के अध्यायों में किया है। लोग प्रतिदिन जो भोजन करते हैं, उसके बारे में उनसे पूछकर हम जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इसके द्वारा हम ऊपर वर्णित खाद्य समूहों के बारे में मोटा अनुमान लगा सकते हैं। क्या कार्बोहाईड्रेट, विटामिन, प्रोटीन, खनिज आदि प्रत्येक परिवार में प्रत्येक व्यक्ति इस्तेमाल करता है। ऐसे में इन सबकी सही मात्रा का अनुमान लगाना कठिन है। पोषण विज्ञानी, कद, वजन आदि के आधार पर बताते हैं कि व्यक्ति पूर्णपोषित है या नहीं।

इतनी बड़ी आबादी के लिए पोषण विज्ञानी विभिन्न माप-तोलों और सांख्यिकी ज्ञान का उपयोग कर मानक सीमा निर्धारित करते हैं। यहाँ किसी व्यक्ति की व्यक्तिगत तौर पर तुलना संभव है। यह हमें लोगों के पोषण स्तर की वैध सूचना देता है।

'राष्ट्रीय पोषण संस्थान हैदराबाद' द्वारा एक सर्वेक्षण आयोजित किया गया। यह जानने के लिए कि देश के विभिन्न राज्यों में पोषण का स्तर कुल मिलाकर क्या है? पिछली कक्षाओं में हमने केस अध्ययन किये हैं जिससे हमें निम्न पोषण और निर्धनता से ग्रस्त परिवारों के बारे में पता चला है, किंतु अब इसकी अदृश्य सांख्यिकी के बारे में जानना ज़रूरी है। ये हमें इस बात को जानने में सहायता करते हैं कि ये स्थितियाँ अपेक्षाएँ हैं या सामान्य मुद्दे हैं। ये हमें अदृश्य और उन मुद्दों को भी जानने में सहायता करती है जिनके बारे में सभी नहीं जानते हैं।

उपर्युक्त विचार के अनुसार पोषण के स्तर का निर्धारण सामान्यतः सही कद, वजन आदि के परीक्षण के लिए किया जाता है। आप कभी आंगनबाडी में जाकर देखें कि, वे किस तरह इसे करते हैं। बच्चों का शारीरिक विकास तीव्र होता है। इस उम्र में उनके वज़न में महत्वपूर्ण परिवर्तन होता है, जो एक वयस्क में नहीं होता है।

इसके लिए वजन का मापन सही होना चाहिए और उम्र भी सही होनी चाहिए। इस जानकारी को पोषक विज्ञानियों द्वारा बनायी गई तालिका में दर्ज किया जाता है। वे देखते हैं कि बच्चे सामान्य श्रेणी में हैं या उससे नीचे हैं। यदि हम एक बच्चे का वजन उसकी उम्र के आगे दर्ज़ करते हैं तो उसे देखकर हमें पता चल जाता है कि बच्चे का भार कम है।

आरेख- 5 आंध्र प्रदेश के आंगनवाडी केंद्र में बच्चों के वजन का माप लेने के लिए उपयोग किया गया चार्ट

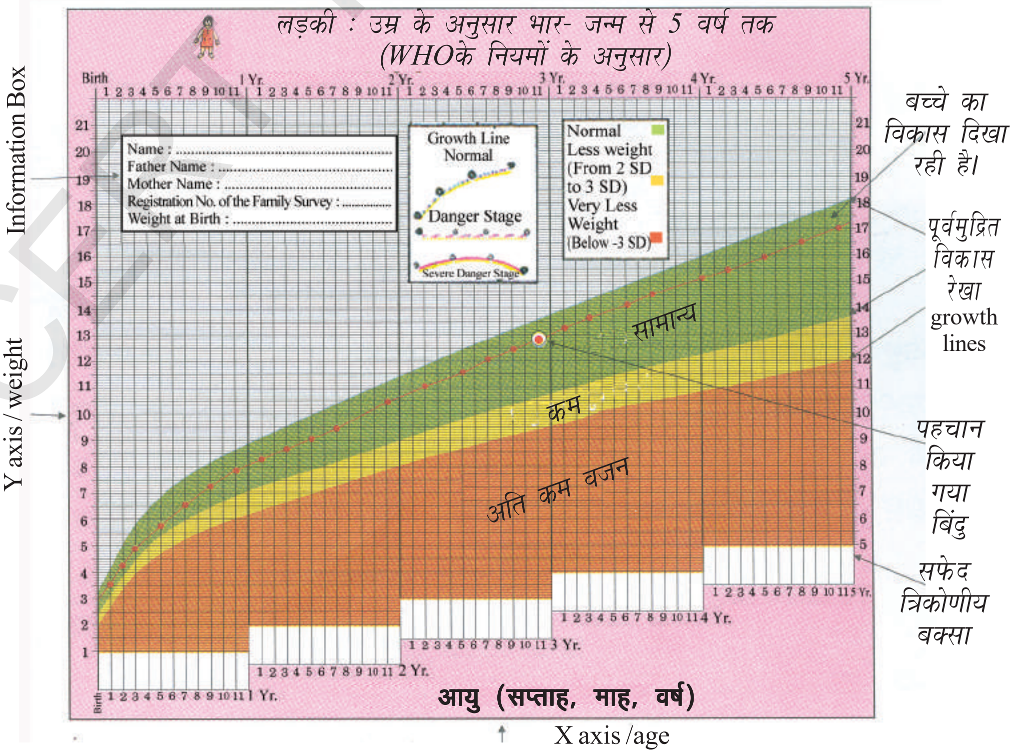

SCERT TELANGANA

NIN का सर्वेक्षण क्या संकेत करता है? 1-5 वर्ष के सात हज़ार बच्चों का परीक्षण किया गया। देश के बहुत से राज्यों में 45% बच्चे कम वजन के थे। उनका वजन अपेक्षित मानक वजन से भी कम था। वे बच्चे भूखे थे और पर्याप्त भोजन नहीं पा रहे थे। वे बहुत कम वजन के थे यह आसानी से दृष्टिगोचर हो रहा था। अगर हम सामान्य तौर पर इसे देखें तो हम यह जानने में असमर्थ होंगे कि इस देश में बहुतायत संख्या में बच्चे कम वजन के हैं। इन बच्चों के बारे में हम कहते हैं कि, वे सामान्य हैं। क्योंकि हमें इन्हें ऐसे ही देखने की आदत हो गई है। सर्वेक्षण हमारी सामान्य सोच को झटका देते हैं और हमें सोचने पर मजबूर करते हैं कि, यह स्थिति गंभीर रुप से देश के आधे बच्चों की शारीरिक मानसिक अभिवृद्धि को प्रभावित कर सकती है।

रिपोर्ट कहती है -

''कुल मिलाकर कम वजन का दर 45% था। यह 1-3 साल के बच्चों की तुलना में 3-5 साल के बच्चों में सबसे ज्यादा था। यह प्रचलन 50% से अधिक गुजरात (58%), मध्यप्रदेश (56.9%) और उत्तर प्रदेश में (53.2%) था एवं केरल में सबसे न्यूनतम (24%) था।'' गंभीर रूप से कम वज़न की समस्या 16% थी।

- मुहल्ले में एक प्रभावकारी अंगनवाडी केंद्र इस स्थिति का सामना किस प्रकार करता है? चर्चा कीजिए।

पोषण विज्ञानी तीन भिन्न-भिन्न सारणियों के द्वारा प्राथमिक विद्यालय के बच्चों में इसकी तुलना करते हैं। यह नीचे दिया गया है। ये तीन भिन्नताएँ हमारे सामने उन बच्चों के पोषण के स्तरों की तस्वीर प्रस्तुत करती हैं।

संकेतक	सामान्य दर से कम बच्चों केलिए यह क्या दर्शाता है।	अपने शब्दों में व्याख्या कीजिए	देश में बच्चों का प्रतिशत %
उम्र के संबंध में वजन का अंकन	कम वजन		45%
कद का अंकन उम्र के परिपेक्ष्य में	वृद्धि में रुकावट	जब बच्चे बहुत समय से कुपोषण से ग्रस्त होते है तो उनकी हड्डियों का विकास प्रभावित होता है। ऐसे बच्चों का कद अपनी उम्र से कम होगा। इसे छिपाना बहुत कठिन है।	41%
वजन का अंकन कद के परिपेक्ष्य में	कमज़ोर	जिन्होंने फिलहाल अपना वजन कम किया है उन्हें अगर पर्याप्त आहार दिया जाए तो वह शीध्रता से सामान्य हो जायेंगे।	21%

- इस सांख्यिकी का आप क्या निष्कर्ष निकाल सकते हैं। इस पर एक अनुच्छद लिखें।

पोषण का स्तर वयस्क पुरुष और स्त्री में ''बॉडी मास इंडेक्स' (BMI) के द्वारा मापा जाता है। आपने इसके बारे में पूर्व की कक्षाओं में पढ़ा है। [BMI=(वजन किलोग्राम में, कद वर्गमीटर में)। इस अनुक्रमणिका द्वारा तुलना करके किसी व्यक्ति के बारे में (जैसेः- कम वज़न दर, सामान्य वज़न या अधिक वज़न) बताया जा सकता है। इसके अधिक मात्रा में होने से अधिक चर्बी का तथा कम मात्रा से आवश्यकता से कम चर्बी होने का पता चलता है।

SCERT TELANGANA

‘NIN’ के रिपोर्ट के अनुसार यह स्थिति वयस्क पुरुष और स्त्री में निम्न प्रकार से है।

बहुत लंबे समय से भयावह उर्जा की कमी(BMI<18.5) जो पुरुष में लगभग 35% जब कि वज़न की अधिकता(BMI>25) 10% थी.....

35% वयस्क स्त्रियाँ लंबे समय से उर्जा की कमी से ग्रस्त थीं। और 14% वजन अधिक होने से मोटी थीं। दीर्घकालिक उर्जा की कमी वाले राज्यों में उडीसा, गुजरात और उत्तर प्रदेश है। इसके पश्चात 33-38% कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और पश्चिम बंगाल जैसे राज्य हैं।

यह किस तरह खाद्य सुरक्षा से संबंधित है? एक डॉक्टर छत्तीसगढ में ग्रामीण क्षेत्र में एक समुदाय स्वास्थ्य योजना के तहत काम कर रहा है। जहाँ कम वज़न के मरीजों की संख्या वहुतायत में थी। प्रतिदिन आने वाले मरीजों की संख्या का संबंध उस अध्ययन से था, जिसमें पाया गया कि PDS अनाज 35% किoग्राo प्रत्येक महीना एक परिवार के लिए दिया जाता है, वह केवल 11 दिनों तक ही चलता है। महीने के अंत में वे बाज़ार अथवा स्वयं के उत्पाद पर निर्भर रहते हैं।

Fig 10.2 : PDS दुकान

उदाहरण के लिए एक रिक्शाचालक विलासपुर में 70-80 रुपये पाता है। 400 रुपये किराये और 100 रुपये बिजली के देने के बाद वह PDS अनाज पर ही गुज़ारा करता है। ऐसे में यह आश्चर्यजनक नहीं था कि, उसने अपना वजन खो दिया और क्षय रोग का शिकार होगया था। ये पैमाने खाद्य सुरक्षा को संकेतित करते हैं। छत्तीसगढ के डॉक्टर ने कहा -

‘‘किसी का वज़न, और कद कम नहीं होगा अगर वह पर्याप्त आहार लेता है। तंदुरुस्ती का साक्ष्य उसके आहार में है। लंबाई और वजन के पैमाने के द्वारा हम PDS के प्रभाव को, उगाई जानेवाली फसलों के महत्व को, लोगों की क्रय-शक्ति को समझ सकते हैं। इसके साथ ही किसी व्यक्ति का कद यह बता देता है कि उसके बचपन में उसे पर्याप्त एवं सही आहार मिला था या नहीं। कुपोषित और छोटे कद वाले लोगों को देखकर यह समझा जाता है कि ये लोग कुपोषण के शिकार है लेकिन मेरे हिसाब से सही नाम ‘भूख’ होगा।

निष्कर्ष (Summing up)

पहले अनुभाग का परीक्षण ‘खाद्य सुरक्षा’ मुद्दे के लिए देश में भोजन के कुल उत्पादन के दृष्टिकोण से किया गया। खाद्य उत्पादन में वृद्धि हम कैसे कर सकते हैं? यह एक विचारणीय प्रश्न है। आगे हम विचार करेंगे कि, किस तरह इस ‘उपलब्धता’ को मापा जाए। यह एक दुखद् तथ्य है कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए जहाँ खाद्यान्न की उपलब्धता बढ़नी चाहिए थी वहीं कुछ वर्षो में यह कम हुई है। जो कुछ भी उत्पादित होता है उसे जनता तक पहुँचना

SCERT TELANGANA

होता है। ये सव बाज़ार में उनके द्‌वारा की गयी या राशन की दुकान में खरीददारी, के जरिए या फिर विद्‌यालय भोजन के द्‌वारा उन तक पहुँचता है। यहाँ यह देखा जाता है कि लोग ज़रुरत से कम कैलोरी ग्रहण कर रहे हैं। यह अन्तर गरीबों मे सबसे ज्यादा है। हाँलाकि अन्य खाद्‌य पदार्थ जैसे कि फल, सब्जी, मांस, अंड़ों की तरफ लोगों का नया चलन है फिर भी कैलोरी की अपूर्णता अभी भी चरम सीमा पर है। PDS व्यवस्था वहीं पर कारगर नहीं हो पा रही है जहाँ उसे सवसे ज्यादा होना चाहिए। इस गंभीर स्थिति का पता पोषण सर्वेक्षणों द्‌वारा किये गये सर्वेक्षण से चलता है जो यह दिखाता है कि बच्चों और वयस्कों में एक लंबे समय से 'कम वज़न' की समस्या चली आ रही है। बहुत समय से 35% से 45% तक लोग उनकी आवश्यकता से कम भोजन कर रहे हैं। आबादी का एक बहुत बड़ा भाग कुपोषित (अथवा भूखा) है यहाँ तक कि, जब देश में पर्याप्त खाद्‌यान्न है। यह स्वीकार्य नहीं है। उपर्युक्त दिशा निर्देश के आधार पर खाद्‌य सुरक्षा के मुद्‌दे पर सावधानी से सोचने की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द

उत्पादन	उपलब्धता	सुलभ	पोषकाहार
बफर स्टॉक	भूख	जन वितरण व्यवस्था (पी.डी.एस)	

अपनी सीखने की क्षमता सुधारें

1. मान लीजिए किसी एक वर्ष में खाद्‌यान्न का उत्पादन किसी प्राकृतिक आपदा से प्रभावित होता है। किन तरीकों द्‌वारा उस वर्ष में सरकार खाद्‌यान्न की उपलब्धता को सुनिश्चित कर सकती है? (AS_4)
2. आपके संदर्भ में खाद्‌यान्न की सुलभता और कम वजन के बीच के संबंध का वर्णन एक काल्पनिक उदाहरण द्‌वारा कीजिए। (AS_4)
3. आपके परिवार के आहार की आदत को साप्ताहिक रुप से विश्लेषित कीजिए। उसमें शामिल पोषक तत्वों की एक तालिका बनाइए। (AS_3)
4. खाद्‌यान्न की उत्पादन में वृद्‌धि और खाद्‌यान्न की सुरक्षा के बीच संबंधों का वर्णन कीजिए। (AS_1)
5. निम्नांकित वक्तव्य के लिए तर्क दीजिए। ''जन वितरण प्रणाली बेहतर तरीके से लोगों की खाद्‌य सुरक्षा को सुनिश्चित कर सकती हैं।'' (AS_1)
6. खाद्‌य सुरक्षा से संबंधित इसी तरह का पोस्टर तैयार कीजिए। (AS_6)

SCERT TELANGANA

7. पृष्ठ संख्या 137 के अनुच्छेद में ''अध्ययन .... उपलब्ध है। तक अध्ययन कर अपना अभिप्राय व्यक्त कीजिए। (AS_2)

8. भारत के मानचित्र में निम्न स्थानों की पहचान कीजिए। (AS_5)

1) कर्नाटक 2) ओडीशा 3) गुजरात 4) महाराष्ट्र 5) मध्यप्रदेश
6) पश्चिम बंगाल 7) छत्तीसगढ़ 8) तेलंगाणा 9) उत्तर प्रदेश 10) पंजाब

परियोजना कार्य

1. निम्नलिखित कविता 'आई' पढ़िए। क्या आप खाद्य सुरक्षा से संबंधित कोई कविता लिख सकते हैं।

आई (माँ) *[Aai* (Mother)]

मैंने आपको देखा है
आँसुओं की लहरों में बहते हुए
अपने पेट की क्षुधा को अनदेखा करने की कोशिश करते हुए
सूखे खण्ठ और होंठों से पीड़ित हो
झील पर बाँध बनाते हुए ....

मैंने आपको देखा है
चूल्हे के सामने बैठे हुए
अपनी हड्डियों को जलाते हुए
मोटी रोटियाँ और कुछ थोड़ा-सा बनाते हुए
सभी को भरपेट खिलाने के बाद,
स्वयं आधा पेट खाते हुए
ताकि सुबह के लिए कुछ शेष बच जाये......
मैंने आपको देखा है
कपड़े धोते हुए और बर्तन साफ़ करते हुए
भिन्न-भिन्न घरों में,
दिये जाने वाले बचे भोजन को ठुकराते हुए
गर्व के साथ........

2. आप के परिवार में, अड़ोस-पड़ोस के परिवार में महीन अनाज के उपयोग के संदर्भ में समाचार प्राप्त कीजिए और इसका विश्लेषण कीजिए।

क्रम संख्या	परिवार के मुखिया का नाम	खाया जाने वाला आहार			उपयोग किया गया अनाज	अनाज की बढ़ोत्तरी या घटाव के कारण
		सबेरे	मध्याह्न	रात		

SCERT TELANGANA

अध्याय 11

साम्यता के साथ दीर्घकालिक विकास
(Sustainable Development with Equity)

विकास की ओर पुनः दृष्टि... (Looking at development again...)

विकास के मापनों में, मानव विकास सूचकांक (HDI), प्रति व्यक्ति आय, सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के ऊपर एक वद्धि का सूचक है। (अध्याय - 2 देखिए) क्योंकि GDP देश में उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य को इंगित करता है, इसीलिए प्रगति का विचार वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन तक कदाचित ही सीमित रह सकेगा। यह तब अधिक होता है जब उत्पादन और आमदनी का तीव्र विस्तार, देश के बहुत बड़े भाग की जनसंख्या के कुपोषण, शिक्षा और स्वास्थ्य की कमी के साथ जुड़ता है। भारत की यही स्थिति है। स्वास्थ्य और शिक्षा के सामाजिक सूचकों को मिलाकर HDI विकास के अर्थ को विस्तृत बनाता है।

यहाँ यह ध्यान देना होगा कि विकास के इस विस्तृत पैमाने को भी अधिकृत नहीं किया गया। भारत में, 90% से अधिक श्रमबल असंगठित क्षेत्रों मे हैं, जहाँ काम की परिस्थितियों को कोई बढ़ावा नहीं मिलता है। साधारणतः असंगठित क्षेत्रों में काम करने वाले स्व-रोजगारियों और वेतन भोगी श्रमिकों की आय बहुत कम होती है, इनकी स्थिति भी दयनीय होती है। (अध्याय - 3 देखिए) अल्प-भुगतान वाले रोजगार में श्रमबल का उच्च प्रतिशत होने से GDP में वृद्धि तो होती ही है साथ ही साथ वस्तुओं और सेवाओं की विभिन्न किस्मों के उत्पादन का लाभ कुछ चयनित समूहों को मिल पाता है। उच्च आय और संपत्ति वाले लोग विश्व में अपनी मनपसंद चीजों को खरीद सकते हैं और उनका उपभोग कर सकते हैं। (अध्याय - 10 देखिए।) जहाँ कुछ लोग उच्चस्तरीय आरामदायक तरीके से जीवनयापन करते हैं, वही बहुत सारे लोग उचित रोजगार और पर्याप्त आमदनी के अभाव में अच्छे जीवनयापन की निम्नतम आवश्यकताओं से भी वंचित रह जाते हैं। लोगों में आमदनी और अवसरों की इतनी गहरी असमानताएँ कभी - कभी एक अच्छे समाज का आधार नहीं बन सकती है।

- आरेख और चित्र के आधार पर भारत में असमानता पर एक लेख लिखिए।

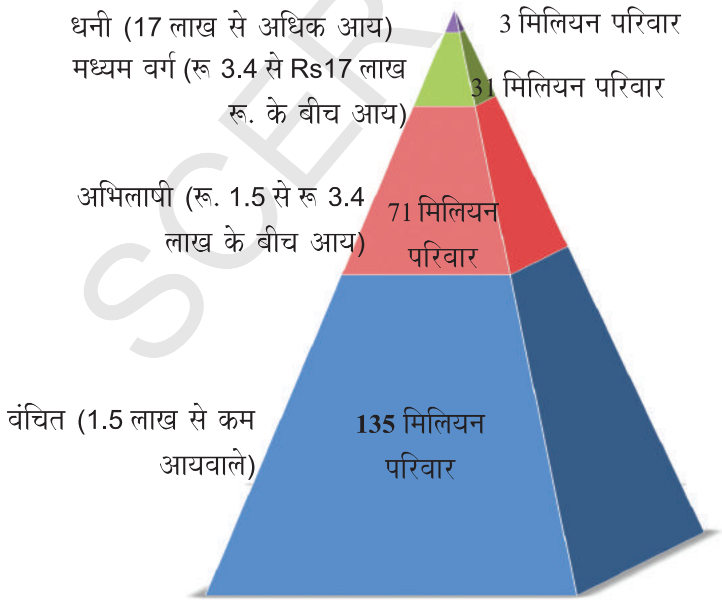

आरेख 1 : वार्षिक आय के आधार पर भारत में परिवारिक इकाइयों का वितरण (2010 सर्वेक्षण)

SCERT TELANGANA

आरेख 2 : अरबपतियों की (Billionaires) कुल संपत्ति

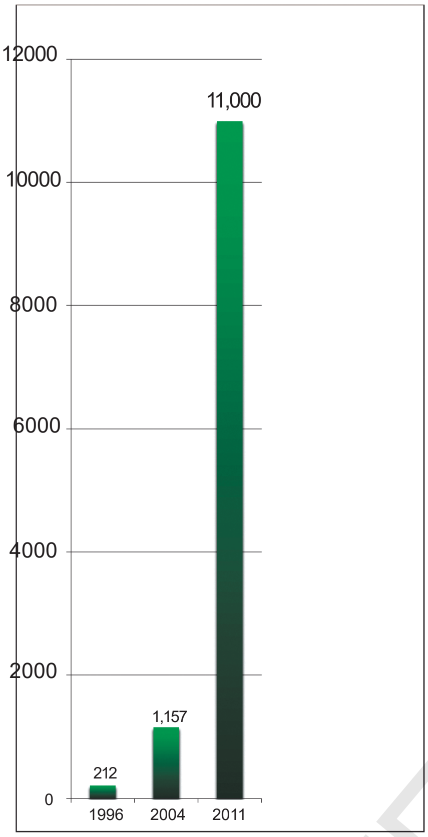

आरेख 3 : अरबपतियों की संख्या में वृद्धि

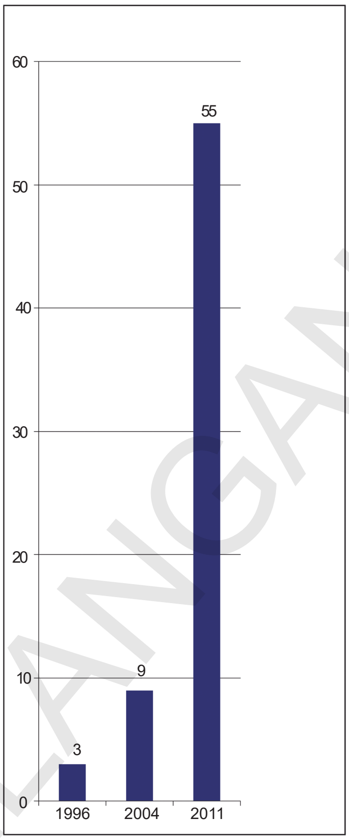

चित्र 11.1: मुंबई की धरवी झुग्गी बस्ती (slum)। यह उन बड़ी कॉलोनियों में से एक है जिनमें भारत के शहरी निर्धन रहते हैं।

चित्र 11.2 : हैदराबाद के एक होटल के रूम से बंजारा हिल्स का दृश्य। वह क्षेत्र जहाँ हैदराबाद के धनी लोग रहते हैं।

SCERT TELANGANA

आर्थिक विकास की एक और प्रमुख आलोचना का केंद्र संकीर्ण उपेक्षित वातावरण पर पर्यावरण की उपेक्षा से उत्पन्न GDP (सकल घरेलू उत्पाद) का विस्फोट था। विभिन्न संदर्भो में, आर्थिक विकास के दौरान हमने देखा कि किस प्रकार पर्यावरणीय संसाधनों का उपयोग किया गया और किस हद तक इनका विध्वंस किया गया। वनों की कटाई, भू-क्षरण, भू-गर्भ जल के स्तर में कमी, प्रदूषण में वृद्धि, चरागाह भूमि पर दबाव, जीवाश्म ईंधन पर बढ़ती निर्भरता, औद्योगिक निष्कासन, कृषि में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का प्रयोग, जलवायु परिवर्तन जैसे कई महत्वपूर्ण और अत्यावश्यक मुद्दे हमारे समक्ष हैं। औद्योगिकरण द्वारा कुछ लोगों के लिए भौतिक सुविधाएँ उपलब्ध करवाये जाने से विश्व में प्राकृतिक संसाधनों को खतरा तो पहुँचा ही है, जलवायु भी विघटित हुई है। इस प्रकार की वृद्धि को ज़ारी नहीं रखा जा सकता है।

इस अध्याय में हम विकास, पर्यावरण और लोगों के बीच संबंधों की खोज करेंगे। आर्थिक क्रियाकलापों के विस्तार ने किस प्रकार पर्यावरण के विभिन्न पहलूओं को प्रभावित किया है? प्राकृतिक संसाधनों और अपने जीवन तक लोगों की पहुँच और अधिकार के संबंध में विकास का क्या अर्थ है? विकास के विभिन्न प्रकार क्या हैं? हम इन प्रश्नों के उत्तर सजीव मुद्दों और लोगों के सजीव अनुभवों से प्राप्त करेंगे। हमने पाया कि विकास का लक्ष्य जो सभी लोगों (वर्तमान और भविष्य की पीढियों) को भौतिक सुविधाएँ और सेवाएँ तथा सजीव और निर्जीव संसाधनों से पूर्ण पर्यावरण देना चाहता है, उसे और अधिक विस्तृत किया जाय।

पर्यावरण और विकास

विकास में पर्यावरण की भूमिका के पुनः स्मरण से हम आरंभ करते हैं। प्राकृतिक रूप से उत्पन्न कई घटक जैसेः- भूमि, जल, खनिज, अयस्क, वृक्षों और जंतुओं से प्राप्त उत्पाद, उत्पादन प्रक्रिया के केन्द्रीय बिंदु हैं। प्राथमिक क्षेत्र गतिविधियों में (कृषि, खनन, उत्खनन, (Quarrying), तथा निर्माण तथा ऊर्जा क्षेत्र में उत्पादन बड़े तौर पर प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर करता है। अर्थ-व्यवस्था के अन्य क्षेत्र भी विभिन्न स्तरों पर प्राकृतिक संसाधनों पर ही निर्भर होते हैं। इन संसाधनों को उपलब्ध करवाने की पर्यावरण की क्षमता को -''पर्यावरणीय स्त्रोत कार्य'' (Environment's Source Function) कहा जाता है। ये कार्य उस समय जर्जर हो जाते हैं जब संसाधनों का उपभोग हो जाता है या प्रदूषण संसाधनों को संक्रमित कर देता है।

कक्षा - IX के भारतीय कृषि और उद्योग के अध्यायों का पुनर्गमन कीजिए।

- इन दो संदर्भों में उन्होंने विषमताओं और वितरण तथा संसाधनों तक पहुँच पर किस प्रकार चर्चा की है?
- प्रमाणित कीजिए कि किस प्रकार विकास के विचारों ने पर्यावरण की समस्याओं से संघर्ष किया?
- ''हरित क्रांति'' के विस्तार ने किस प्रकार पर्यावरणीय समस्याओं को उत्पन्न किया? भविष्य के लिए इससे क्या सीख मिलती है?

विभिन्न क्रियाकलापों द्वारा अवशोषण कर, नुकसान न पहुँचाने वाले अपशिष्टों (Waste) और प्रदूषण को उपलब्ध कराना पर्यावरण का एक अन्य प्रमुख कार्य है। उत्पादन और उपभोग

SCERT TELANGANA

के अवांछित उत्पादों (by-products), ज्वलन से निष्कासित गैसें, उत्पादों की सफाई के लिए उपयोगी जल, पैकिंग की अलग की गई सामग्री और निरूपयोगी वस्तुएँ आदि पर्यावरण के द्वारा अवशोषित की जाती है। यह भी स्त्रोत कार्य के समान महत्वपूर्ण है। अवशोषित करने तथा अहानिकारक अपशिष्टों और प्रदूषणों को उत्पन्न करने की पर्यावरण क्षमता को ''सिंक कार्य'' (Sink function) कहा जा सकता है। जब अपशिष्ट निर्गत सिंक कार्यो की सीमा को बढ़ाते हैं तो पर्यावरण को दीर्घकालीन हानि पहुँचती हैं।

आर्थिक विकास के पिछले पचास वर्षों में, पर्यावरण के इन दोनों कार्यों को अत्यधिक उपयोग में लाया गया। इससे पर्यावरण को चलाने की क्षमता प्रभावित होती है अर्थात भविष्य में आर्थिक उत्पादन और उपभोग में सहायता करने की पर्यावरणीय क्षमता चलिए, कुछ उदाहरणों को हम देखते हैं -

Fig 11.3 : 1957 में राष्ट्र संघ (UN) द्वारा राजस्थान की कृषि और सिंचाई का चित्र

उदाहरण - 1 : पारंपरिक पद्धति के अनुसार जल की आपूर्ति पूरक सिंचाई या लघु क्षेत्रों तक ही सीमित थी। उदाहरण के तौर पर 'मोटा बावी ' (Mota baavi) से 2-3 एकड़ भूमि की ही सिंचाई होती थी। कृषि वर्षा ऋतु पर ही सीमित थी और बहुत बड़े क्षेत्र वर्षा पर आधारित शुष्क क्षेत्र के रूप में थे। समय के बदलाव के साथ पेट्रोल, डीज़ल और बिजली से चलने वाले पंपसेटों का प्रयोग शुरू हुआ जो उर्जा के नये संसाधनों में से एक थे। इसका प्रभाव दो स्थितियों में हुआ। एक तो उन्हें कठोर श्रम से शांति मिली दूसरा पंपों द्वारा जल की निकासी बहुत आसान हो गयी। जल भी बहुतायात में था। खुले कुँओं में जल 10 से 15 फीट की गहराई पर होता था, कभी - कभी यह सर्वाधिक 100 फीट की गहराई तक भी होता था। बिजली और मोटर पंपों से जब भू-गर्भ जल की निकासी होने लगी तो जल स्तर में भी गिरावट आयी। जल-स्तर में इतनी गिरावट आयी कि कुछ क्षेत्रों में जल कई सौ फीट गहराई तक चला गया। कुछ भी हो यदि जल को ऊपर खींचना हैं तो पानी को नीचे जाना ही पड़ेगा। इसी को पुनर्भरण (Recharge) कहते है। भूमि के नीचे जल का मार्ग मिट्टी और पत्थरों के माध्यम से बनता है। जो जल पुनः पूरित होता है, उससे अधिक जल ऊपर खींच दिया जाता हैं। इस क्रिया का परिणाम यह होगा कि कुछ समय के बाद भू-गर्भ जल बचेगा ही नहीं।

भारत में भू-गर्भ जल की स्थिति पर वर्तमान आँकड़े हमें सुझाते हैं कि - देश के अनेक भागों मे इसके उपयोग की अधिकता से इसके लिए गंभीर खतरा उत्पन्न हो सकता है। पुनर्भरण से जितना जल बनता है उससे कहीं अधिक भू-गर्भ जल का प्रयोग हमारे देश के लगभग एक तिहाई लोग कर रहे हैं। लगभग 300 जिलों ने अपनी रिपोर्टो में कहा है कि पिछले 20 वर्षों में जल-स्तर में 4 मीटर तक की कमी आई हैं। यह स्थिति खतरे का संकेत है। भू-गर्भ के उपयोग की अधिकता विशेष रूप से पंजाब और पश्चिमी उत्तर प्रदेश, के कृषि समृद्ध क्षेत्रों, केंद्रीय और दक्षिणी भारत के कठोर चट्टानी पठारी क्षेत्रों, कुछ तटीय क्षेत्रों और तीव्र रूप से विकसित होने वाली शहरी क्षेत्रों में दृष्टिगोचर होती हैं।

- आपके विचार में पानी खींचने की आधुनिक पद्धति क्यों अस्थायी सिद्ध हुई है?

गर्भ जल के उपयोग की अधिकता से, भू-जल का संग्रह कम हो जायेगा और बहुत ही तीव्रता से इसके स्तर में कमी होती जायेगी ।

मात्रा के साथ-साथ भू-जल की गुणवत्ता में भी गिरावट आ रही हैं। भारत के 59% जिलों में, कुँओं और हैंडपंपों से निकाले जाने वाला जल पीने के लिए सुरक्षित नहीं है। इसका प्रमुख कारण यह है कि भू-जल कृषि और उद्योगों से निकलने वाले रासायनिक औद्योगिक अपशिष्टों से संक्रमित हो रहा हैं। जल का उपयोग सभी प्रकार के अपशिष्टों (Waste) और ज़हरीले घटकों को फेंकने के सिंक (नाली) के रूप में हो रहा हैं। इसको रोकना इतना आसान नहीं है। हम अगले उदाहरण में इसके परिणाम देखेंगे।

इस प्रकार के विकास का सीधा संबंध दीर्घकालीन विकास के उद्देश्यों से होता है। भविष्य में आने वाली पीढ़ियों की अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की योग्यता से समझौता किये बिना वर्तमान की आवश्यकताओं की पूर्ति करने से संबंधित विकास को ही दीर्घकालिक विकास कहा जाता हैं। दूसरे शब्दों में, इसे वर्तमान की और आने वाली पीढ़ियों के लिए (सभी के लिए) एक उचित गुणवत्ता पूर्ण जीवनयापन की सुविधा कहा जा सकता हैं।

इन संसाधनों के विस्तृत उपयोग का परिणाम यह होगा कि आने वाली पीढ़ियों को या तो ये सुलभ ही नही हो सकेंगे। पर्यावरण को प्रभावित करने वाले संदर्भ में देखा जाय तो इससे गंभीर नुकसान होंगे और पर्यावरण की निर्वहण क्षमता पर असर पड़ेगा।

उदाहरण 2 :

कीटनाशक आधुनिक कृषि का एक महत्वपूर्ण घटक है। कीटों से फसल की सुरक्षा करने के लिए ताकि अच्छी फसल प्राप्त हो सके, इसका प्रयोग किया जाता है। पर्यावरणियों को बहुत पहले से ही पता था कि कीटनाशकों का पर्यावरण पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। एक सीमा के पश्चात्त पर्यावरण साधारणतः ज़हरीले घटकों को अवशोषित करने में असमर्थ होता हैं।

वर्ष 1962 में रैचैल कार्सन ने अपनी पुस्तक 'साइलेंट स्प्रिंग' में, मनुष्यों और पक्षियों पर मच्छरों के नियंत्रण के लिए किये जाने वाले डी.डी.टी. (DDT) के छिड़काव के प्रभावों के बारे में लिखा हैं। कीटनाशकों के डाले जाने वाले घटक जैसे भारी धातुएँ पर्यावरण से अदृश्य नहीं होती हैं बल्कि ये सजीव जीवाणुओं में जमा हो जाती हैं। इस प्रकार डी.डी.टी.(DDT) का ज़हर उन झीलों में रहने वाली मछलियों के शरीर में पहुँच जाता है, जिसके जल में डी.डी.टी. होता हैं। ज़हर की छोटी सी मात्रा से मछलियाँ मर जाती हैं किंतु जब कई मछलियाँ को एक पक्षी खाता है तो मछलियों के भीतर की मिलीजुली रसायन की मात्रा उस पक्षी को नुकसान पहुँचाने के लिए पर्याप्त होती हैं। रैचेल की खोजों का यह स्पष्ट उदाहरण है कि - किस प्रकार मनुष्य की क्रियाओं का विपरीत प्रभाव स्वयं मनुष्य और प्रकृति पर हुआ है।

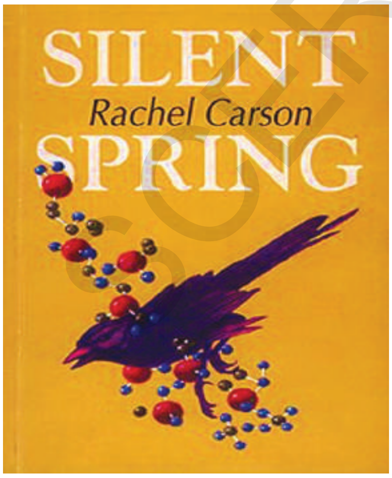

भारत में, कीटनाशकों का कुप्रभाव, एंडोसल्फेन (Endosulfan) कीटनाशक में देखा गया हैं। 1976 ई.में काजू की फसल को कीड़ों से बचाने के लिए सरकार ने 15,000 एकड़ भूमि पर, हैलीकॉप्टर द्वारा एंडोसल्फेन कीटनाशक का छिड़काव किया। यह

कार्य केरल के उत्तरी भाग के कसरगोढ़ (Kasargod) में किया गया। इस उपचार कार्य के 25 वर्षों तक जारी रहने के कारण वायु, जल और संपूर्ण पर्यावरण कीटनाशक से बुरी तरह प्रभावित हुआ। इसके परिणामस्वरूप स्थानीय लोगों में, मुख्य रूप से कृषि श्रमिकों में, गंभीर स्वास्थ्य समस्याएँ उत्पन्न हुई। लगभग 5,000 लोगों की मृत्यु हो गयी और अनगिनत लोग मृत्यु से भी अधिक भयानक रोगों जैसे कैंसर और विकलांगता से ग्रस्त हो गये।

कुछ वर्षों से, न्यायालय के आदेश द्वारा इसके छिड़काव पर प्रतिबंध लगा दिया गया हैं। फलस्वरूप रोग में कमी हुई और स्वस्थ लोगों की संख्या में वृद्धि हुई।

यह उस क्षेत्र से संबंधित एक अकेली घटना नहीं हैं। कीटनाशकों के अधिकतम उपयोग तथा आधुनिक कृषि और पर्यावरण तथा लोगों पर इसके द्वारा पड़ने वाले प्रभावों से संबंधित अनेक अध्ययन हुए। वास्तव में केवल एक प्रतिशत कीटनाशक का उपयोग कीडों को मारने के लिए होता है। शेष कीटनाशक भोजन, जल और पर्यावरण द्वारा हमारी शारीरिक व्यवस्था मे समा जाता है।

- पर्यावरण को 'प्राकृतिक पूँजी ' भी कहा जाता है। अध्याय 8 के आधार पर पूँजी की परिभाषा का पुनः स्मरण कीजिए। पर्यावरण को प्राकृतिक पूँजी क्यों कहा जाता होगा? अपने विचार बताइए।
- जल को आम संपत्ति क्यों मानना चाहिए?
- एंडोसल्फेन के उपयोग को रोकने के लिए न्यायालय तक जाना क्यों आवश्यक समझा गया?
- न्यायालय ने इस तर्क के आधार पर कि एंडोसल्फेन से जीवन के अधिकार (संविधान के, अनुच्छेद 21) का उल्लंघन हो रहा हैं, इसके उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया। वर्णन कीजिए कि किस प्रकार एंडोसल्फेन ने लोगों के जीवन के अधिकार का उल्लंघन किया है?

पर्यावरण पर लोगों के अधिकार (People's Rights Over Environment)

आज, ऐसे अनगिनत मुद्दे हैं जहाँ आधुनिक विकास ने बड़े पैमाने पर पर्यावरणीय समस्याओं को उत्पन्न करने का प्रयास किया हैं। बड़े बाँधों (Big dam) का मुद्दा, तकलीफदेह परिणामों में से एक हैं।

नर्मदा घाटी विकास परियोजना भारत की एकल सबसे बड़ी नदी विकास परियोजनाओं में से एक है। यह विश्व की सबसे बड़ी जलविद्युतीय परियोजनाओं में से एक है, जिसका उपयोग बिजली उत्पादन, सिंचाई की सुविधा और बाढ़ के नियंत्रण के लिए किया जायेगा। ऐसी परियोजनाओं की पर्यावरणीय लागत, जिसमें 3,000 छोटे-बड़े बाँधों के निर्माण भी मिले होते हैं, बहुत अपरिमित होती है। सबसे बड़ा बाँध सरदार सरोवर बाँध हैं। इस बाँध को बनाने का लिए 37,000 हेक्टर क्षेत्र के वनों और कृषि योग्य भूमि की सफाई की गई, आधा मिलियन से अधिक लोगों को विस्थापित किया गया और भारत की अति ऊपजाऊ भूमि को नष्ट किया गया। इस परियोजना ने हज़ारों एकड़ भूमि पर व्याप्त वनों और कृषि योग्य भूमि को नष्ट कर मानव-जीवन और जैव विविधता (Bio diversity) को हानि पहुँचायी। विस्थापित लोगों में एक बहुत बड़ा अनुपात आदिवासियों और दलितों का था।

निम्नलिखित पत्र 1994 में झबुआ जिले के, जलसिंधी गाँव के बावा महालया द्वारा मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री को लिखा गया था। इसे भीलाला में दर्ज (Recorded) किया गया और इसका अनुवाद हिंदी में किया गया। नीचे इसका कुछ भाग पुनः लिखित किया गया है। यह विकास के उपायों या विचारों पर प्रश्न उठाता हैं।

प्रिय दिग्विजय सिंह जी,

हम, जलसिंधी गाँव के लोग...जिला झबुआ, यह पत्र मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री को लिख रहे हैं। हम नदी के किनारे रहने वाले लोग हैं हम महान नर्मदा के तट पर निवास करते हैं। इस वर्ष (1994) में हमारा गाँव जलसिंधी, मध्यप्रदेश का पहला गाँव है जिसे सरदार सरोवर बाँध बनाकर जलमग्न कर दिया गया। हमारे साथ चार और पाँच अन्य गाँव जैसे- सकरजा, काकरसिला, अकादिया और अन्य भी डूब जायेंगे...... जब हमारे गाँव में पानी आ जायेगा, जब हमारे घर और खेत बाढ़ ग्रस्त हो जायेंगे, हम भी डूब जायेंगे - यह निश्चित है।

हम यह पत्र इसीलिए लिख रहे हैं क्योंकि हम आपको यह बताना चाहते हैं कि जलसिंधी के आदिवासी (जनजाति) किसानों ने, जो इस जलमग्नावस्था के अंतर्गत आते हैं, स्वयं डूबने के लिए क्यों तैयार हो गये हैं?

आप और वे सभी जो शहरों में रहते हैं, सोचते हैं कि - हम जैसे लोग जो पहाड़ों में रहते हैं, बंदर(ape) के समान निर्धन और पिछड़े हैं। ''गुजरात के मैदानों में जाइए, आपकी स्थिति में सुधार होगा, आप विकसित होंगे'' - आपने हमें यही सलाह दी थी। हम आठ वर्षों से लड़ रहे हैं - हमने लाठियों की मार सही, कई बार जेल गये, अंजनवारा गाँव में पुलिस आयी और हम पर गोलियाँ चलायी गई और हमारे घर बरबाद कर दिये गये..... यदि यह सच है कि गुजरात में हमारी स्थिति में सुधार आयेगा तो हम सब वहाँ जाने के लिए तैयार क्यों नहीं हैं?

आप जैसे अधिकारियों को और शहर के लोगों को हमारी भूमि पहाड़ी और असत्कारशील (in hospitable) दिखायी देती है, किंतु हम हमारी भूमि और वनों के साथ नर्मदा के किनारे के क्षेत्रों में रहने से संतुष्ट हैं। कई पीढ़ियों से हम यहाँ रह रहे हैं। इस भूमि पर हमारे पूर्वजों ने वनों की सफाई की, भगवान की पूजा की, मिट्टी में सुधार किये, पशुओं का पालन पोषण किया और गाँव बसाये। जिस भूमि को हम जोतते थे वह बहुत बड़ी है। आप समझते हैं कि हम गरीब है। हम गरीब नहीं है। हमने हमारे अपने घरों का निर्माण किया है जिसमें हम रहते हैं। हम किसान हैं। हमारी कृषि यहाँ समृद्ध होती है। हम भूमि को जोतकर कमाते हैं। केवल थोड़ी सी वर्षा होने पर भी हम जो उगाते हैं, उसी पर जीवित रहते हैं। माँ मकई(Mother corn) हमारा पेट भरती हैं। हमारे पास जोती हुई कुछ भूमि गाँव में है और कुछ वन क्षेत्र में है। इस भूमि पर हम बाजरा, जवार, मकई, बोदी, बाटे, सौन्वी, कादरी, चना, मोठ, उडद, तिल और मूँगफली उगाते हैं। हम विभिन्न प्रकार की फसलें उगाते हैं। खाने के आधार पर हम इसमें परिवर्तन करते रहते हैं।

गुजरात में क्या उगता है? गेहूँ, जवार, तुवर और कुछ कपास। खाने के लिए कम, बेचने के लिए अधिक। हम खाने के लिए खेती करते हैं, हम कपड़े आदि प्राप्त करने के लिए इसे बेचते हैं। बाजार में मूल्य चाहे अधिक हो या कम, हमें खाने के लिए भोजन मिलता है।

हम स्वयं अपनी मेहनत से अलग-अलग प्रकार के खाद्यान्न उगाते हैं। हमें धन नहीं चाहिए। हम हमारे स्वयं के बीजों का उपयोग करते हैं -

हमारे स्वयं के पशु धन से प्राप्त खाद का प्रयोग करते हैं, जिससे हमें अच्छी फसल प्राप्त होती है। हम इतना सारा धन कहाँ से लायेंगे? वहाँ हमें कौन पहचानेगा? कौन महाजन हमें धन देगा? यदि फसल अच्छी नहीं होगी और हमारे पास धन नहीं होगा तो हमें हमारी भूमि को गिरवी रखना पड़ेगा।

यहाॅ पर हम नालों में मार्ग बनाकर हमारे खेतों तक पानी पहुँचाते हैं.....यदि हमारे पास बिजली होती तो हम भी नर्मदा के पानी को आसानी से निकाल सकते थे जिससे हमें अच्छी शीत फसल (Winter crop) की प्राप्ति हो सकती थी। किंतु स्वतंत्रता प्राप्ति के पैंतालीस वर्षों के बीत जाने पर भी नदी के किनारे बसे गाॅवों में न तो बिजली है न ही नदी के द्वारा सिंचाई की सुविधा है।

[....हमारे पास बहता हुआ जल है तथा वनों में बहुत चारा है। हम जीवन यापन के लिए कृषि की अपेक्षा पशुधन पर अधिक निर्भर है। हम मुर्गियाँ, बकरियाँ, गाय तथा भैंस पालते हैं। किसी के पास 2-4 तक तो किसी के पास 8-10 तक भैंसे होती हैं। लगभग सभी के पास दस-बीस-चालीस बकरियाँ....होती हैं। गुजरात से लोग अपने पशुओं को चराने के लिए हमारी पहाड़ियों में आते हैं। हमारे पास चारा और जल की प्रचुरता है।

....वन हमारे धनदाता और महाजन है। जब हमें कोई कठिनाई होती हैं तो हम वन में जाते हैं। हम हमारे घर वनों से प्राप्त सागौन (Teak) और बांस (Bamboo) की लकड़ियों से बनाते हैं। निंगोडी और हियाली (बाँस के प्रकार) की खपटियों (Splints) से हम परदे बनाते हैं। वनों से प्राप्त सामग्री से ही हम टोकरियाँ, चारपाइयाँ, हल, फावड़ा (hoes)....आदि बनाते हैं। वनों से प्राप्त हेगवा, महिया, आमली, गोइंडी, भंजन जैसी पत्तियों को हम खाते हैं। जब कभी अकाल पड़ता है तो हम जड़ और कंद खाकर जीवित रहते हैं। जब कभी हम बीमार होते हैं तो हमारे वैध्य हमें वनों के पत्ते, जड़ और छाल खिलाकर हमें स्वस्थ करते हैं.... हमें हर एक वृक्ष, झाड़ी और जड़ी-बूटी का नाम मालूम है। हम इनके उपयोग भी जानते हैं। यदि हम वनों से विहीन भूमि पर रहेंगे तो यह ज्ञान जो हमने पीढ़ियों से प्राप्त किया है वह निरुपयोगी हो जायेगा और हम इसे भूल जायेंगे।

....हम हमारे भगवान की पूजा-नदी का गाना- गयाना(gayana) के गायन से करते हैं। हम गयाना को नवल और दिवस पर्वो पर गाते हैं। गयाना में....संसार कैसे बना, मनुष्य का जन्म कैसे हुआ, महान नदी का आगमन कहाँ से हुआ, आदि का वर्णन होता है...... हम प्रायः मछली खाते हैं। जब अनपेक्षित मेहमान आते हैं तो मछली हमेशा हमारा साथ देती हैं। नदी अपने साथ कीचड़ बहाकर लाती है जो किनारे पर जमा हो जाता हैं.....हमारे बच्चे नदी के किनारे पर खेलते हैं, तैरते हैं और नहाते हैं। हमारे पशु पूरे वर्ष इसी नदी का पानी पीते हैं क्योंकि यह महानदी कभी सूखती नहीं है। इस नदी की कोख में हम संतुष्ट जीवनयापन कर रहे हैं। कई पीढ़ियों से हम यहाँ रह रहे हैं। हमें हमारी महान नर्मदा और हमारे वनों पर अधिकार है या नहीं? क्या आप जैसे सरकारी लोग इस अधिकार को पहचानते हैं या नहीं?

आप जैसे शहरी लोग अलग-अलग घरों में रहते हैं। आप एक-दूसरे की खुशियों और उदासियों को अनदेखा करते हैं। हम हमारी जाति संबंधियों और वंश के साथ रहते हैं। हम एक ही दिन में घर का निर्माण करते हैं, खेत साफ करते हैं और कोई भी छोटा या बड़ा कार्य क्यों न हो, उसे

मिलजुल कर पूरा करते हैं। गुजरात में हमारा हाथ बँटाने कौन आयेगा? कौन हमारे काम में सहायता करेगा? क्या बड़े किसान हमारा खेत साफ करेंगे या हमारे घरों का निर्माण करेंगे?

यहाँ हमारे गाँव में, हमारे ग्रामवासियों द्वारा, इतनी सहायता क्यों मिलती है? इसीलिए क्योंकि यहाँ हम सब समान है, हम एक दूसरे को समझते हैं। केवल कुछ ही किरायेदार हैं बाकी सभी की अपनी भूमि हैं। किसी की बहुत अधिक भूमि नहीं है, सभी के पास थाड़ी-थोड़ी भूमि है। जब हम गुजरात जायेंगे तो बड़े भू-मालिक हमें कुचल देंगे। चालीस-पचास वर्ष पूर्व, उन्होंने आदिवासियों से उन जमीनों को ले लिया था, जिस पर वे रह रहे थे। अभी भी वे यही कर रहे हैं। और हम अजनबी- एक भाषा और रिवाज़ नहीं जानते हैं, यह उनका शासन है। यदि हम उस प्रकार की कृषि नहीं कर पायेंगे, जिसमें अधिक धन की आवश्यकता होती है तो हमें हमारी भूमि उनके पास गिरवी रखनी होगी, जिस पर धीरे-धीरे वे अपना आधिपत्य जमा लेंगे। यदि वे वहाँ पर रहने वाले आदिवासियों की भूमि हथिया सकते हैं तो हमारी भूमि क्यों नहीं लेंगे? तब हमें दूसरी भूमि कौन देगा? यह हमारे पूर्वजों की भूमि है। हमारा इस पर अधिकार है। यदि हम इसे खो देंगे तो हमें केवल फावड़े और कुल्हाडियाँ मिलेंगी, और कुछ नहीं.....

हमारे गाँव के सभी देवता यहीं हैं। हमारे पूर्वजों के स्मारक भी यहीं पर हैं। हम कालो रानो, राजा पैंटो और इंदी राजा की पूजा करते हैं। हम आई खादा और खेदू बाई की भी पूजा करते हैं। रानी काजोल हमारी महादेवी है। रानी काजोल, कुंबाई और कुंइ रानो के पहाड़ मथवाड़(Mathvad) में हैं। यदि हम उन्हें छोड़ देंगे तो हमें नये भगवान कहाँ से मिलेंगे? इंदल, दिवस और दिवाली जैसे हमारे त्यौहारों को मनाने के लिए लोग सभी जगह से यहाँ आते हैं। भंगोरिया के लिए हम सब बाज़ार जाते हैं जहाँ हमारे युवक-युवतियाँ जीवन साथी का चयन करते हैं। गुजरात में हमारे साथ कौन आयेगा?

गुजरात की भूमि हमें मंजूर नहीं है। आपका मुआवजा हमें स्वीकार नहीं हैं। हमने नर्मदा की कोख से जन्म लिया है। हम उसकी गोद में मरने से डरेंगे नहीं।

हम डूब जायेंगे लेकिन हटेंगे नहीं बावा महालिया

- विकास के विचार नामक अध्याय में हमने पढ़ा कि यदि किसी की प्रगति का अर्थ एक व्यक्ति के लिए विकास है तो अन्य व्यक्ति के लिए वह विकास नहीं हो सकता। बावा महालया के पत्र के आधार पर इस कथन की व्याख्या कीजिए।
- यदि जनजाति लोगों को भिन्न राज्यों में, उनकी भोजन की आदतों कृषि. वित्त, वनों से संबंध, धार्मिक रिवाज़, घरों का निर्माण, सामाजिक संबंधों जैसे पहलूओं के आधार पर फिर से बसा दिया जायेगा तो उनके इस जीवन में पहले के जीवनयापन की तुलना में कैसे परिवर्तन आयेंगे? इन परिवर्तनों को एक तालिका के रूप में दर्शाइए।
- पत्र में जैव-विविधता की हानि को किस प्रकार अभिव्यक्त किया गया है?
- जनजाति लोगों के लिए आजीविका, सांस्कृतिक प्रथाओं और सामाजिक संबंधों का गहरा संबंध स्थानीय पर्यावरण से है? इस कथन की व्याख्या कीजिए।
- क्या अपने वर्तमान स्थान पर जलसिंधी गाँव के लोगों को खाद्यान्न की सुरक्षा थी? अपने विचार बताइए।
- यदि आप उपर्युक्त स्थिति से गुजरेंगे तो आप पुनर्वास (Re-settlement) की माँग के प्रति कैसी प्रतिक्रिया करेंगे?

सरदार सरोवर बाँध जैसी विकास परियोजनाओं ने असंख्य लोगों के जीवन और आजीविका को बाधित किया था। यह सच है कि सिंचाई के साधन और ऊर्जा का उत्पादन हो रहा है और दोनों ही आधुनिक विकास के केन्द्र हैं। उन दोनों के लिए जिन्हें विस्थापित किया गया है - और उनमें से मिलियन लोगों के लिए - आधुनिक विकास अनुचित और विध्वंसक है। आधुनिक विकास परियोजनाओं के कारण उन्होंने स्थानीय पर्यावरण जैसे महान संसाधन को खो दिया है। यह वह मुद्दा है जिसे बाबा महालया बार-बार उठा रहे थे। स्थानीय पर्यावरण के अभाव में उनके जीवन का कोई मूल्य नहीं रहेगा। आत्म-निर्भरता की स्थिति से निकलकर वे अभाव की स्थिति में पहुँच जायेंगे। अभी वे एक फसल उगा रहे हैं, इस आशा के साथ कि भविष्य में यदि उन्हें सिंचाई की सुविधा मिल जायेंगी तो वे कई फसलें भी उगायेंगे। किन्तु इस विस्थापन के द्वारा उनका जीवन बाह्य शक्तियों पर निर्भर हो जायेगा और वे निर्धनता से घिर जायेंगे।

अधिकांश ग्रामीण समुदायों में, पर्यावरण और लोगों के बीच घनिष्ठ संबंध होता है। पर्यावरण से उन्हें भोजन, लकड़ी, चारे, आर्थिक रूप से अमूल्य वस्तुओं की प्राप्ति होती है। अन्यथा उन्हें इन वस्तुओं को खरीदना पड़ता है। निर्धन लोगों को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति पर्यावरण से होती है इसी लिए विस्थापन होने या पर्यावरण के विध्वंस होने या प्रदूषित होने का सबसे अधिक प्रभाव निर्धन लोगों पर ही पड़ेगा। अधिकांश हानि निर्धन लोगों की ही होगी। पर्यावरण का प्रश्न और इसकी दीर्घकालिकता का घनिष्ठ संबंध साम्यता के मुद्दे से हैं।

इस बात को जानना भी आवश्यक है कि स्थानीय पर्यावरण से विस्थापित करने पर केवल लोगों की ही हानि नहीं होती है बल्कि पर्यावरण भी क्षतिग्रस्त होता है। लोगों के साथ, समृद्ध जैव-विविधता संबंधी पारंपरिक ज्ञान का भी विनाश होता है। ज्ञान के संग्रह और विकास में कई पीढ़ियों का योगदान होता हैं। बावा महालया जैसे लोग पारंपरिक ज्ञान के संग्रहकर्त्ता होते हैं। ''हमें प्रत्येक वृक्ष, झाड़ी और जड़ी का नाम मालूम है, हम इसके उपयोग जानते हैं। यदि हम वनों से विहीन भूमि पर रहेंगे तो यह ज्ञान जो हमने पीढ़ियों से प्राप्त किया हैं वह निरुपयोगी हो जायेगा और हम इसे पूर्ण रूप से भूल जायेंगे।'' आज जबकि पर्यावरण का अस्तित्व अनेक तरीकों से खतरे में है तो हमारे लिए पर्यावरण निर्माण के लिए इन उत्तरदायित्व निभाने वाले समुदायों द्वारा दिये जाने वाले योगदान को समझना आवश्यक हो जाता हैं।

सरदार सरोवर और समान परिणाम वाले अन्य बाँधों के प्रतिरोध ने नर्मदा घाटी में सामाजिक आंदोलन का रूप ले लिया। इसे नर्मदा बचाओ आंदोलन(NBA) कहा जाता है। विस्थापन (Displacement) और इससे घिरे पर्यावरणीय आंदोलन संबंधी मुद्दों के बारे में आप 'सामाजिक आंदोलन' नामक अध्याय में पढ़ेंगे।

चित्र -11.4 पर्यावरण के संबंध में अपने कैप्शन (अनुशीर्षक) लिखिए।

SCERT TELANGANA

चिपको आंदोलन (Chipko Andolan)

एक अन्य महत्वपूर्ण पर्यावरणीय आंदोलन है - चिपको आंदोलन। इसका आरंभ 1970 ई.के शुरूआत में उत्तराखंड के गढ़वाल हिमालय में हुआ था। नर्मदा घाटी के जनजाति लोगों के समान ही, वन पहाड़ी और पर्वतीय क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के जीवनयापन का प्रमुख संसाधन है। मिट्टी और जल संसाधनों को सुरक्षित रखने की उनकी भूमिका के कारण उन्हें भोजन, ईंधन और चारा इनसे सीधे रूप में प्राप्त होता है। क्योंकि वाणिज्य और उद्योगों के लिए इन वनों को काटा जा रहा है इसीलिए गाँव वासियों ने अहिंसात्मक प्रतिरोधों द्वारा अपनी आजीविका को सुरक्षित रखने की चेष्टा की है। 'चिपको' नाम के आधार पर इस आंदोलन का नामकरण हुआ है जिसका अर्थ है - गले से लगाना या चिपकाना (Embrance) गॉववासी वृक्षों से गले लगते हैं और अपने शरीर को वृक्ष और ठेकेदार की कुल्हाडी के बीच रखकर, उनकी सुरक्षा करते हैं। गाँव की महिलाएँ इस आंदोलन की प्रधान शक्ति हैं। इस आंदोलन ने अनेक लोगों को पर्यावरणीय दीर्घकालिकता के मुद्दे पर ध्यान देने के लिए प्रेरित किया है।

दोनों आंदोलनों में संदर्भानुसार कुछ भिन्नताएँ हैं, फिर भी दोनों ने ही पर्यावरण पर अनिवार्य रूप से स्थानीय समुदायों के अधिकारों की माँग की है। 'चिपको आंदोलन' ने वृक्षों को काटने से रोकने की दिशा में काम किया और अपने परंपरागत वन्य अधिकारों, जिन्हें ठेकेदारों से खतरा था, उन्हें फिर से प्राप्त कर लिया। नर्मदा बचाओ आंदोलन, भूमि, वन और नदी पर लोगों के अधिकारों के लिए किया गया था।

- विकास के विचार नामक अध्याय में आपने कुंदनकुलम न्यूक्लियर पॉवर प्लांट के विरूद्ध किये गये विरोध के बारे में पढ़ा है। आपने यहाँ जो पढ़ा है उसको दृष्टि में रखते हुए विरोध की व्याख्या कीजिए।
- ''पर्यावरणीय सुरक्षा, केवल प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित समुदायों के लिए ही नहीं हमारे लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।'' कुछ उदाहरणों के द्वारा स्पष्ट कीजिए।
- आंध्र प्रदेश के संदर्भ में कक्षा VIII के अध्याय 'खान और खनिज' का पुनर्गमन कीजिए। उद्योगपतियों और खनिज क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के बीच किन मुद्दों पर संघर्ष उत्पन्न होते हैं। बताइए।
- भारतीय अर्थव्यवस्था के उदारीकरण और वैश्वीकरण के कारण घरेलू उपयोग और निर्यात के लिए खनिजों के खनन में तीव्र वृद्धि हो रही हैं। तालिका में दिए गए आँकडों का उपयोग करते हुए अवलोकन की पुष्टि कीजिए।
- खनन की तीव्र वृद्धि में पर्यावरण और मानव का क्या योगदान हो सकता है? अपने विचार बताइए।

भारत में कुछ मुख्य खनिजों के खनन में वृद्धि (हज़ार टन में)

	1997-98	2008-09
बॉक्साइट	6108	18000
कोयला	297000	537000
लौह अयस्क	75723	260000
क्रोमाइट	1515	3800

साम्यता के साथ दीर्घकालीक विकास की ओर

बहुत समय तक नीतिनिर्माताओं ने पर्यावरणीय मुद्दों को अनदेखा किया। तर्क पेश किया गया कि भारत जैसा विकासशील देश गरीब है, इसीलिए विकसित अर्थव्यवस्था में प्रगति की आवश्यकता है। कम मूल्य पर प्रगति या वृद्धि को प्राप्त करना है। लोगों के जीवन-स्तर को बढ़ाने और गरीबी कम करने के लिए सकल घरेलू उत्पादन (GDP) और आधुनिक औद्योगिक विकास में वृद्धि अनिवार्य है। आधुनिक औद्योगिक और कृषि विकास में प्राकृतिक संसाधनों और ऊर्जा का अधिक उपयोग हो रहा है जिससे संसाधनों का अवक्षय और पर्यावरणीय प्रदूषण होने की आशंका हैं। उच्च वृद्धि के लिए यह एक बलिदान हैं। यदि एक बार उच्च आर्थिक प्रगति और समृद्धि प्राप्त हो जायेगी तो प्रदूषण और पर्यावरणीय अवक्रमण का भी सामना किया जा सकता है। तब कोई भी व्यक्ति पैसा खर्च कर सकता है, हवा और नदी को साफ करवा सकता है, बोतलबंद पानी पी सकता है और ईंधन सक्षम कारों का निर्माण कर सकता है। क्योंकि विकसित देशों ने इसी मार्ग को अपनाया था।

किन्तु विभिन्न कारणों से यह तर्क गलत दिखायी पड़ता है। अब तक आप समझ ही गये होंगे कि विभिन्न मोर्चो से पर्यावरण आपदाग्रस्त होने की स्थिति में है। भारत बड़ा देश है। इसकी जनसंख्या भी अधिक हैं। यदि हम विकसित देशों के समान प्रगति करेंगे - और उर्जा तथा अन्य संसाधनों का प्रयोग करेंगें तथा पर्यावरण को प्रदूषित करेंगे तो यह धरती के लिए विनाशकारी (Catastrophic) सिद्ध होगा। पर्यावरण के नाश के बाद उसे फिर से प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसीलिए यह विचार कि पर्यावरण विनाश स्व-संशोधित(Correcting) है, बिल्कुल गलत है। हम यह विल्कुल नहीं चाहते कि पर्यावरण की पुनः प्राप्ति के पहले ही उसको हानि पहुँचायी जाये। आगामी पीढ़ियाँ यदि इस नुकसान की भरपाई करेंगी तो उन्हें आज की उत्पन्न स्थिति की स्वच्छता के लिए करोड़ों रूपये खर्च करने पडेंगे। उदाहरण के लिए यदि हमें नदियों और नालियों की सफाई करनी है तो हमें बहुत पैसा खर्च करना पड़ेगा। इसके उपरांत भी हम यह नहीं कह सकते हैं कि वे फिर से प्रदूषित नहीं होंगी। आपके विचार में क्या हमें ऐसे मार्ग का अनुसरण करना चाहिए जो प्राकृतिक संसाधनों का विनाश करता है? और उन्हें इसी स्थिति में भावी पीढ़ियों को सौंपना चाहिए? क्या हम इस विसंगति को समझ नहीं पा रहे हैं। -: पहले हम रोगों को आमंत्रित करने वाली जीवनशैली को प्रोत्साहित करते हैं और बाद में उसके इलाज के लिए हजारों रूपये खर्च करते हैं?

Fig 11.5 : विकास के संदर्भ में अपना कैप्शन (नारा) लिखिए ।

कई दृष्टिकोणों से हमने तीव्र आर्थिक प्रगति के नकारात्मक परिणामों का अनुभव किया हैं। भू-जल और कीटनाशक इसके दो ज्वलंत उदाहरण हैं। हमारे पास हज़ारों समुदाय पर्यावरण के अंतर्गत आते हैं। पर्यावरण के विनाश का अर्थ है-इन समुदायों का विनाश। निर्धन लोगों से विकास के मूल्य की माँग करना अनुचित हैं।

इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें उन्नति नहीं करना चाहिए। किंतु हमें पर्यावरणीय मुद्दों को प्रगति की विचारधाराओं के साथ-साथ साम्यता और न्याय के साथ जोड़ने में सक्षम होना चाहिए। हमें एक गरीबी से, हट कर एक दीर्घकालिक पर्यावरणीय मार्ग को चुनना चाहिए। यह इतना आसान काम नहीं है। फिर भी इसकी शुरुआत हो चुकी हैं।

1. पर्यावरण के आधार पर विभिन्न समूहों ने स्थानीय लोगों के अधिकारों पर जीत हासिल की हैं। (अध्याय 21) वे लोगों में पर्यावरणीय जागरुकता को उत्पन्न करने तथा उन्हें दीर्घकालिक विकास की ओर ले जाने वाली प्रधान शक्ति बन गये हैं।

2. स्वस्थ पर्यावरण को बनाये रखने के लिए न्यायालय ने अनेक फैसले दिये हैं क्योंकि इसका संबंध मूलभूत रूप में जीवन के मौलिक अधिकारों से है। सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि संविधान के अनुच्छेद - 21 में जीवन का अधिकार दिया गया है जिनमें आनंददायक जीवन के लिए प्रदूषण मुक्त जल और वायु के उपभोग का अधिकार भी शामिल है। प्रदूषण की जाँच करने तथा प्रदूषण फैलाने वालों पर जुर्माना लगाया जा सकता हैं जैसे नियमों और प्रक्रियाओं को बनाने की जिम्मेदारी सरकार पर हैं। नियंत्रकों की भूमिका निभाने के लिए विभिन्न प्रकार के सरकारी संस्थान शुरू किये गये हैं।

Fig 11.6

चित्र 11.6 : वाहनों द्वारा होने वाला उत्सर्जन (Emission) प्रदूषण का मुख्य कारक हैं। अपने फैसलों (1998 से) के क्रम में सर्वोच्च न्यायालय ने डीजल से चलने वाले जन परिवहन वाहनों को प्राकृतिक गैस(CNG) से चलाने का आदेश दिया हैं। डीजल की तुलना में यह स्वच्छ ईंधन हैं। इस आदेश के फलस्वरूप दिल्ली जैसे शहरों में वायु प्रदूषण कुछ हद तक कम हो गया है। डीजल से चलने वाली निजी मोटरों की बढ़ती संख्या के कारण हाल ही के कुछ वर्षों में प्रदूषण के स्तर में फिर से वृद्धि हुई है। कार निर्माताओं ने डीजल से चलने वाली कारों का निर्माण और विक्रय शुरू किया है। दीर्घकालिक विकास की चुनौती इतनी आसान नहीं है।

3. जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दों पर देशों ने एक सामूहिक निर्णय पर पहुँचने का प्रयास किया है। जलवायु परिवर्तन सभी देशों और सभी लोगों को प्रभावित करता है। किसी पर इसका प्रभाव अधिक होता है तो किसी पर कम होता हैं। इसके कई प्रभावों को हम न तो समझ पाते हैं और न ही पूर्वानुमान लगा सकते हैं। व्यक्तिगत रूप से एक देश ग्रीन हाऊस गैस(Green house gas) के उत्सर्जन को कम करने की पहल कर सकता है। किंतु जब तक दूसरे देश अपने उत्सर्जन को नियंत्रित नहीं करेंगे तब तक उस देश के पर्यावरण को निरंतर हानि पहुँचती रहेगी। विश्व स्तर पर इस समस्या के लिए सभी देशों का एकजुट होना आवश्यक है।

4. सामुदायिक स्तर पर, कई सामुदायिक संगठनों ने इन कार्यों को करने के लिए दीर्घकालिक और निष्पक्षता के कई तरीकों का अन्वेषण और पुनः खोज की है। विभिन्न क्षेत्रों जैसेः मत्स्य पालन, खनन, परिवहन, ऊर्जा, कृषि, और उद्योग आदि में हमें इन संगठनों द्वारा उठाये गये कदमों के असंख्य उदाहरण मिलते हैं। चलिए हम कुछ उन प्रयासों पर ध्यान देंगे जिसका संबंध समाज की अति मूलभूत आवश्यकता भोजन से है।

कृषि उत्पादन के क्षेत्र में, आपने जैविक उत्पाद(Organic products) और जैविक खेती (Organic farming) के बारे में सुना होगा। जैविक किसान रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के उपयोग से बहुत आगे हैं। इनके उपयोग के बजाय वे मुख्य रूप से कृषि में फसल के आवर्तन, वनस्पतिक खाद जैवीय-कीट नियंत्रण जैसी प्राकृतिक तकनीकियों पर निर्भर रहते हैं। जैविक कृषि की एक मुख्य विशेषता - स्थानीय संसाधनों का उपयोग है, जिससे खेतों पर (Orfarming) जैवीय क्रियाएँ जैसे कीटभक्षकों (Pest predators) (पक्षी, मकड़ी, कीड़े) या मिट्टी के सूक्ष्म जीवाणुओं(रिज़ोवियम और एजोटोबैकटर) आदि की उपलब्धता भी शामिल है।

SCERT TELANGANA

ये पौधों को पोषक तत्व सुलभ करवाते हैं। कृत्रिम रासायनिक निर्गतों के उपयोग को कम करके खेतों को जैव-विविध बनाना चाहिए। जिससे वे एक दो फसल उगाने की बजाय अनेक फसलें उगा सकें। उत्पादन स्तर का प्रबंध आधुनिक कृषि विधियों के अनुरूप किया जाना चाहिए।

अब कई राज्यों ने जैविक खेती की आवश्यकता और क्षमता को जान लिया है। स्थानीय स्तर पर किये गये प्रयासों ने राज्य नीति को प्रभावित किया है। सिक्किम की सरकार ने साहसी कदम उठाते हुए रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों को प्रतिबंध लगा दिया है। यह भारत का पहला राज्य है जो 2015 तक जैविक, खेती को पूर्ण रुप से अपनाने की योजना बना रहा है। उत्तराखंड भी इसी मार्ग का अनुकरण करते हुए 100% जैविक राज्य बनना चाहता है।

दीर्घकालिक भोज्य उत्पादन और इसके निष्पक्ष वितरण पर एक अन्य रुचिकर मध्यवर्तन है - वैकल्पिक जन वितरण व्यवस्था, (PDS) जिसकी पहल आंध्र प्रदेश के जहीराबाद क्षेत्र के सामुदायिक समूहों द्वारा की गयी थी ।

a. केन्या के मसाई योद्धा
b. युर्त्ता कज़खस्तन
c. तिब्बत की क्वीआंग जनजाति
d. दक्षिणी अमेरिका में गाओचो

चित्र 11.7 : वर्ष 2013 में नयी फोटोग्राफी की पुस्तक जिसे ''बिफोर दे पास अवे'' कहा जाता है, प्रकाशित हुई। हमें यह पुस्तक सुलभ नहीं है। लेखक ने उन बंजारे समुदायों की पहचान की है जो अदृश्य होने की कगार पर है। (हमारे ये चित्र विभिन्न स्त्रोतों से प्राप्त हैं।) जब आप इन्हें देखेंगे तो सोचेंगे कि दीर्घकालीन विकास का प्रश्न कैसे और क्यों महत्वपूर्ण है?-और क्यों लेखक ने इनकी पहचान अदृश्य होने वालों के रूप में की है।

वैकल्पिक जन वितरण व्यवस्था (An alternative Public Distribution System)

भारत की कुल कृषि योग्य भूमि में से, 92 मिलियन हेक्टर भूमि वर्षा पर और 51 मिलियन हेक्टर भूमि सिंचाई पर आधारित है। इसका अर्थ यह है कि भारत की लगभग 2/3 सिंचाई योग्य भूमि वर्षा पर आधारित है और यह सिंचाई योग्य नहीं है। परंपरागत रूप से इन क्षेत्रों में शुष्क भूमि की परिस्थितियों की उपयुक्तता के आधार पर कई फसलें मिलाकर उगायी जाती हैं। उदाहरणस्वरुप दक्खन पठार की शुष्क भूमि कृषि में एक समय में 16 फसलें एक साथ उगायी जाती हैं। इन फसलों की परिपक्वता की अवधि अलग-अलग होती है, जिसके फलस्वरूप कार्य की अवधि और आय खाद्यान्न की निरंतर आपूर्ति की अवधि में वृद्धि होती रहती हैं। इस प्रकार की खेती में नुकसान की आशंका कम होती है क्योंकि जलवायु की परिस्थितियों में भिन्नता होने पर भी कम से कम एक फसल तो अच्छी होती है। मिश्रित फसल से किसी कीट का मुख्य कीट बनने का भी अवसर कम होता है। ऐसी फसलों का चुनाव किया जाता है जो भूमि (मिट्टी उर्वरता), मानव जनसंख्या और पशुओं को संतुलित और पोषक भोजन प्रदान करती हैं।

हरित क्रांति के आरंभ होने से चावल और गेहूँ की फसल पर अधिक ध्यान दिया गया। ये वही फसलें है जो जन वितरण व्यवस्था के अंतर्गत (PDS) राशन की दुकानों पर उपलब्ध होती है। घर में बनने वाला मुख्य अनाज चावल और गेहूँ में बदल गया था। स्थानीय खाद्यान्नों की माँग में कमी होने पर समय के बीतने के साथ शुष्क भूमि के कई भाग कृषि विहीन हो गये। आप इस बात का पुनःस्मरण कर सकते हैं कि हरित क्रांति के अंतर्गत विभिन्न सरकारी नीतियों द्वारा भोजन की स्व-निर्भरता के लिए चावल और गेहूँ की खेती को प्रोत्साहित किया गया था। वही दूसरी ओर जवार-बाजरा (Millets) की खेती को न तो प्रोत्साहित किया गया और न ही उसका समर्थन किया गया। मोटे अनाजों की फसल में वृद्धि करने के लिए पर्याप्त शोध भी नहीं किये गये। यही शुष्क भूमि पर जवार-बाजरा और तिलहनों के उत्पादन में कमी होने का मुख्य कारण था।

तेलंगाणा के मेदक ज़िले के ज़हीराबाद मंडल में गाँववासी गेहूँ और चावल की खरीदारी पर निर्भरता के विरोधी हो गये। यह वर्ष 2000 के आस-पास उस समय हुआ जब महिलाओं ने स्थानीय भोजन संस्कृति की हानि के प्रति प्रतिक्रिया आरंभ की। क्षेत्र का परंपरागत प्रधान भोजन जवार-बाजरा था, जिसका स्थान चावल ने ले लिया था। जवार-बाजरा की तुलना में चावल में पोषक तत्व कम होते हैं। पोषक तत्वों की कमी के साथ-साथ लोगों को इस बात का भी अनुभव हुआ कि - उनका अपनी ही भूमि पर उगाये जाने वाले खाद्यान्नों पर से नियंत्रण खत्म हो चुका है। कई खेत-खेती के लिए तैयार नहीं थे। जिसका संचालन स्वैच्छिक संस्थान द्वारा होता है, दक्खन विकास समुदाय (Deccan Development Society) के नेतृत्व में गाँववासियों ने एकजुट होकर खेतीविहीन भूमि और साधारण भूमि दोनों पर खेती करने का निर्णय लिया। स्थानीय वातावरण के उपयुक्त होने के कारण जवार-बाजरा की खेती करने का विचार किया गया।

शुष्क भूमि की खेती ने लोगों को रोजगार दिया। आगे चलकर, उत्पाद को बाहर बेचने की बजाय, समुदाय ने समुदाय अन्न बैंकों(Community grain bank) की शुरुआत की। यह जन वितरण व्यवस्था के सिद्धांत पर काम करता था। (जैसेः-लोगों को भिन्न-भिन्न राशन कार्ड दिये जाते थे और राशन कार्ड के प्रकार के आधार पर उन्हें एक निश्चित अंश प्रदान किया जाता था।) इसका प्रबंध केवल स्थानीय तौर पर होता था और अनाज, स्थानीय अनाज ही होता था। अनाज के लिए सैंकड़ों किलोमीटर की यात्रा के बजाय, गाँव की खाद्य-सुरक्षा को निश्चित करने के लिए अब स्थानीय रूप से अनाज उपलब्ध होने लगा था।

SCERT TELANGANA

उपसंहार....

हमने देखा कि आधुनिक विकास ने पर्यावरणीय विनाश की समस्याओं को अधिक महत्व प्रदान किया है। आज इसका अनुभव भिन्न-भिन्न तरीकों से हुआ है जिससे अब हमें पूरी तरह चिंतामुक्त होना है।

हमें विकास के केन्द्र को वस्तुओं और सेवाओं की वृद्धि से हटाकर, साम्यता के साथ दीर्घकालिक विकास को प्राप्त करने के लक्ष्य में परिवर्तित करना हैं। प्रत्येक व्यक्ति को, कंपनियों, किसानों, सरकारों, न्यायालयों, स्वैच्छिक और सामुदायिक संस्थानों और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में इस परिवर्तन की प्रक्रिया में भूमिका निभानी होगी।

मुख्य शब्द

दीर्घकालिक विकास	पर्यावरण	स्त्रोत का आधार
जनता के अधिकार	साम्यता	सिंक (Sink)

अपनी सीखने की क्षमता सुधारें

1. जलसिंधी गाँव के लोगों ने गाँव से बाहर जाने के लिए क्यों इंकार कर दिया था? (AS_1)
2. ''यह भूमि हमारे पूर्वजों की है। हमारा इस पर अधिकार हैं। यदि यह गुम हो जायेगी तो हमें केवल फावड़े और कुल्हाड़ियाँ ही मिलेगी- और कुछ नहीं....'' यह कथन बावा महालया ने कहा। इस कथन का स्पष्टीकरण कीजिए। (AS_1)
3. अंत में, कभी समाप्त न होने वाली, पर्यावरणीय समस्याओं का केंद्र परिवर्तित जीवन शैली में निहित होता है जो अपशिष्टों और प्रदूषण को कम करता है। (AS_4)
   - हमारी जीवन शैलियों के किन भिन्न-भिन्न तरीकों से पर्यावरण प्रभावित होता है। स्पष्टीकरण के लिए स्वयं के जीवन से संबंधित उदाहरणों का उपयोग कीजिए।
   - सारे विश्व में कूड़े-कचरे और उत्सर्जन(Emission) की समस्या से निपटने के लिए आवश्यक तरीकों की पहचान कीजिए।
4. खनिजों तथा अन्य प्राकृतिक संसाधनों की तेज़ी से निकासी का विपरीत प्रभाव भावी विकास प्रक्रिया पर पड़ सकता हैं? क्या आप इससे सहमत हैं? (AS_4)
5. आप ऐसा क्यों सोचते हैं कि जलवायु में परिवर्तन का अनुभव सभी देशों द्वारा किया जाता है? (AS_1)
6. पृथ्वी के औसत तापमान को क्या सभी लोगों के लिए प्राकृतिक संसाधन मानना चाहिए?क्यों?(AS_1)

SCERT TELANGANA